आर.एन.आई. नं. 3653/57
मुद्रण तिथि 5 से 8 अगस्त, 2017
डाक प्रेषण तिथि 10 अगस्त, 2017

वर्ष : 75 अंक : 08 डाक पंजीयन संख्या JaipurCity/413/2015-17
भाद्रपद, 2074 मूल्य : 10 रु. WPP LICENCE NO. JAIPURCITY/WPP-004/2015-17

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

निनवाणी

कषाय अंक-2

णमो सिद्धाणं
णमो उवज्झायाण

एसो पंच णमोक्कारो, सव्व पावप्पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं

75 हीरक वर्ष

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

क्रोध नहीं करने पर – 1. चित्त में शान्ति रहती है। 2. निर्णय शक्ति सही कार्य करती है। 3. वातावरण प्रेममय बना रहता है। 4. दूसरों को निर्भयता का अनुभव होता है।

संसार की समस्त सम्पदा और भोग
के साधन भी मनुष्य की इच्छा
पूरी नहीं कर सकते हैं।

- आचार्य हस्ती

आवश्यकता जीवन को चलाने
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन
को बिगाड़ने वाली है,
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

- आचार्य हीरा

जिनका जीवन बोलता है,
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

- उपाध्याय मान

With Best Compliments :
Rajeev Nita Daga Foundation Houston

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'।।

卐 संरक्षक
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-0291-2636763

卐 संस्थापक
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक
विनयचन्द डागा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-4068798

卐 प्रधान सम्पादक
प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2,
नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)
फोन : 0291-2626279
E-mail : editorjinvani@gmail.com
E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 सह-सम्पादक
नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-JaipurCity/413/2015-17
WPP Licence No. JaipurCity-004/2015-17
ISSN 2249-2011

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

पागारं कारइत्ताणं, गोपुरट्टालगाणि य।
उस्सूलगसयग्घीओ, तओ गच्छसि खत्तिया।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 9.18

राजन्! परकोटा पुरद्वार,
खाई शतमारक अस्त्र बना।
फिर चाहो तुम मुनि बन जाना,
एकान्त तपी और शुद्धमना।।

अगस्त, 2017
वीर निर्वाण संवत्, 2543
भाद्रपद, 2074

वर्ष 75 अंक 8

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.
20 वर्षीय, देश में : 1000 रु.
20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु.
स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
संरक्षक सदस्यता : 11000/-
साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/साभार नकद राशि 'जिनवाणी' बैंक खाता संख्या SBI 51026632986 IFSC No. SBIN 0031843 में जमा कराकर जमापर्ची (काउन्टर-प्रति) अथवा ड्राफ्ट भेजने का पता 'जिनवाणी', दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, फैक्स : 0141-4068798, E-mail:sgpmandal@yahoo.in

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

'कषाय' अंक (2)

सम्पादकीय-	जिनवाणी की हीरक यात्रा (8)	-डॉ. धर्मचन्द जैन	5
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-विवेचन : डॉ. धर्मचन्द जैन	11
विचार-वारिधि-	क्या हमें दोष खटकता है?	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.	13
प्रवचन-	कषाय-विजय की राह के बनें राही	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.	14
	क्रोध कषाय : स्वरूप, दुष्परिणाम, कारण एवं निवारण	-श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.	17
कषाय-विवेचन -	कषाय का स्वरूप एवं उसके भेद-प्रभेद	-श्री कन्हैयालाल लोढ़ा	25
	आगम-साहित्य में कषाय-विषयक चिन्तन	-श्री सौभाग्यमल जैन	30
	बौद्ध सुत्तपिटक में कषाय-विवेचन	-डॉ. श्वेता जैन	36
	महामोहनीय कर्म : एक पर्यवेक्षण	-श्री त्रिलोकचन्द जैन	47
शरीर-विज्ञान	मित्र जीवाणु के कार्य	-श्री पी. शिखरमल सुराणा	29
कविता/गीत-	बनें कषाय विजेता	-श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'	28
	मंजिल है वीतरागता	-सुश्री रक्षिता मेहता	46
	कषाय	-डॉ. रमेश 'मयंक'	57
चिन्तन-	पैकेज्ड पानी की बोतल न बने स्टेटस सिम्बल	-श्रीमती सुशीला बोहरा	12
पर्युषण-पर्व-	आत्मशुद्धि का साधन है 'क्षमा'	-श्री राजीव माथुर	55
विचार-	क्षमा : जीवन का अमृत	-श्री अभयकुमार जैन	57
बाल-जिनवाणी -	लो कर लो जी बात	-सुश्री रानू जैन	84
	स्वाध्याय और गणित	-श्री प्रमोद महनोत	84
	चौथा बोल- इन्द्रिय पाँच	-संकलित	85
	रंगों भरा संसार	-निधि दिनेश लोढ़ा	86
	जैन धर्म-परम्परा में चातुर्मास	-श्री जसराज देवड़ा धोका	87
	जैसी करनी वैसी भरनी	-श्री मगनचन्द जैन	87
	सबसे प्यारे प्राण	-श्री दुलीचन्द जैन 'साहित्यरत्न'	88
	आओ संस्कारी बनें	-संकलित	89
	पिंजरे का बन्धन	-श्री पदम शास्त्री	90
	A True Friend	-*Dr. Shweta Jain*	91
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-डॉ. श्वेता जैन	56
युवक परिषद्-	ग्रीष्मकालीन धार्मिक शिविर रिपोर्ट-2017	-श्री नमन मेहता	58
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	62
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	81

सम्पादकीय

जिनवाणी की हीरक यात्रा (8)

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

जैन समाज में प्रायः विवाह संस्कार वैदिक रीति से कराया जाता है, किन्तु जिनवाणी पत्रिका के फरवरी, 1977 के अंक में श्री मिलापचन्द डागा का 'जैन विवाह विधि' विषयक आलेख जैन विधि से विवाह कराने हेतु एक अच्छा आधार बन सकता है। इसमें हवन, जमीकंद के उपयोग, मादक पदार्थों के सेवन आदि का निषेध किया गया है। सामाजिक परिवर्तन की दृष्टि से प्रेम, अहिंसा और करुणा की शक्ति कारगर होती है। इस सम्बन्ध में प्रकाश डालता है राष्ट्रनायक जयप्रकाश नारायण का महत्त्वपूर्ण आलेख, जो मई, 1977 में प्रकाशित हुआ। 'पर्युषण पर्वाराधन में स्वाध्यायी श्रावकों की भूमिका' विषयक डॉ. नरेन्द्र भानावत के 'अपनी बात' शीर्षक से प्रकाशित आलेख में व्यक्त किया गया कि स्वाध्यायी बंधु एक प्रकार के सांस्कृतिक और आध्यात्मिक जागरण के अग्रदूत हैं। वे मात्र प्रचारक नहीं होते, वे साधक भी होते हैं। इनकी विद्यमानता से उस क्षेत्र का सुषुप्त मानस आध्यात्मिक चेतना और धर्मजागरणा से स्पन्दित हो उठता है।

साध्वी श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. के भी आलेख जिनवाणी पत्रिका में समय-समय पर प्रकाशित होते रहे। सत्संगति पर अपनी विचाराभव्यक्ति में उन्होंने कहा- ''चण्डकौशिक जैसे भयंकर विषधर ने भगवान महावीर का संग पाकर अपने आपको अमृत में बदल दिया। 'राजप्रश्नीय सूत्र' के पृष्ठों पर चमकने वाले राजा परदेशी का जीवन तो बहुत ही क्रूर, नृशंस एवं पापी था। किन्तु महामुनि केशीकुमार के पावन संग से वह अहिंसक, प्रेमी व सदाचारी बन गया।'' श्री हीरामुनिजी (वर्तमान आचार्यश्री) ने अहिंसा विषयक आलेख में प्रकट किया-''वस्तुतः मानव कौन है? जिसमें मानवता हो। मानवता कहाँ होती है? जहाँ अहिंसा का वास हो। इस प्रकार अहिंसा और मानवता में अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है। ये एक-दूसरे के पूरक और आश्रित हैं।''

नवम्बर, 1977 के अंक में पूज्य आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. की डायरी से कुछ विचार प्रकाशित हुए, जिनमें आत्मबोध के सूत्र सन्निहित हैं। उदाहरणार्थ ''मेरी शरीर से भिन्नता इन अर्थों में है- मैं चैतन्य हूँ शरीर जड़ है, मैं अरूपी हूँ शरीरादि रूपी हैं, मैं अमूर्त हूँ पुद्गल मूर्त है, मैं अविकारी हूँ पुद्गल विकारी है, मैं शाश्वत हूँ पुद्गल अशाश्वत है, मैं जरामरण आदि से रहित अजर-अमर हूँ।''

आध्यात्मिक चेतना, सामाजिक जागरण और सद्प्रवृत्तियों के विकास में जैन पत्र-पत्रिकाओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। जिनवाणी भी उसी कोटि की पत्रिका है। सन् 1978 में जिनवाणी पत्रिका ने 35 वें वर्ष में प्रवेश किया। तब तत्कालीन सम्पादक डॉ. नरेन्द्र भानावत ने उस समय तक हुई जिनवाणी की विकास यात्रा को प्रस्तुत किया था। सम्पादक मण्डल में उन्होंने चाँदमल कर्णावट, पारसमल प्रसून, जिनेन्द्रकुमार जैन, जतनराज मेहता और शान्ता भानावत का भी उल्लेख किया तथा कोषाध्यक्ष के रूप में श्री पूनमचन्दजी बडेर के योगदान की सराहना की।

जैन परम्परा में राम कथा से सम्बद्ध विपुल साहित्य है। साहित्य समीक्षा के अन्तर्गत डॉ. शांतिलाल खेमचन्द शाह की पुस्तक 'जैन परम्परा का रामकथा साहित्य : एक अनुशीलन' (204 पृष्ठ) की समीक्षा की गई। इसी प्रकार श्री हीरामुनिजी (वर्तमान आचार्यप्रवर) द्वारा संकलित 'सुभाषित सौरभ' (108 पृष्ठ) पुस्तक की समीक्षा हुई। तीर्थंकर पत्रिका के सम्पादक डॉ.

नेमीचन्द जैन द्वारा प्रकाशित 'जैन पत्र-पत्रिकाएँ' विशेषांक की भी समीक्षा की गई, जिसमें लगभग 400 जैन पत्र-पत्रिकाओं का कालक्रम एवं स्थानक्रम से दुर्लभ चित्रों के साथ रोचक इतिहास प्रस्तुत किया गया। पंडित श्री हीरामुनिजी (वर्तमान आचार्यप्रवर) के संयम साधना, विवेक ज्योति, सत्संग से तिर्यंच का भी उद्धार, धर्म की महिमा, ज्ञान : स्वरूप और महत्त्व आदि विभिन्न विषयों पर प्रवचन-आलेख प्रकाशित हुए।

भोपालगढ़ में पूज्य आचार्यश्री हस्तीमल जी महाराज एवं आचार्य श्री नानालालजी म.सा. का 23 जनवरी, 1978 को सौहार्दपूर्ण मधुर मिलन हुआ। चार दिन दोनों आचार्यों का शिष्य मण्डली सहित परस्पर विचार विमर्श हुआ। 16 जुलाई 1978 को जोधपुर में अखिल भारतीय साधुमार्गी जैन श्रावक संघ एवं अखिल भारतीय जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के श्रावकों की पारस्परिक सौहार्द वृद्धि हेतु संयुक्त सभा आयोजित की गई। 17 फरवरी 1978 को श्री गौतमचन्दजी आबड की पालासनी में भागवती दीक्षा सम्पन्न हुई, जो सम्प्रति मधुरव्याख्यानी एवं यशस्वी कवि के रूप में श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. के रूप में संघ एवं समाज को दीप्त रहे हैं। इनके साथ अजमेर की कौशल्यादेवीजी कटारिया एवं बारनी की सोहनबाई जी भाटी की भी दीक्षा सम्पन्न हुई जो क्रमशः व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. एवं महासती श्री कौशल्याजी म.सा. के रूप में जिनशासन-सेवा में सन्नद्ध हैं। जिनवाणी में आचार्य श्री के विहार-विवरण का प्रकाशन भी होने लगा। मार्च माह में श्री पुष्करमुनिजी द्वारा लिखित 'जैन कथाएँ- भाग 26 से 30, श्री मधुकरमुनिजी द्वारा रचित 'जैन कथामाला' भाग 26 से 30 की समीक्षा प्रकाशित हुई।

संघ में साधना-विभाग प्रारम्भ हुआ। सुश्रावक श्री चाँदमलजी कर्णावट को संयोजक मनोनीत किया गया। उन्होंने साधकों की आचार संहिता तैयार की तथा साधकों की तीन श्रेणियाँ निर्धारित की- साधारण साधक, विशिष्ट साधक एवं परम साधक।

20 फरवरी, 1978 को आत्मार्थी संत पण्डित श्री मोहनऋषिजी म.सा. का अहमदनगर में स्वर्गवास हो गया। जैन धर्म दर्शन के मूर्धन्य विद्वान् प्रज्ञाचक्षु पण्डित सुखलाल जी संघवी का 98 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। श्री रिखबचन्दजी सिंघवी-जोधपुर के द्वारा पक्खी पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ, जो जिनवाणी में आज भी प्रतिवर्ष संलग्न होता है।

वर्षीतप का पारणा 13 मास 10 दिन में होने को लेकर चर्चा हुई, जिसका पूज्य आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. द्वारा जो समाधान किया गया वह मई, 1978 के अंक में प्रकाशित है। स्थूलभद्र के जीवन चरित्र पर श्री अशोकमुनिजी द्वारा 'महायोगी' ग्रंथ लिखा गया, जिसकी समीक्षा प्रकाशित हुई। जैन संतों के द्वारा कथा एवं उपन्यास लिखे जा रहे थे, जिसकी झलक जिनवाणी के विभिन्न अंकों में प्रकाशित साहित्य समीक्षा में निहित है। श्रद्धांजलि में कभी-कभी श्याम-श्वेत फोटो का भी प्रकाशन दिखाई देने लगा।

16 जून, 1978 को मंदसौर में श्री महावीर प्रसाद जी जैन-सवाईमाधोपुर की दीक्षा सम्पन्न हुई जो अभी संघ में सेवाभावी श्री नन्दीषेणमुनिजी के रूप में जिनशासन सेवा में सन्नद्ध हैं। 1978 का आचार्य हस्ती का चातुर्मास इन्दौर में सम्पन्न हुआ।

इसी चातुर्मास का सुपरिणाम रहा अखिल भारतीय जैन विद्वत्परिषद् का गठन। चातुमार्स की पूर्णाहुति के समय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अधिवेशन के अवसर पर अखिल भारतवर्षीय जैन नवयुवक मण्डल का भी गठन किया गया जिसके अध्यक्ष श्री तेजराजजी भण्डारी-बांसवाड़ा एवं मंत्री श्री पारसमलजी चोरडिया-उज्जैन मनोनीत हुए। जिनवाणी में सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर एवं जैन इतिहास समिति के द्वारा प्रकाशित साहित्य की सूची प्रायः प्रकाशित होती रही। अगस्त, 1978 की जिनवाणी में साहित्य-समीक्षा के अन्तर्गत जैन संस्कृत कवि धनपाल विरचित 'तिलकमंजरी' पर आधारित श्री मधुकरमुनिजी

के उपन्यास 'तलाश' की समीक्षा की गई।

आचार्यप्रवर श्री हस्ती के उज्जैन की ओर हुए विहार की श्री ब्रजमोहन जैन द्वारा प्रेषित साहित्यिक रिपोर्ट का अंश पठनीय है- ''आध्यात्मिक सूर्य का अवन्तिका की ओर मंगल विहार हो रहा है और उनके आगे दो फर्लांग के अन्तराल से काली बदली भूपर पानी बिखेरती आगे-आगे चल रही है मानो साक्षात् इन्द्र ही अवन्तिका आगमन पर स्वागत कर रहा हो।'' आचार्यप्रवर के मंगल विहार में अनेक स्थानों पर महावीर जैन स्वाध्याय शाला का शुभारम्भ हुआ। साहित्य समीक्षा के अन्तर्गत 'जैन आयुर्वेद साहित्य की परम्परा' पुस्तक अवलोकनीय है, जिसका लेखन डॉ. तेजसिंह गौड़ द्वारा किया गया। समीक्षा के अनुसार इस पुस्तक में आचार्य समन्तभद्र से लेकर जयरत्न तक प्रमुख 40 जैन आयुर्वेदाचार्यों के जीवन और कृतित्व पर शोधमूलक अध्ययन प्रस्तुत हुआ है।

पण्डित रत्न श्री लक्ष्मीचन्दजी म.सा. का पौष शुक्ला दशमी 07 जनवरी, 1979 को 70 वर्ष की अवस्था में जोधपुर में स्वर्गारोहण हो गया। आप मर्मज्ञ शास्त्रवेत्ता, शोधप्रिय इतिहासज्ञ एवं विशुद्ध श्रमणाचार के प्रबल समर्थक संत थे। जिनवाणी में जैन इतिहास से सम्बद्ध आपके अनेक शोधपरक आलेख प्रकाशित होते रहे। आप आचार्यश्री हस्ती के आज्ञानुवर्ती एवं सतीर्थ सन्त थे। आपके प्रति प्राकृत एवं संस्कृत में आचार्य हस्ती के द्वारा श्रद्धांजलि व्यक्त की गई, जिसकी कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं-'रयणवंससुनक्खत्तो लच्छींदू सुदिवंगओ, अम्हाणं संघसेवाए, आसी आलम्बणो महं।।'

जैन विद्वानों एवं संतों ने भारतीय कथा साहित्य को समृद्ध बनाया है। हरिषेण के 'वृहद् कथा कोश' महोपाध्याय समय सुन्दर रचित अप्रकाशित 'कथा कोश' तथा हेमविजय रचित 'कथा रत्नाकर' के नाम भी उल्लेखनीय हैं। (जिनवाणी, फरवरी 1979, पृष्ठ 31)। स्वाध्याय संघ सवाईमाधोपुर के द्वारा अनेक ग्राम-नगरों में धार्मिक पाठशालाओं का संचालन किया जा रहा था। उन दिनों जिनवाणी के आवरण पृष्ठ प्रतिमाह नये रंग-रूप में प्रकाशित होते थे। जनवरी, 1980 से जिनवाणी की आजीवन सदस्यता 151 से बढ़ाकर 201 रुपये की गई। 11 जनवरी, 1979 को श्री जैन रत्न विद्यालय भोपालगढ़ का स्वर्ण जयन्ती समारोह मनाया गया।

मध्यप्रदेश की हायर सैकण्डरी की गृहविज्ञान की पुस्तक में माँसाहार सम्बन्धी आपत्तिजनक अंश हटाने हेतु जिनवाणी पत्रिका ने भी अपनी भूमिका निभाई। जिनवाणी के लेखकों में डॉ. सागरमलजी जैन-शाजापुर का नाम भी जुड़ गया। आप प्रारम्भ से ही मेधावी एवं विश्लेषणात्मक शक्ति के धनी विद्वान् रहे हैं। जिनवाणी पत्रिका में सम्प्रति आपके आलेख पाठकों की सतत ज्ञानवृद्धि कर रहे हैं।

जैन समाज के छात्रों के अध्ययन हेतु उस समय जैन रत्न विद्यालय भोपालगढ़ के अतिरिक्त जवाहर विद्यापीठ, कानोड एवं अनेक जैन छात्रावास संचालित थे।

सन् 1979 का पूज्य आचार्यश्री हस्ती का जलगांव चातुर्मास अत्यन्त सफल रहा। 'श्री महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ' एवं 'श्री महावीर जैन स्वाध्याय विद्यापीठ' की स्थापना हुई। महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ इस क्षेत्र में अत्यन्त सक्रिय रहा। विद्यापीठ से भी कई छात्र अध्ययन कर चुके हैं। जलगांव चातुर्मास में 150 नवयुवकों, किशोरों एवं प्रौढ़ों ने नियमित सामायिक एवं स्वाध्याय का संकल्प किया। दानवीर एवं समाजहित चिन्तक श्री सुरेश कुमारजी जैन श्रीश्रीमाल को समाजरत्न की उपाधि से अलकृंत किया गया।

अन्तरराष्ट्रीय बाल वर्ष में ''आप कैसा साहित्य पढ़ना पसन्द करते हैं और क्यों?'' विषय पर निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें से 3 श्रेष्ठ निबन्धों को प्रकाशित किया गया। सुश्राविका श्रीमती मंजुलाजी बम्ब ने संत कवि श्री त्रिलोकऋषिजी के आध्यात्मिक रूपकों पर आलेख लिखा। यहाँ एक

रूपक उद्धृत है-

तपस्या तिल संग्रह करोजी,
समता शक्कर मिलाय।
प्रेम की पापड़ी बणावजोजी,
धीरज की थाली बनाय।।

सौन्दर्य प्रसाधनों में बढ़ती हुई हिंसा की ओर डॉ. शान्ता भानावत ने अपने आलेख में पाठकों का ध्यान आकर्षित किया। आदि प्रभु आदिनाथ के प्रथम पारणक दिवस अक्षय तृतीया पर श्री गजसिंह राठौड़ का आलेख तीन किश्तों में पूर्ण हुआ। श्री बिरधीलाल सेठी द्वारा लिखित 'जैन मूर्तिपूजा में व्याप्त विकृतियाँ' विषयक पुस्तक की समीक्षा मार्च, 1980 में प्रकाशित हुई। अप्रेल, 1980 से तीन अंकों में डॉ. सागरमल जैन का आलेख 'जैन कर्मसिद्धान्त : बन्धन और मुक्ति की प्रक्रिया' प्रकाशित हुआ, जो कर्म सिद्धान्त के विवेचन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। यह निबन्ध अखिल भारतीय जैन विद्वत्परिषद् द्वारा आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता में प्रथम रहा। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.के आचार्यपद की स्वर्ण जयन्ती तप-त्याग के साथ 15 से 17 अप्रेल, 1980 को बैंगलोर में मनाई गई। 18 अप्रेल, 1980 को जयपुर में साध्वी श्री विचक्षणश्रीजी म.सा. का 68 वर्ष की वय में निधन हो गया। 19 जून, 1980 को रत्नसंघ के संत श्री चौथमलजी म.सा. का 76 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। आप पूज्य आचार्य श्री हस्ती के साथ दीक्षित संत थे। आप शास्त्रज्ञ होने के साथ मधुर व्याख्याता एवं क्षमाशील संत थे। आत्मा के पाँच भावों पर श्री भीखालाल गिरधरलाल सेठ का आलेख चार किश्तो में पूर्ण हुआ। मूलतः गुजराती आलेख का हिन्दी अनुवाद श्री लालचन्द जैन द्वारा किया गया।

सितम्बर माह से चार किश्तों में श्री हीरामुनिजी का आलेख 'अपरिग्रहवाद से विश्व कल्याण' प्रकाशित हुआ।

स्वाध्याय संघ जोधपुर की ओर से 156 क्षेत्रों में पर्युषण पर्वाराधना कराई गई। आचार्य श्री हस्ती के सन् 1980 के मद्रास चातुर्मास में तप-त्याग के नये आयाम स्थापित हुए। 300 से अधिक बालकों एवं युवकों ने प्रतिदिन स्थानक में आकर सामायिक-प्रतिक्रमण एवं 25 बोल के पाठों को कण्ठस्थ किया। 'युवा पीढ़ी और रचनात्मक कार्यक्रम' संगोष्ठी आयोजित हुई। आचार्यश्री रत्नचन्द्र स्मृति व्याख्यानमाला का 21 नवम्बर, 1980 को शुभारम्भ हुआ। पाण्डुलिपि और इतिहास विशेषज्ञ श्री अगरचन्द नाहटा ने अपने आलेख में प्रतिपादित किया कि प्रश्नव्याकरण नाम से अन्य ग्रंथ भी है। उन्हें जैसलमेर के ज्ञान भण्डार में 'जयपाहुड-प्रश्नव्याकरण' की संवत् 1336 की लिखी हुई ताड़पत्रीय प्रति उपलब्ध हुई। पाटन के जैन ज्ञान भण्डार में अन्य प्रश्नव्याकरण मिलने की सूचना भी दी गई तथा टीकाकारों का उल्लेख भी किया गया।

सन् 1963 एवं 1964 की जिनवाणी यात्रा

सन् 1963 से 1966 की जिनवाणी के अनेक अंक हमें श्री देवेन्द्रकुमारजी सुराणा-नागौर से तथा घोड़ों का चौक पुस्तकालय से प्राप्त हुए हैं। इन अंकों के आधार पर जिनवाणी हीरक यात्रा का अधूरा रहा अंश पूर्ण करने का प्रयास किया जा रहा है। श्री चन्दूलाल केशवलाल सेठ ने गुरुदेव उपाध्याय श्री हस्तीमलजी महाराज के संवत् 2019 के सैलाना चातुर्मास में बही ज्ञान गंगा को अन्य ग्राम नगरों में पहुँचाने के उद्देश्य से रतलाम, खाचरौद, नागदा, महिदपुर, उज्जैन, शाजापुर, सुजालपुर आदि स्थानों की यात्रा की जिसके अनुभव जनवरी, 1963 से कई अंकों में प्रकाशित हुए। लेखक ने उन ग्राम-नगरों के घरों, स्थानकों, ज्ञान-भण्डारों एवं धार्मिक प्रवृत्तियों का सर्वेक्षण लिपिबद्ध किया है। यह यात्रा विवरण विविध प्रकार की प्रेरक सूचनाओं से युक्त है, जिसमें कई ग्रन्थों के पाण्डुलिपियों का भी उल्लेख किया गया है। श्रमण संघ के पूर्व उपाचार्य श्री गणेशीलालजी महाराज का 11 जनवरी, 1963 को स्वर्गगमन हो गया। मार्च, 1963 के अंक में उन्हें

उपाध्याय श्री हस्तीमलजी महाराज द्वारा काव्यमय श्रद्धांजलि अर्पित की गई। भोपाल में उपाध्याय श्री के सान्निध्य में 2-3 फरवरी को सामायिक-स्वाध्याय सम्मेलन सम्पन्न हुआ। वैशाख शुक्ला त्रयोदशी 06 मई 1963 को विरक्त श्री मगनमल जी मुणोत सुपुत्र श्री सोहनराज जी मुणोत एवं श्री मानचन्द्रजी सेठिया सुपुत्र श्री अचलचन्द जी सेठिया ने पूज्य आचार्यप्रवर के सान्निध्य में सरदार हाई स्कूल प्रांगण में श्रमण दीक्षा अंगीकार की। श्रद्धेय मानचन्द्रजी महाराज सम्प्रति रत्नसंघ के उपाध्यायप्रवर के रूप में जिनशासन की प्रभावना कर रहे हैं। श्री पारसमल जी प्रसून, भोपालगढ ने कुछ अंकों में अतीत के महान् साधकों के जीवन चरित का 'देखो ये तस्वीरें अपने गौरव की अभिमान की' शीर्षक से रोचक निरूपण किया। रत्नसंघीय श्री सुगनचन्द जी महाराज का ज्येष्ठ शुक्ला षष्ठी 28 मई, 1963 को जाजीवाल के रास्ते में लू के कारण स्वर्गगमन हो गया। सुश्रावक श्री विनयचन्द्रजी कुम्भट चौबीसी रचयिता के रूप में प्रसिद्ध हैं, किन्तु उनके द्वारा रचित एक पट्टावली पर पण्डित मुनिश्री लक्ष्मीचन्दजी महाराज ने प्रकाश डाला है। (अंक अप्रेल 1963)। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा प्रकाशित उनकी 'आत्मनिन्दा' पुस्तक की भी चर्चा की गई है, जो अभी आत्मचिन्तन के नाम से प्रकाशित है। छात्रों में संस्कार निर्माण के लिए 'जैन छात्रावासों के निर्माण की आवश्यकता' पर एक आलेख प्रकाशित हुआ। संभवतः वह आलेख जैन छात्रावासों के निर्माण में प्रेरक रहा होगा। इन दिनों श्री भंवरलालजी बोथरा जिनवाणी के प्रबन्ध सम्पादक थे तथा सम्पादक मण्डल में श्री चम्पालाल कर्णावट, श्री चाँदमल कर्णावट एवं श्री पारसमल प्रसून का नामोल्लेख हो रहा था। व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलालजी महाराज का 27 जून, 1963 को जंडियाला गुरु में स्वर्गवास हो गया। आप कैंसर से पीड़ित थे।

कार्तिक शुक्ला षष्ठी 23 अक्टूबर 1963 बुधवार को श्री हीरालालजी गाँधी सुपुत्र श्री मोतीलालजी गाँधी की 25 वर्ष की युवावय में पीपाड़ में श्रमण दीक्षा सम्पन्न हुई। 8-9 वर्षों से विरक्त मुमुक्षु की 22 अक्टूबर को शोभायात्रा दर्शनीय रही। दीक्षा प्रसंग पर लगभग 5000 श्रावक-श्राविकाओं की महती उपस्थिति रही। उपाध्याय पंडितरत्न श्री हस्तीमलजी महाराज द्वारा इस अवसर पर फरमाया गये प्रवचन का कुछ अंश इस प्रकार है- ''इस जलसे में कम से कम 40-50 गांव के भाई बहन होंगे, हर समाज के लोग बड़े उमंग, उत्साह और लगन से आए हैं, केशर क्यारी सी खिली है, मैं समझता हूँ इन सब को भी कुछ व्रत ग्रहण करके जाना है। केवल नमस्कार कर चला जाना ठीक नहीं, पर स्वाध्याय की प्रवृत्ति सामायिक की साधना की लहर हर गांव के बच्चे से लेकर बूढ़े तक जगानी है। इन्होंने जीवन भर का त्याग किया है, तो क्या आप साल में 10-20 दिन का त्याग नहीं कर सकते?''

न्यायमूर्ति श्री इन्दरनाथ जी मोदी ने इस अवसर पर अपनी भावाभिव्यक्ति में कहा-''श्री हीरामुनि जी के लिये यह परम सौभाग्य का विषय है कि वे एक महापुरुष के वरद हाथों से दीक्षित हो रहे हैं। मैं इस अवसर पर उनके प्रति सभी मंगल कामनाएँ, अपनी ओर से और आप सबकी ओर से प्रस्तुत करता हूँ कि वे त्याग और वैराग्य के जिस प्रशस्त मार्ग पर आरूढ़ हुए हैं, उस मार्ग पर गुरु महाराज के चरण चिह्नों पर चलते हुए, उत्तरोत्तर प्रगति करते रहें और जैन श्रमण परम्परा को अक्षुण्ण ही न बनाए रखें बल्कि उसे आगे बढ़ाने में सहायक हों।'' उनका कथन आज सत्य सिद्ध हो रहा है।

16 फरवरी, 1964 से अजमेर में अधिकारी मुनिराजों का सम्मेलन सम्पन्न हुआ, जिसमें सभी प्रमुख अधिकारी संतों ने भाग लिया। आचार्य श्री आनन्दऋषिजी महाराज को आचार्यपद की चादर ओढ़ाई गई। राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री मोहनलालजी सुखाड़िया इस अवसर पर उपस्थित थे। जिनवाणी मार्च 1964 के अंक में इस सम्मेलन पर संक्षिप्त कार्यवाही प्रकाशित हुई।

अप्रेल, 1964 का अंक स्वाध्याय अंक के रूप में प्रकाशित हुआ, जिसमें 24 लेखकों के आलेख, कथाएँ, कविताएँ आदि उपलब्ध हैं। कुछ स्वाध्यायियों के अनुभव भी प्रकाशित हुए। स्वाध्याय संघ की प्रवृत्तियों पर भी प्रकाश डाला गया। मध्यप्रदेश स्थानकवासी जैन युवक संघ की स्वाध्यायी प्रवृत्तियों पर श्री मनोहरलालजी जैन-शाजापुर ने प्रकाश डाला तथा वहाँ के 44 स्वाध्यायी श्रावकों की सूची प्रस्तुत की। इस आलेख में प्रकट किया गया कि मध्यप्रदेश में उपाध्याय पण्डितरत्न श्री हस्तीमलजी म.सा. के शुभागमन और उनकी सत्प्रेरणा से प्रार्थना, स्वाध्याय एवं सामायिक का संदेश घर-घर पहुँचाने के लिए विशेष प्रयास हो रहे हैं। सैलाना चातुर्मास में अखिल भारतीय सामायिक संघ का अधिवेशन हुआ। तत्पश्चात् आपने उज्जैन, शाजापुर, सुजालपुर, भोपाल आदि क्षेत्रों का स्पर्श किया। 3 व 4 फरवरी, 1963 को शाजापुर में युवक संघ की बैठक रखी गई, जिसमें स्वाध्याय एवं सामायिक की आवश्यक प्रवृत्ति को घर-घर में पहुँचाने के सम्बन्ध में निर्णय लिया गया। स्वाध्याय अंक का सम्पादन डॉ. नरेन्द्र भानावत द्वारा किया गया।

पण्डित श्री लक्ष्मीचन्द जी म.सा. द्वारा पूज्य श्री घासीराम जी म.सा. पर जून, 1964 के अंक में, आचार्यश्री जयमल जी महाराज की परम्परा के तपस्वी श्री हर्षचन्द्र जी महाराज पर सितम्बर, 1964 के अंक में तथा आचार्यश्री रायचन्द्र जी महाराज पर नवम्बर, 1964 के अंक में प्रकाश डाला गया। इस समय जिनवाणी पत्रिका आवरण पृष्ठ के अतिरिक्त 24 से 28 पृष्ठों में प्रकाशित हो रही थी। श्री अगरचन्द नाहटा द्वारा सितम्बर, 1964 के अंक में स्थानकवासी परम्परा के सुकवि श्री हरजसरायजी का परिचय दिया गया। विनयचन्द जी कुम्भट, जेठमल जी चोरडिया आदि श्रावकों के अलावा हरजसराय जी के कवित्व की चर्चा प्राप्त होती है।

अखिल भारतीय सामायिक संघ का तृतीय अधिवेशन भोपालगढ में 17-19 नवम्बर, 1964 को आयोजित हुआ। जिसमें अनेक ग्राम-नगरों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। स्वाध्याय एवं सामायिक की साधना को उस समय व्यापक स्तर पर प्रसारित करने का अभियान चल रहा था। इस अधिवेशन के अवसर पर आचार्य श्री आनन्दऋषिजी महाराज, उपाध्याय श्री अमरमुनिजी, प्रवर्तक श्री पुष्करमुनिजी आदि के शुभ संदेश प्राप्त हुए। कविरत्न श्री चन्दनमुनिजी ने पूणिया श्रावक पर काव्यात्मक रचना की जो दिसम्बर, 1964 के अंक में प्रकाशित है, उसकी कतिपय पंक्तियाँ इस प्रकार हैं-

''करने वाला जन सामायिक नरक गति नहीं पाता है।
चक्कर भी चौरासी वाला आखिर तो मिट जाता है।।
सके खरीद सामायिक को जो दुनिया में धनवान नहीं।
सामायिक का मोल चुकाना बिल्कुल भी आसान नहीं।।''

(क्रमशः)

भारत के 14 वें राष्ट्रपति बने श्री रामनाथ कोविंद

25 जुलाई 2017 को भारत के 14 वें राष्ट्रपति के रूप में श्री रामनाथ कोविंद ने 71 वर्ष की वय में भारत के सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधिपति जे.एस. खेहर से शपथ ग्रहण की। श्री रामनाथ कोविंद ने दलित वर्ग में जन्म लेकर अपने सतत सकारात्मक पुरुषार्थ के साथ वकालात, राज्यसभा सदस्य एवं बिहार के राज्यपाल के रूप में सेवाएँ देकर यह मंजिल तय की। उन्होंने 13 वें राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी का 5 वर्ष का कार्यकाल पूर्ण होने पर भारतीय जनता पार्टी की ओर से चुनाव लड़ते हुए 65 प्रतिशत मत प्राप्त कर 20 जुलाई 2017 को विजय हासिल की है। उत्तरप्रदेश में डेरापुर, कानपुर में 01 अक्टूबर 1945 को जन्मे कोविंद अपने प्रतिपक्षी मीरा कुमार से जीते हैं। उन्हें जिनवाणी परिवार की ओर से हार्दिक बधाई। **-सम्पादक**

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

(कषाय रहित भाषा-प्रयोग)

कोहे माणे य मायाए, लोभे य उवउत्तया।
हासे भए मोहरिए, विकहासु तहेव य।।
एयाइं अट्ठठाणाइं, परिवज्जित्तु संजए।
असावज्जं मियं काले, भासं भासिज्ज पण्णवं।।

-उत्तराध्ययनसूत्र, अध्ययन 24, प्रवचनमाता, सूत्र 9-10

अर्थ- क्रोध, मान, माया और लोभ में, हास्य, भय और मौखर्य (वाचालता) में, तथा विकथाओं में भाषा का प्रयोग करना दूषण है।।9।।

प्रज्ञावान संयती (साधु) इन आठ स्थानों को छोड़कर यथासमय निर्दोष और परिमित भाषा बोले।।10।।

विवेचन- उपर्युक्त गाथाएँ साध्वाचार में निरूपित पाँच समितियों के अन्तर्गत भाषा समिति से सम्बद्ध हैं। साधु को भाषा का प्रयोग अत्यन्त विवेक के साथ करना होता है। उसी प्रयोजन से यहाँ कहा गया है कि साधु को असावद्य (दोषरहित), सीमित एवं यथा समय भाषा का प्रयोग करना चाहिए। उसे आठ प्रकार से भाषा का वर्जन करना चाहिए। क्रोध में, मान में, माया में एवं लोभ में आकर भाषा का प्रयोग करना साधक के लिए उचित नहीं है। इसी प्रकार हास्य, भय, वाचालता और विकथापूर्वक भी भाषा का प्रयोग नहीं करना चाहिए। प्रज्ञावान साधु-साध्वी ही नहीं, अपितु प्रज्ञावान कोई भी पुरुष इन आठ स्थानों से रहित होकर निर्दोष एवं परिमित भाषा का प्रयोग समय पर करे तो वह भाषा स्वयं के लिए एवं दूसरों के लिए भी क्लेशकारिणी एवं अहितकारिणी होती है। क्रोध में बोला गया वचन दोषपूर्ण होता है। इसी प्रकार मान, माया एवं लोभ में आकर बोला गया वचन भी सावद्य होता है। क्रोध आदि विकारों में जब भाषा का प्रयोग किया जाता है तो उसमें अपने विकारों की मिलावट हो जाती है। इसलिए वह भाषा परिमित भी नहीं रहती, उसमें अनावश्यक विस्तार हो जाता है तथा कई बार दूसरे के दोषों पर अनावश्यक आक्षेप होता है, वक्ता स्वयं आवेश में रहने के कारण सत्य से विचलित भी हो जाता है। साधु-साध्वी का लक्ष्य अपने क्रोधादि विचारों पर विजय प्राप्त करना होता है। अतः उन्हें वाणी में भी इन विकारों के साथ भाषा का प्रयोग करना भटकाने वाला होता है। वक्ता स्वयं तो अशान्त होता ही है, वह श्रोता को भी अशान्त बना देता है तथा उसमें भी आवेश उत्पन्न होने की सम्भावना रहती है। दोनों जब आवेश में आकर भाषा का प्रयोग करने लगते हैं तो पुरानी बातें भी उभर कर सामने आती हैं, जिससे वातावरण विषमय एवं क्षोभजनक हो जाता है। इसलिए क्रोध आने पर साधक को भाषा का प्रयोग करने से बचना चाहिए, क्योंकि वह भाषा सावद्य होती है। इसी प्रकार मान, माया एवं लोभ में आकर बोली गई भाषा भी सावद्य कहलाती है। कई बार हँसी-मजाक में कहे गये वचन भी भारी पड़ जाते हैं। इसलिए ऐसा हास्य नहीं होना चाहिए जिससे किसी को ठेस पहुँचे। किसी से डर कर एवं किसी को डराने हेतु जिस भाषा का प्रयोग किया जाता है, वह भी सत्य नहीं होती, सावद्य होती है। आवश्यकता से अधिक बोलना मौखर्य है। मौखर्य का प्रयोग भी साधक के लिए वर्जित है। ज्यादा बोलने में गलत बोलने की संभावना रहती है। इसी प्रकार विकथा का वर्जन करना भी साधक के लिए अनिवार्य है। जिस विषय पर साधक को बात या चर्चा नहीं करनी चाहिए, उस विषय पर कृत चर्चा को विकथा कहा गया है। उदाहरण के लिए साधकों को स्त्रियों के शृंगार, हावभाव आदि के सम्बन्ध में, स्वादिष्ट भोजन एवं भांति-भांति के व्यंजनों के सम्बन्ध में, राजनीति, फिल्मों आदि के सम्बन्ध में बातें करना विकथा है। यह विकथा भी पूर्णतया त्याज्य है। साधु की वाणी की तीन विशेषताएँ होती हैं- 1. वह निर्दोष भाषा का प्रयोग करता है। 2. वह सीमित शब्दों में अपनी बात कहता है, अर्थात् वह अल्पभाषी होता है। 3. वह समय पर बोलता है, अनावश्यक नहीं बोलता। इस भाषा- समिति का प्रयोग जो साधु-साध्वी

सजगतापूर्वक करते हैं, वे अपनी आत्मा का तो हित करते ही हैं, जिनके साथ रहते हैं या सम्पर्क में आते हैं उनका भी हित करते हैं। विवेकयुक्त भाषा या वचनों का प्रयोग वातावरण को आत्मीयता, माधुर्य एवं सरसता से सम्पन्न बनाता है। भाषा-समिति का यह विवेक गृहस्थ जीवन को भी सरस एवं मधुर बना सकता है।-**सम्पादक**

पैकेज्ड पानी की बोतल न बने स्टेटस सिम्बल

श्रीमती सुशीला बोहरा

जिस देश में पानी क्या दूध भी नहीं बेचा जाता था उस देश में पानी की बोतल अब 15 से 20 रूपये में सरे आम बिक रही है और देखा देखी एवं शान शौकत दिखाने के लिये हम भी स्टेशन पर ट्रेन में चढ़ते ही 20 रुपये में पानी की बोतल खरीदते हैं। क्या हमारे यहाँ एक बोतल पानी नहीं है? प्रश्न विचारणीय है। आजकल सामान्य घरों में भी ठण्डा पानी रहता है उसमें रात को बर्तन में ठंडा पानी रखिये तथा प्रातः ठंडा पानी केतली में भरकर साथ में ले जाइये। सफर में इतना सामान साथ में होता है उसके साथ पानी की केतली भी रह जायेगी। दूसरा इसका फायदा होगा पानी की केतली में जिस टेम्परेचर पर आप पानी डालेगें उतने ही टेम्परेचर पर आपको पानी जितनी देर उसमें रखेगें पीने को मिलेगा। लेकिन पानी की बोतलों का पानी आप कितना ही ठंडा खरीद ले जायें वह आध एक घंटे में गर्म हो जायेगा। इसके अलावा कई बार आधा पानी पीते हैं आधा यों ही छोड़ देते हैं। पानी भी व्यर्थ होता है और पैसा भी। सबसे बडी बात, हम बाजार की बोतलों का जो अनछना पानी पी रहे हैं वह पूर्णतः शुद्ध व स्वच्छ स्थिति में भी कई बार नहीं होता। एक एक महीने से पड़ा हुआ पानी भी हो सकता है। इसके अलावा छोटी-मोटी कम्पनियों का पानी विश्वसनीय भी नहीं होता है।

हमें पानी की बोतल भरने वाली कम्पनी के एक पड़ौसी ने बताया कि सीधा नल का पानी भी इन बोतलों में भर देते हैं तथा बड़े ड्रम तो अधिकांशतः ऐसे ही नलों के पानी से भरे होते हैं केवल उनको ठंडा कर दिया जाता है। अतएव भोली जनता सावधान रहे। जेब का पैसा भी खर्च तथा शुद्ध पानी भी नहीं। अतएव हमें भी अपनी आदत को सुधार कर घर से बोतल भर कर ले जाने की आदत डालनी चाहिये। यह केवल उन लोगों के लिये छोड़ दीजिये जो देश-विदेश घूमने जाते हैं, उनको पानी की यह सुविधा मिल जाय।

आप स्वंय भी देखते हैं कि अंतिम स्टेशन पर गाड़ी के ठहरते ही बच्चे पानी की बोतलों को एकत्रित करने दौड़ पड़ते हैं। वे इन बोतलों को तोड़ने के लिये नहीं बेचने के लिये एकत्रित करते हैं। फिर ये बोतलें कहाँ जाती हैं? जहाँ छोटी मोटी कम्पनियों में बड़ी कम्पनियों के लेबल पड़े होते हैं। वे लेबल चिपका कर उन्हीं बोतलों में पानी भरकर फिर आप और हम तक पहुँचा दिया जाता है।

अभी समय है अपनी दिखावे की प्रवृत्ति को बदल दीजिये। 2 रूपये के पानी को 20 रुपये में नहीं खरीदें। घर से शुद्ध, छना हुआ और अच्छा पानी तथा जैनी हो तो गरम पानी या धोवन पानी अपनी बोलत में लेकर बाहर ले जाइये इससे अनावश्यक पैसे के खर्च तथा बीमारी से भी बच पायेंगे। इसके अलावा प्रतिदिन शादियों एवं सामूहिक आयोजनों में ऐसे मंहगे पानी का जो अपव्यय होता है, उससे गरीब व्यक्ति को न चाहते हुए भी प्रतिष्ठा के नाम पर हजारों रूपये का अनावश्यक खर्च पानी के लिये मजबूर होकर करना पड़ता है।

अतएव घर के पानी की यह बोतल रखकर धन के अपव्यय से बचाव करें तथा जैनत्व की आन शान बान बन उभरें तथा ट्रेन में बैठने वाले अन्य लोग भी इसके महत्त्व को समझकर अपनायें, इन्हीं शुभ कामनाओं के साथ.....।

-कार्याध्यक्ष, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.)

विचार-वारिधि

क्या हमें दोष खटकता है?

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.

- आवेश में किया हुआ कोई भी काम स्व-पर का हितकारक नहीं होता।
- पागल की बातों को जैसे हम बुरी नहीं मानते, वैसे ही क्रोधादि से पराधीन व्यक्ति की बातों को भी बुरी नहीं मानना चाहिए, क्योंकि वह परवश एवं दया का पात्र है।
- शारीरिक और वाचिक संयम कर लेने से मन आसानी से ध्यान में लग सकता है।
- भगवान के भजन में मन को लगाने के लिए शारीरिक और वाचिक संयम चाहिए। पवित्र साधना एवं पुरुषार्थ के बिना यह संभव नहीं है।
- भला! इससे बढ़कर आश्चर्य की बात और क्या होगी कि हम भौतिक वस्तुओं को अपना समझकर उनके लिए तो चिन्ता करते हैं, पर आत्म-धन की चिन्ता नहीं करते।
- जैसे निर्मल जल से वस्त्र की शुद्धि होती है, उसी प्रकार सत्संग से जीवन पवित्र होता है।
- निर्मलता, शीतलता और तृषा-निवारण जल का काम है। सत्पुरुषों का सत्संग भी ऐसा ही त्रितापहारी है। वह ज्ञान के द्वारा मन के मल को दूर करता है, संतोष से तृष्णा की प्यास मिटाता है और समता व शान्ति से क्रोध का ताप दूर करता है।
- आत्मोन्नति के लिए सत्संग की खुराक आवश्यक है। श्रुताराधन, वायु-सेवन की तरह है।
- हर एक संघ को दीपक बनकर ज्ञान की ज्योति जगाने का काम करना चाहिए।
- यदि दीपक में तेल और बत्ती है, किन्तु लौ बुझ गई है तो जलता हुआ दूसरा दीपक उसे जला सकता है।
- इतिहास साक्षी है कि श्रुतबल, स्वाध्याय तथा ज्ञान ने लाखों मनुष्यों के जीवन को सुधार दिया है।
- वस्तुतः जो शिक्षा को जीवन में उतार ले, वही दूसरों को शिक्षा देने का पूर्ण अधिकारी होता है।
- धार्मिक जन का जीवन सफेद चादर के समान है। उजली चादर पर छोटी-सी स्याही की बूंद भी खटकती है।
- साधु-सन्त और भक्त-गृहस्थ सफेद चादर की तरह हैं, उनमें छोटा-मोटा दोष भी खटकता है।
- केवल व्यापार में ही आदमी आत्म-विश्वास के बिना पिछड़ा रह जाता हो, यह बात नहीं है; आध्यात्मिक क्षेत्र में विश्वास नहीं होता है, तो भी पिछड़ जाता है।
- जीवनी शक्ति को बनाये रखने के लिये जितना खाना आवश्यक है, उतने का परिमाण कर लें, उससे अधिक न खाएँ। साधारणतः देखा जाता है कि प्रायः सभी व्यक्तियों की अधिकाधिक खाने की इच्छा रहती है और जब पेट मना कर देता है, तभी वे खाना बन्द करते हैं।
- कम बोलना और ज्यादा करना है, जिससे आपका बोलना और करना समाज के लिए वरदान सिद्ध हो सके।
- स्तुति करने वाले शंका करते हैं कि प्रभु तारने वाले नहीं, फिर स्तुति क्यों? उनको समझना चाहिए कि प्रभु-भक्ति तुम्ब की तरह तारक है। मन की मशक में प्रभु-भक्ति एवं सद्-विचार की वायु भरने से आत्मा हल्की होकर तिर जाती है।
- यदि मोह का बंधन ढीला करने के लिए भक्ति का मार्ग अपना लिया जाए तो मोह दब जायेगा। यदि मोह की जड़ भक्ति की अपेक्षा अधिक सबल होगी तो निश्चय ही भक्ति दब जाएगी।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

प्रवचन

कषाय-विजय की राह के बनें राही

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा सुशीला भवन, निमाज, जिला-पाली में 01-02 अक्टूबर 2016 को विद्वत्संगोष्ठी में फरमाए गए इन प्रवचनों का संकलन श्री जगदीश जी जैन द्वारा किया गया है।-सम्पादक

प्रथम दिवस (1 अक्टूबर 2016)

जीव का स्वभाव ध्रुव-शाश्वत-स्थिर होते हुए भी वह नाना गति-जाति-योनियों में भटक रहा है। निश्चित ही इस भटकने के पीछे कोई कारण रहा हुआ है। सर्वज्ञों की वाणी में वह कारण 'कर्म' कहा जा रहा है। कर्म का बंध भी बिना कारण के नहीं हुआ करता। उस कर्म बंध का कारण कषाय है। सामान्य रूप से धारणा है कि परिवार में पूर्वजों के रोग कभी संतति में वंशानुगत पाये जाते हैं- जैसे बाप के पसीना अधिक आता है तो बेटे में भी वे लक्षण मिलेंगे। यदि बाप के हार्ट की बीमारी है तो बहुधा वह परिवार में किसी न किसी के हो ही जाती है। पड़ौसी अक्सर उस समय कह ही देते हैं कि इसके बाप-दादा से यह बीमारी चली आ रही है। इसी तरह यदि किसी क्षेत्र के पानी में खराबी है तो वहाँ कई भाइयों के बाला आदि रोग हो जाते हैं। ऐसे ही प्रान्त व देशीय रोग भी हैं- जैसे डेंगू, चिकनगुनिया, आई फ्लू आदि।

मैं आज एक ऐसे रोग की बात करने जा रहा हूँ- जिसे आप मानें या न मानें, जो प्रत्यक्ष में दिखे या न दिखे, पर वह त्रिलोकव्यापी है। प्रत्येक संसारी जीव उस रोग से ग्रसित है, कोई भी उस रोग से बचा हुआ नहीं है। वह रोग है- कषाय का रोग। अन्य रोग केवल कुछ दिनों के लिये, महीनों के लिये, वर्षों के लिये या अधिक हो तो उस भव के लिये रुलाने वाले हैं। आप सब वणिक् हैं, लाभ-हानि वाले सौदों में प्रज्ञा से काम लेने वाले हैं। आपको एक भव का रोग मिटाना है या भव-भव का रोग मिटाना है, तन के रोग को तो तत्काल मिटाने के लिये आप चिकित्सकों के चक्कर लगाते हैं, पर कषाय का रोग जो अनादिकाल से है, उसके लिये देरी क्यों? दीर्घकालीन लाभ वाले व्यवसाय के लिये आप जितने व्यथित हैं, उतनी तड़फन अनादिकालीन कषाय से छुटकारे के विषय में हो, ऐसा आह्वान कर रहा हूँ। इसके लिये जन्म से रुलाने वाले कषाय के निकंदन के लिये चिन्तन कर पुरुषार्थ करें।

'आगम-साहित्य में कषाय' विषय पर संगोष्ठी चल रही है। इसमें मुझे अनन्तानुबन्धी चतुष्क एवं मिथ्यात्व को लेकर कुछ कहना है। प्रश्न यह है कि अनन्तानुबंधी एवं मिथ्यात्व में से पहले क्या? मुर्गी व अण्डे में पहले कौन? इसी तरह यहाँ भी जिज्ञासा है। इस प्रश्न का उत्तर भी कठिन है, किन्तु विचार करने पर ज्ञात होता है कि दूसरे गुणस्थान में अनन्तानुबंधी है, मिथ्यात्व नहीं, इससे द्योतित हो रहा है कि अनन्तानुबंधी कारण है। जब तक अनन्तानुबंधी है, तब तक सम्यक्त्व नहीं होता। सम्यक्त्व से गिरते अनन्तानुबंधी का उदय होता है। अतः अनन्तानुबंधी के कारण से मिथ्यात्व है, पर मिथ्यात्व के कारण से कषाय है ऐसा नहीं कहा जा सकता। तीसरे गुणस्थान में निर्णायक स्थिति नहीं होने से अज्ञान वाली अवस्था है। अज्ञान नहीं होते हुए भी मिथ्यात्व तो रहता है।

संसार में परिभ्रमण का कारण कषाय है। आसक्ति, तीव्र इच्छानुभूति, मिथ्यात्व, अज्ञान आदि संसारवर्धक कारकों से मुक्त होने का प्रयास करें। कहने के नाम पर मेहनत कर रहे हैं। किन्तु करणीय की ओर प्रयास के कदम जितने बढ़ने चाहिये, नहीं बढ़ रहे। ज्ञान का सार आचार एवं वीतरागता है, उसके लिये अपेक्षित

समय व सोच नहीं है। वास्तव में कषायों के छूटने पर ही मुक्ति सम्भव है-

नाशाम्बरत्वे न सिताम्बरत्वे
न तत्त्ववादे न च तर्कवादे।
न पक्षसेवाश्रयेण मुक्तिः,
कषायमुक्तिः किल मुक्तिरेव।।

दिगम्बर मान्यता वाले दिगम्बरता होने पर ही मुक्ति मानते हैं, तो श्वेताम्बर वस्त्रधारण से मुक्ति मानते हैं। तत्त्वज्ञ तत्त्व से व तर्कवादी तर्क से तथा सेवा करने वाले सेवा से मुक्ति मानते हैं। पर वास्तव में जो कषाय से मुक्त है, वही मुक्त है। अतः इस हार्द को समझकर एक जन्म के रोग के बजाय, भव-भव के रोग मिटाने के लिये कषाय के शमन को प्राथमिकता दें। जैसे- घर में आग लगने पर गूदड़े, जूते, कपड़े आदि पहले बाहर नहीं निकाले जाते अपितु सारभूत वस्तुएँ, चेतनरत्न पहले निकालने का लक्ष्य रहता है। ऐसा ही प्रयास कषायमुक्ति के लिये आवश्यक है।

कम पढ़ा, जघन्यज्ञान वाला भी श्रद्धा आचरण के साथ आगे बढ़ सकता है। क्योंकि उपादान स्वयं का ही काम आता है। अतः कर्म उदय के समय क्रोध नहीं करना, ऐसी सोच रखें। आत्मलक्ष्यी वृत्तिवाले बनें। अपने आपको देखना चालू कर दिया तो कषाय नहीं रहेगी। चिंतन के साथ सारभूत तत्त्व विद्वानों के द्वारा आपके समक्ष रखा जा रहा है। अच्छी से अच्छी बात सुनी किन्तु उसका जीवन निखारने में उपयोग करेंगे, तो सुनना सार्थक होगा।

द्वितीय दिवस (2 अक्टूबर 2016)

तीर्थंकर भगवान महावीर की आदेय अनमोल वाणी का आधार लेकर 'कषाय विजय' पर चिंतन चल रहा है। अनेक विद्वानों ने अपनी तरह से विवेचन का प्रयास किया। संक्षेप में सार यही है कि संसार का वर्धन करने वाला कषाय है। जन्म-मरण के मूल को सिंचन करने वाला कषाय है। उस कषाय की परिभाषा को समझें- कष+आय=कषाय। अर्थात् संसार की वृद्धि। जैनियों में ही इस कषाय शब्द का विशेष प्रयोग हुआ है। क्रोध-मान-माया-लोभ ही कषाय की आधारशिला है। कषाय के जितने भी भेद-प्रभेद हैं, उन्हें किसी न किसी रूप में हर पंथ वाले मानते हैं। कोई इन्हें पाप, वासना, विकार रूप में मान रहे हैं, तो कोई स्वभाव को मलिन करने वाले दुर्गुणों के रूप में ले रहे हैं तो कोई पतन की ओर ले जाने वाले मानकर कषाय की बात कहते हैं।

जहाँ कषाय है वहाँ ही संसार है। क्रोध-मान-माया-लोभ-राग-द्वेष ये ही संसार की वृद्धि कराने वाले हैं। जैन आगमों में सूक्ष्मता व गहराई से ''रागो य दोसो वि य कम्मबीयं'' पर विशद विवेचन उपलब्ध है। सम्यग्दृष्टि श्रावक व साधक सिद्ध बनने तक साधना के इन सूत्रों को उपादेय समझकर सजग व सावधानी से संसार में रहे हैं। भरत चक्रवर्ती संसार में किस तरह से रहे, दृष्टांत आपके ध्यान में है। छः खण्ड का अधिपति तो संभल गया। आप सुविज्ञों का भी हर समय, हर पल, हर क्षण यह चिंतन रहे कि मेरी भी कषाय कम हो।

जैसे भूख के अहसास के साथ भोजन की तलाश का सम्बन्ध है। वैसे ही दुःख-मुक्ति की अभिलाषा के साथ कषाय त्याग का सम्बन्ध है। इनकमटेक्स के कागज तैयार करने का काम आ गया तो वकील के पास जाओगे ही। कोई भी सामान्य सी समस्या आने पर तत्काल उपाय खोजते हो, इसी तरह का प्रयास कषाय मुक्ति के लिये हो। समस्त रोगों का छुटकारा कषाय विजय में ही है। आपने चाहे कितनी ही सामायिक कर ली, मासक्षपण कर लिया, 20 वर्ष संयम पूर्ण कर लिया, पर चिन्तन करें- पूर्व की अपेक्षा कषाय कितनी कम हुई। जब मैं जन्मा था, तब क्या स्थिति थी और आज क्या है? जन्म से बालक मधुर होता है, पर ज्यों-ज्यों वह बड़ा होता जाता है, तो उसकी प्रवृत्तियाँ काषायिक हो जाती हैं। जबकि आम के पेड़ के फल को लें, जब वह लगता है, आता है उस अवस्था में खट्टा रहता है, पर वह परिपक्व अवस्था में ज्योंही आता है, मिठास से भरपूर होता रहता है। पर आदमी विपरीत क्यों

हो रहा है। काश! यौवनावस्था वाले हर मानव की भी ऐसी सद्वृत्ति होती। आपका द्वेष, अहंकार, क्रोध अनपढ़ व्यक्ति से कम होना चाहिये, क्योंकि आप सब ज्ञानी की श्रेणि में आते हैं। प्रायः देखा जाता है कि अनपढ़ों में इतना क्रोध नहीं होता, जबकि पढ़ा लिखा हर बात में कषाय रखता है। कषाय बढ़ने से ज्ञानी भी मूर्ख नहीं, महामूर्ख बन रहे हैं।

ज्ञान से युक्त तप की साधना शरीर व कर्म दोनों को हल्का कर कषाय घटाती है। जो व्यक्ति कषाय घटाता है वही तपस्वी है, वही व्रती है, वही संयमी है। यदि तप से कषाय नहीं घटी तो वह मात्र अज्ञान तप है। भेदज्ञान क्या? विभाव से स्वभाव में आना, अपने गुणों में आना, शरीर व आत्मा को पृथक् अनुभव करना भेद ज्ञान है। कष्ट शरीर को है, आत्मा को नहीं, ऐसी समझ आना ही भेदज्ञान है। स्वयं के बच्चों की गलत करतूतें सहन कर लेना, वैसी ही हरकतें पराये की हो तो विभाव में आ जाना कषाय का द्वार है। रेत गरम है या ठण्डी? ताप की अधिकता में गरम हो जाना, शीतकाल में ठण्डा रहना, बाहर की परिस्थिति के अनुसार स्थिति रहेगी ही। पानी तेरा रंग कैसा? जैसा रंग मिलाओ वैसा। पर भेदज्ञान का ज्ञाता मानव परिस्थिति के अनुसार नहीं बदलता। बाहर की अनुकूल-प्रतिकूल सभी परिस्थितियों में वह मनःस्थिति से सम रहता है। लगभग तीन महीने से चल रहे प्रवचनों के संदर्भ में आपसे पूछा जाय, तो यही उत्तर मिलेगा- याद नहीं है। यदि कभी ऊँची या कठोर भाषा में बात कह दी हो, तो वह आज तक गाँठ बाँध कर रखी गई है। जो क्रिया कर रहे हो, उस समय यह भी खयाल रखें कि इस कारण से कहीं मेरा अहंकार तो नहीं बढ़ रहा है। कषाय कम हो, ऐसा लक्ष्य रहना चाहिये। बकरा काटने वाला ही कसाई नहीं, क्रोध-मान-माया-लोभ वाला भी कसाई है। क्योंकि वह आत्मगुणों की घात करने वाला कसाई है। कभी किसी के गुणों को देखकर कहते हैं- यह आदमी तो देवता है, यह सदैव प्रसन्नचित्त हँसमुख रहता है। यह तो सभी के साथ मित्र जैसा व्यवहार करता है। अरे! यह तो उपकारी है, यह सभी के उपकार मानता है। इस तरह के गुण ग्रहण करना भी संयम है। कभी साधु को असम्मान-जनक भाषा में कहकर देखो- वह सहन करने में कितना सक्षम है? कई गृहस्थ संवत्सरी पर लोच करवाते हैं- मेरा कहना है पहले पाँच इन्द्रियों, चार कषायों का मुण्डन करिये इसके बाद दसवां मुण्डन 'लोच' है। कहने का आशय यही है- संयम के बाद तप है। मुण्डन कराया हुआ यदि पत्नी के साथ बैठता है तो पडिवाई लगता है। उपहास न हो, ऐसे कारणों से बचने में विवेक रखें। विद्वानों से भी ऊँची-ऊँची बातें सुनने को मिली, पर मात्र सुनने से कुछ होने वाला नहीं है। जैसे- अमृत व संजीवनी की बात सुनने से आरोग्य होने वाला नहीं। चिकित्सा तो ग्रहण करने से ही होगी। ऐसे ही ऊँची व अच्छी बात सुनकर आचरण में लायें।

आप भी चिंतन करें, मैं भी चिंतन करूँ। हमें सोचना है- मैं व्यर्थ में राग-द्वेष कर कषाय तो नहीं बढ़ा रहा हूँ? कषाय को घटाकर सदाचरण करने पर ही कर्मों से मुक्ति मिलेगी। मेरा मित्र एवं शत्रु सबके प्रति समभाव रहे। सुभाषित वचन सुनने को मिल रहे हैं। आज से मन-वचन-काया से कषाय-विजय के लिये कमर कसकर प्रयास में जुट जाएँ, यही मंगल भावना है। ■

जिनवाणी पर अभिमत

श्रीमती सरोज गोलेच्छा

मैं वैसे तो जिनवाणी का 40 साल से वाचन कर रही हूँ। समय-समय पर आपके द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं में भी भाग लेती हूँ पर जब जिनवाणी लेट हो जाती है तब मेरा मन जिनवाणी के लिए व्याकुल हो जाता है। हर महीने मुझे इन्तजार रहता है। जिनवाणी से सभी शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त होता है। जिनवाणी जून-2017 में 'चित्तशुद्धि का उपाय' लेख पढ़कर बहुत अच्छा लगा। मन को संतोष हुआ। श्री शरणानन्दजी महाराज ने जो उपाय बताये वे बहुत अच्छे लगे। -*सनावद (मध्यप्रदेश)*

क्रोध कषाय : स्वरूप, दुष्परिणाम, कारण एवं निवारण

श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के शिष्य रत्न श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. द्वारा 1-2 अक्टूबर 2016 को निमाज में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रदत्त प्रवचन के आधार पर लिखित आलेख।-सम्पादक

आत्मानुभूति के साथ आनन्दानुभूति अवश्य ही होती है। आत्मानुभूति में सबसे बड़ा बाधक तत्त्व मिथ्यात्व सहित कषाय है। यह कषाय ही पाप है- जो आत्मा के आनन्द रस का शोषण करता रहता है। कहा भी है- ''आत्मनः आनन्दरसं शोषयति इति पापम्।'' जो आत्मा के आनन्दरस का शोषण करता है- वह पाप है। कषाय ही दुःखदाता है, कषाय के छूटने पर दुःख स्वतः छूट जाता है। आत्मा तो स्वभाव से आनन्दमय ही है। कषाय ही उसमें दुःख का विष घोलते हैं। कषायमुक्ति ही दुःख मुक्ति है।

कषाय चार हैं- क्रोध, मान, माया और लोभ। पुनः एक-एक के चार-चार प्रकार हैं। अनन्तानुबन्धी, अप्रत्याख्यानी, प्रत्याख्यानावरण और संज्वलन। इन कषायों का सम्पूर्ण क्षय होने पर ही आत्मा की अक्षय शुद्ध अवस्था प्राप्त होती है। इन चारों कषायों में प्रथम कषाय क्रोध है। यह अन्य कषायों की अपेक्षा स्थूल है। जनसामान्य को भी समझ में आता है, पकड़ में आता है। संसार के अधिकांश प्राणी इस क्रोध कषाय की आग में झुलस रहे हैं। इस ज्वाला के लिए जल का कार्य करती है 'क्षमा'। इस क्षमा से ही जीव आह्लाद भाव को प्राप्त करता है।

क्रोध का स्वरूपः- 'क्रुध' कोपे। क्रुध धातु कोप के अर्थ में प्रयुक्त होती है। 'कुध्' धातु में 'घञ्' प्रयत्य लगकर 'क्रोध' शब्द निर्मित हुआ है। भगवती सूत्र शतक 12 उद्देशक 5 में क्रोध मोहनीय के दस पर्यायवाची नाम गिनाये हैं। (इनका वर्णन जुलाई 2017 के अंक में डॉ. दिलीप धींग के आलेख में प्रकाशित हैं।-**सम्पादक**)

आगमकारों ने क्रोध के चार स्तर बताये हैं- 1. अनन्तानुबंधी, 2. अप्रत्याख्यानी, 3. प्रत्याख्याना-वरण, 4. संज्वलन।

1. **अनन्तानुबंधी क्रोधः-** इस क्रोध को पर्वत में पड़ी दरार की उपमा दी गई है। अनन्तानुबंधी के स्तर पर रहा हुआ जीव किसी भी स्थिति में क्रोध को नहीं छोड़ पाता है। वह किसी से मिलने, सुलह करने के भाव नहीं रखता। उसे क्रोध हेय नहीं लगता।
2. **अप्रत्याख्यानी क्रोधः-** इसे सूखे तालाब में पड़ी हुई दरार से उपमित किया गया है। अगले वर्ष वर्षा होने पर जैसे ये दरारे पुनः मिल जाती हैं, वैसे ही यह क्रोध भी कुछ प्रयास से मिट जाता है।
3. **प्रत्याख्यानावरण क्रोधः-** इसकी तुलना रेत में खींची गई लकीर से की जाती है, जैसे हवा के झौंके से वह लकीर मिट जाती है, वैसे अत्यल्प प्रयास से वह क्रोध मिट जाता है।
4. **संज्वलन क्रोधः-** यह क्रोध जल में खींची गई रेखा के समान है। पानी पर खींची गई रेखा इधर खींची जाती है और उधर मिटती जाती है, वैसे ही यह क्रोध भी बिना किसी प्रयास के तत्काल समाप्त हो जाता है।

अनन्तानुबंधी क्रोध मिथ्यात्व की भूमिका में रहता है। इसके छूटने पर ही जीव सम्यग्दर्शन प्राप्त करता है। इसका मिथ्यात्व के साथ गहरा सम्बन्ध है। अतः सही समझपूर्वक सर्वप्रथम इसका परित्याग करना चाहिए। अप्रत्याख्यानी क्रोध देश विरति में अवरोध उत्पन्न करता है।

अप्रत्याख्यानी क्रोध छूटने पर ही जीव श्रावक बनता है। प्रत्याख्यानावरण क्रोध सर्वविरति में बाधा पैदा करता है। प्रत्याख्यानावरण क्रोध छूटने पर ही जीव साधुता की साधना का अधिकारी बनता है। संज्वलन क्रोध यथाख्यात चारित्र को प्राप्त नहीं होने देता। संज्वलन क्रोध छूटने पर ही जीव यथाख्यात चारित्र में प्रवेश प्राप्त करता है (यहाँ इन सबमें क्रोध के साथ अन्य कषाय मान-माया-लोभ को भी समझना चाहिए।)

स्थानांग सूत्र के चतुर्थ स्थान में क्रोध के चार प्रकार ये भी बताये हैं-

1. **आभोग निर्वर्तित क्रोध-** बुद्धिपूर्वक किया गया क्रोध आभोग निर्वर्तित कहलाता है। अभयदेव सूरि के अनुसार क्रोध के दुष्फल को जानते हुए क्रोध करना भी इसी के अन्तर्गत आता है। मलयगिरिसूरि कहते हैं कि अपराधी के सीधी तरह नहीं मानने पर उसे सीख देने के लिए जो क्रोध किया जाता है, वह इसी प्रकार में है।
2. **अनाभोग निर्वर्तित क्रोधः-** अबुद्धिपूर्वक होने वाला क्रोध अनाभोग निर्वर्तित कहलाता है अथवा गुणदोष का विचार किये बिना सहसा उत्पन्न होने वाला क्रोध भी इसी में समाविष्ट है।
3. **उपशान्त क्रोधः-** उदय को अप्राप्त किन्तु सत्ता में अवस्थित क्रोध को उपशान्त क्रोध कहते हैं।
4. **अनुपशांत क्रोधः-** उदय को प्राप्त क्रोध- अनुपशांत क्रोध कहलाता है।

क्रोध में व्यक्ति के सिर पर भूत सवार हो जाता है। जैसे- यक्षाविष्ट व्यक्ति बेभान हो जाता है, वैसे ही क्रोधी को भी क्रोध के क्षणों में कोई भान नहीं रहता। उसका विवेक पलायन कर जाता है। उसकी विचारशक्ति कुण्ठित हो जाती है। उसे अपनी जबान पर भी लगाम नहीं रहती। किसी ने ठीक ही कहा है-"An angry man shuts his eyes and opens his mouth"। गुस्से में व्यक्ति की आँखें तो बंद हो जाती हैं, परन्तु उसका मुँह खुल जाता है। क्रोध में व्यक्ति की चेतना दिशाविहीन हो जाती है। आत्मा के लिए सर्वथा अहितकर ऐसे क्रोध के स्वरूप को समझकर इसके त्यागने में ही जीव की समझदारी है।

क्रोध के दुष्परिणाम

क्रोध आत्मा के लिए शत्रुवत् कार्य करता है। क्रोध में व्यक्ति का चित्त अशान्त हो जाता है। भगवान महावीर स्वामी ने दशवैकालिक सूत्र में कहा है- 'कोहो पीइं पणासेइ'(8.38)। क्रोध प्रीति नाशक है। प्रीति आत्मा का मौलिक गुण है और यह क्रोध उसको खा जाता है। इस क्रोध की तीन खुराक हैं- प्रीति, विनय और विवेक। भीतर में आनन्दप्रद प्रीति का रस सूखते ही उसका स्थान द्वेष ले लेता है, जो खेददायक है।

क्रोध करने से पाँच चीजें जल जाती हैं- 1. पुण्यवानी, 2. खून, 3. बुद्धि, 4. पारिवारिक सम्बन्ध, 5. समय।

1. क्रोध कषाय पाप है। यह पाप, पुण्य का नाशक है। क्रोधी व्यक्ति का खून जल जाता है। किसी कवि ने कहा है-

गुस्से से तन दुर्बल बनता, लोही विषमय बन जाता।
तेज चला जाता आँखों का, ज्ञानरहित मन बन जाता।
अक्ल न जाने कहाँ जाती है ज्ञानी और गंवार की।
सुन लो जैनों कान लगाकर, वाणी तारणहार की।।

2. खून जलने से तन कमजोर होता है, खून विषाक्त हो जाता है। आँखों का तेज समाप्त हो जाता है, ज्ञान, अक्ल, विवेक नष्ट हो जाते हैं।
3. बुद्धि जल जाती है। कहते हैं- क्रोध की शुरुआत मूर्खता से और समाप्ति पश्चात्ताप से होती है।
4. पारिवारिक सम्बन्धों में दरार पड़ जाती है। लोग एक-दूसरे का मुँह देखना पसन्द नहीं करते।
5. समय- क्रोध करना समय को बर्बाद करना है। स्वयं का व दूसरों का दोनों का ही नुकसान करना है।

क्रोध के लिए कहा है- **क्रोधः शमसु-खार्गला।** क्रोध आत्मा के शम-प्रशम-उपशम सुख के

लिए अर्गला के समान है। सूत्रकृतांग सूत्र के प्रथम अध्ययन में कहा है-

जे कोहणे होइ जगयभासी,
विओसियं जे उ उदीरएज्जा।
अंधे व से दंडपहं गहाय,
अविओसिए घासति पावकम्मी।।

भावार्थः- हे गौतम! जिसने बात-बात पर क्रोध करने का स्वभाव बना रखा है- वह जगत के जीवों में अपने कर्मों से लूलापन, अंधापन, बधिरता आदि न्यूनताओं को अपनी जिह्वा के द्वारा सामने रख देता है, और जो कलह उपशांत हो रहा हो, उसको पुनः चेतन कर देता है। जैसे अन्धा मनुष्य लकड़ी को लेकर चलते समय मार्ग में पशुओं आदि से कष्ट पाता है, ऐसे ही वह महा क्रोधी चतुर्गति रूप में अनेक प्रकार के जन्म-मरणों का दुःख उठाता रहता है।

उत्तराध्ययन सूत्र (9.54) में कहा है-**'अहे वयंति कोहेणं।'** क्रोध से जीव नरक तिर्यंच आदि अधोगति को प्राप्त करता है। उभयलोक को बिगाड़ने वाला यह क्रोध है। क्रोधी मरकर नरक में जाता है- यह आगे की बात है, पर क्रोधी जहाँ रहता है वहाँ नरक पैदा कर देता है। क्रोध के स्वभाव वाले व्यक्ति को कोई पसन्द नहीं करता, क्योंकि वह शान्त वातावरण को विष घोलकर उसे अशान्त बना देता है।

संक्षेप में कहें तो क्रोध, तन-मन-चेतन के लिए अहितकर है। व्यावहारिक व आध्यात्मिक दोनों दृष्टियों से त्याज्य है। मनोवैज्ञानिक भी कहते हैं- साढ़े नौ घण्टे के शारीरिक श्रम से जितनी शक्ति क्षीण होती है, पन्द्रह मिनट के क्रोध से उतनी ही शक्ति क्षीण हो जाती है। क्रोध मन को अशान्त, दिग्भ्रान्त बना देता है। क्रोध से व्यक्ति दुर्गति का मेहमान बन जाता है। कभी अत्यधिक क्रोध में आकर व्यक्ति आत्महत्या भी कर लेता है। क्रोध में आकर व्यक्ति परिवारजनों से दूर चला जाता है। क्रोध के कारण पुत्र, माता-पिता से अलग रहने लग जाता है। क्रोध में आकर कभी परिजनों की घात कर बैठता है। गुरुदेव फरमाते हैं- "दाल में बाल, पत्नी का काल।" दाल में बाल आने पर गुस्से में आकर पति ने कोर वाली थाली फैंकी, वह पत्नी के मर्म स्थल पर जाकर लगी, जिससे उसकी मृत्यु हो गई। दूसरी घटना में नन्हें नादान बालक द्वारा कड़ी मेहनत मजदूरी से कमाये रुपये चूल्हें में डाल दिये जाने पर मजदूर पिता ने उसे क्रोधावेश में चूल्हे में डाल दिया- जिससे वह मर गया। जिस बालक को बड़ी मनौतियों से प्राप्त किया था- वह गुस्से के क्षणिक आवेश में गंवा दिया गया। बाद में सिवाय पश्चात्ताप के कुछ हाथ नहीं लगता।

क्रोधी व्यक्ति घर, परिवार, समाज सर्वतः अनादर का ही पात्र बनता है। कभी गुणी या विद्वान व्यक्ति भी क्रोध के कारण प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं कर पाता। जैसे सर्प के पास मणि है, पर ज़हर के कारण लोग उससे दूर ही रहते हैं।

तन के रोगों का कारण भी मन का रोग है। वर्तमान विज्ञान भी इसकी पुष्टि प्रदान कर रहा है। क्रोध से कैंसर, डिप्रेशन (मानसिक तनाव), ब्लडप्रेशर जैसे रोग उत्पन्न हो जाते हैं। मन्दाग्नि आदि पेट की अनेक बीमारियों का कारण भी क्रोध बनता है। अत्यधिक क्रोध के कारण नींद की कमी, आधा शीशी (माथे का दर्द) आदि पैदा हो जाते हैं। बार-बार क्रोध करने से स्मरण-शक्ति कमजोर हो जाती है। यह क्रोध समस्त अनर्थों की मजबूत जड़ के समान है। समस्त कल्याणों का विनाशक है। संयम-साधना रूपी उद्यान को भस्म करने के लिए दावानल की ज्वाला जैसा भयंकर है। समतारूपी मेघ घटाओं को विक्षिप्त करने के लिए यह क्रोध प्रचण्ड पवन के जैसा है। शांतिरूपी चन्द्र मण्डल को डसने के लिए राहु जैसा सकल सद्गुण रूपी कमलवन को दग्ध करने के लिए हिमपात (पाला रूपी विनाशक) के सदृश है।

ऐसे दुष्ट क्रोध से दूर रहकर हम इससे होने वाले दुष्परिणामों से बचें। इस क्रोध से बचने पर ही इहलोक-परलोक सुधरता है।

क्रोधोत्पत्ति के कारण

कारण के बिना क्रिया नहीं होती। क्रोध के अनेक कारण हैं। प्रमुख कारण मिथ्यात्व है। मिथ्यात्व के कारण ही क्रोध हेय नहीं उपादेय लगता है। मिथ्यात्व के कारण ही क्रोध आदि कषायों में आत्मभाव (जीव के साथ एकरूपता) भासित होता है, अनात्म नहीं लगता। अनात्म लगने पर ही वे छूटते हैं। मिथ्यात्व के छूटने के साथ ही अनन्तानुबंधी क्रोध (कषाय) तो छूट जाते हैं, किन्तु आगे के तीन कषाय चौक वाले क्रोध को छोड़ने में सजगता अपेक्षित है। कर्म का उदय भी क्रोध-उत्पत्ति का कारण है। पूर्व में बंधे हुए कर्म अपना फलदान करके आत्मा से अलग होना चाहते हैं। परन्तु जीव प्रमादवश नवीन कर्मोपार्जन कर लेता है।

स्थानांग सूत्र के चतुर्थ स्थान में क्रोध उत्पत्ति के चार कारण बताये हैं- 1. क्षेत्र (खेत), 2. वास्तु (घर), 3. शरीर, 4. उपधि। खेत, घर, शरीर और उपधि इनमें किसी के द्वारा क्षति पहुँचाये जाने अथवा इनको छीनने की कोशिश करने पर व्यक्ति को क्रोध उत्पन्न होता है। व्यक्ति का इनमें ममत्व रहता है और वह ममता ही क्रोध पैदा करती है।

इसी चतुर्थ स्थान में क्रोध को चतुःप्रतिष्ठित बताया है- 1. आत्मप्रतिष्ठित, 2. पर-प्रतिष्ठित, 3. तदुभय प्रतिष्ठित और 4. अप्रतिष्ठित।

1. **आत्मप्रतिष्ठितः-** अपनी ही गलती से संकट उत्पन्न होने पर ऊपर ही ऊपर क्रोध करना। जैसे- रास्ते चलते पत्थर से ठोकर लगने पर अपने ही ऊपर क्रोध करना।
2. **पर-प्रतिष्ठितः-** दूसरे के निमित्त से क्रोध उत्पन्न होना अर्थात् दूसरे के द्वारा भूल किये जाने पर उसके ऊपर क्रोध करना। जैसे- किसी के द्वारा चोट पहुँचाए जाने पर उस पर क्रोध करना अथवा दूसरे पर क्रोध करना (यह भी इसका अर्थ है)
3. **तदुभय प्रतिष्ठितः-** स्व और पर के निमित्त से उत्पन्न क्रोध उभय विषयक क्रोध है। जैसे किसी कार्य में स्वयं की एवं दूसरे की दोनों की भूल होना।
4. **अप्रतिष्ठितः-** बाह्य निमित्त के बिना भी क्रोध कषाय के विषय से उत्पन्न होने वाला क्रोध, जो जीव प्रतिष्ठित होने पर भी आत्मप्रतिष्ठित आदि नहीं होने से अप्रतिष्ठित कहलाता है।

स्थानांग सूत्र के दशम स्थान में दश कारणों से क्रोधोत्पत्ति बताई है-

1. किसी व्यक्ति के द्वारा मनोज्ञ शब्दादि का अपहरण किए जाने पर।
2. किसी के द्वारा अमनोज्ञ शब्दादि विषय प्राप्त करने पर।
3. वर्तमान में मनोज्ञ शब्दादि का अपहरण करने पर।
4. वर्तमान में कोई अमनोज्ञ शब्दादि विषयों को प्राप्त कराता है तब।
5. भविष्य में कोई मनोज्ञ शब्दादि विषयों का अपहरण करेगा इस भय से।
6. भविष्य में कोई अमनोज्ञ शब्दादि विषय प्राप्त करायेगा इस भय से।
7. किसी पुरुष ने मनोज्ञ शब्दादि विषयों का अपहरण किया था, वर्तमान में करता है और भविष्य में अपहरण करेगा इस शंका से।
8. किसी पुरुष ने अमनोज्ञ शब्दादि विषय प्राप्त कराए थे, वर्तमान में करा रहा है और भविष्य में करायेगा, ऐसे विचार से।
9. किसी पुरुष ने मनोज्ञ शब्दादि विषयों का अपहरण किया है, करता है और करेगा तथा अमनोज्ञ शब्दादि विषय प्राप्त कराए है, कराता है और करायेगा इस कारण से।
10. मैं आचार्य और उपाध्याय के प्रति सम्यक्-व्यवहार करता हूँ परन्तु आचार्य और उपाध्याय मेरे साथ प्रतिकूल व्यवहार करते हैं। इस भाव से भी क्रोध पैदा होता है।

श्रीमद् भगवद् गीता में कहा है- **'कामात्क्रोधोऽभिजायते'।** (2.62) कामना से क्रोध की उत्पत्ति होती है। क्रोधोत्पत्ति का प्रमुख कारण तो स्वयं का उपादान है, क्रोध-मोहनीय का उदय है। उस

उदय में निमित्त अनेक कारण हैं, जिन्हें व्यावहारिक कारण भी कह सकते हैं। कतिपय व्यावहारिक कारण इस प्रकार हैं:-

1. अपेक्षा रखने से, उसकी अपेक्षा पूरी न होने से, उसमें बाधा उपस्थित होने से क्रोध आता है।
2. अहंकार पर चोट पड़ने से क्रोध उत्पन्न होता है।
3. किसी के द्वारा उपेक्षा करने से, तिरस्कार करने से।
4. कटुवचनों को नहीं सहने से।
5. तबीयत ठीक नहीं रहने से व्यक्ति चिड़चिड़ा होकर क्रोधी बन जाता है।
6. तेज मिर्च मसाले खाने से।
7. दूसरों के दोष-देखने से रोष आता है।
8. स्वार्थपूर्ति में बाधा आने पर।
9. भ्रम के कारण जैसे सुनार को मैतार्यमुनि पर क्रोध उत्पन्न हुआ।
10. विचार भेद या रुचिभेद के कारण भी क्रोध उत्पन्न होता है। जैसे- पिता-पुत्र में, सास-बहू में, भाई-भाई में, संघ में, समाज में, प्रतिष्ठान आदि में विचार भेद क्रोध का कारण बनता है।

उपचार की दो पद्धतियाँ हैं। एक तो औषधि देकर रोगी को स्वस्थ करना। दूसरी रोगोत्पत्ति के कारण को जानकर उसका निवारण करना। क्रोधोत्पत्ति के भी ममकार, अहंकार आदि कारणों को जानकार, टालकर क्रोध से बचना।

क्रोध निवारण के उपाय:

समस्याओं के साथ समाधान भी रहे हुए हैं। क्रोध है- एक अपाय, उसे जीतने के हैं अनेक उपाय। जहाँ चाह है, वहाँ राह है। संकल्प बल से साधक अपने विकारों पर विजय प्राप्त कर सकता है। शक्ति दोष की नहीं चेतना की ही अधिक होती है। बेहोशी में ही दोष पनपते हैं। जागृतिपूर्वक संकल्प करने से दोष वैसे ही पलायन कर जाते हैं, जैसे सिंह के जागृत होने पर आसपास में अठखेलियाँ करने वाले हिरण। ज्ञानपूर्वक, सजगतापूर्वक साधक कषाय-त्याग (क्रोध त्याग) का प्रत्याख्यान करे। भूल हो जाये तो प्रायश्चित्त लेकर शुद्धीकरण करके पुनः नवीन उत्साह से आगे बढ़े। क्रोध को जीतने के उपाय को दो भागों में बाँट सकते हैं- 1. आध्यात्मिक उपाय, 2. व्यावहारिक उपाय।

1. **आध्यात्मिक उपाय:-** क्षमा को धारण करना ही क्रोध को जीतने का प्रमुख उपाय है। क्षमादान ही क्रोध रूप आन्तरिक समस्याओं का, अनेक बाह्य समस्याओं का समाधान है। जगत् को सतत माफ करते रहो। स्वयं की भूल होने पर क्षमायाचना करने में नहीं कतराना चाहिए। अविलम्ब अहंकार को छोड़कर क्षमायाचना कर लेनी चाहिए।

उत्तराध्ययन सूत्र के सम्यक्त्व- पराक्रम नामक 29 वें अध्ययन के सतरहवें बोल में प्रश्न किया गया है कि-हे भगवन्! क्षमायाचना से जीव को क्या प्राप्त होता है?

भगवान ने उत्तर में फरमाया- "क्षमापना (क्षमा मांगने और प्रदान करने) से चित्त में परम प्रसन्नता उत्पन्न होती है। प्रसन्नचित्त व्यक्ति संसार के सभी प्राणियों के साथ मैत्री भाव सम्पादन कर लेता है। मैत्री भाव से राग-द्वेष का क्षय होकर, भाव विशुद्धि होती है और भाव विशुद्धि से व्यक्ति निर्भय हो जाता है।" भगवान ने इस बोल में क्षमापना से होने वाले लाभ भी बता दिये- "जिसने रखी क्षमा, वह सबके दिल में जमा।" क्षमा वाला सबके हृदय में अपना स्थान बना लेता है, सबका प्रिय पात्र बन जाता है।"

क्षमा करने वालों के अनेक उदाहरण उपलब्ध होते हैं। भगवान पार्श्वनाथ का जीव कमठ को क्षमा प्रदान करता गया और आत्माराधना में आगे बढ़ता गया। भगवान महावीर स्वामी के जीवन में साधनाकाल में कितने भयंकर कष्ट व उपसर्ग आए, पर उस महापुरुष ने सदैव क्षमा बनायी रखी। कहा है- **"क्षमया क्षीयते कर्म"** क्षमा से कर्म क्षीण होते हैं। अरिहंत भगवंत तो क्षमा करने में शूरवीर होते हैं **(खंतिसूरा अरिहंता)** जो कायर

होते हैं, क्षमा नहीं कर पाते, पर शूरवीर तो सहज क्षमा प्रदान कर देते हैं। **''क्षमा वीरस्य भूषणम्।''** क्षमा ही वीरों का आभूषण है। प्रतिकार का सामर्थ्य होते हुए भी अपकार सहन करना ही क्षमा है। (सत्यपि सामर्थ्येऽपकारसहनं क्षमा)। जिनशासन में क्षमा करने वालों के प्राचीन व अर्वाचीन अनेक उदाहरण उपलब्ध हैं। प्राचीनकालीन गजसुकुमाल मुनिराज, खंदकाचार्य के 500 शिष्य, खंदकमुनि, मैतार्य मुनि आदि, श्रावकों में परदेशी राजा आदि। अर्वाचीन में भूधरजी म.सा. आदि अनेक महापुरुष।

2. **भेद विज्ञान–** क्रोध स्वभाव नहीं, विभाव है। यह आत्मा नहीं अनात्म है। क्रोध औदयिक भाव है। जैसे- औदारिक शरीर आत्मा से पृथक् है, वैसे ही कार्मण शरीर भी आत्मा से अलग है। क्रोध कार्मण शरीर में ही रहा हुआ है। जब भी क्रोध मोहनीय का उदय हो तो उससे असंग रहकर उसका द्रष्टा बनना चाहिए। विचारना चाहिए- मैं शुद्ध आत्मा हूँ- यह क्रोध रूप अशुद्धि मेरी नहीं है। क्रोध के प्रति परायेपन का भाव आने से उसकी शक्ति मंद पड़ जाती है और वह शनैः शनैः समाप्त हो जाता है। आचारांग में आता है- जो कोहदंसी... जो क्रोध का द्रष्टा है। वही मानादि का द्रष्टा बनकर उन पर विजय मिलाने वाला बनता है।

''द्रष्टा बनकर देख, मिट ही जायेगी कर्म की रेख।'' भगवान महावीर आदि महापुरुषों ने इसी ध्यान साधना के द्वारा कर्मों का क्षय किया है।

3. **अहंकार त्याग–** अहंकार पर चोट पड़ने पर क्रोध उत्पन्न होता है। व्यक्ति को यही विचार करना चाहिए कि मैं कुछ नहीं हूँ। **"I am Nothing"** आदमी बात-बात में रखना चाहता है अपनी नाक, यही बनती है उसके लिए सबसे अधिक खतरनाक। जिसका अहंकार कम हो जाता है, उसका गुस्सा भी कम हो जाता है।

4. **ममकार त्याग–** जड़ चेतन पदार्थों में ममकार रखने से क्रोध पैदा होता है। अपने प्रियजनों का अहित आदि करने वालों पर व्यक्ति को गुस्सा आ जाता है। अपनी प्रिय वस्तु को क्षति पहुँचाने पर या उसे नष्ट करने पर व्यक्ति को गुस्सा आता है। यह राग ही द्वेष का कारण बनता है। यहाँ स्वयं को छोड़कर अपना कोई नहीं है। ऐसा विचार करना चाहिए। क्या साथ में लेकर आया था क्या साथ में लेकर जाऊँगा। इन पदार्थों के पीछे ममकार करके क्यों क्रोध करके अपनी आत्मा को भारी करूँ। ऐसे आध्यात्मिक विचारों से या तो क्रोध उत्पन्न ही नहीं होता या हो गया है तो नष्ट हो जाता है, साधक तो अपने शरीर मात्र पर भी ममकार नहीं रखते, तब ही वे क्रोध को जीत पाते हैं। उदाहरण- गजसुकुमाल जी आदि।

5. **उपशमभाव रखना–** भगवान महावीर स्वामी ने कहा है- **'उवसमेण हणे कोहं'**। अर्थात् उपशम भाव से इस क्रोध को नष्ट करें। बृहत्कल्प भाष्य में कहा है- ''जो उवसमई तस्स अत्थि आराहणा'' जो उपशम भाव रखता है उसी के आराधना होती है। 'चेतन कषाया उपशम कीजिये रे, समता रस रुच रुच पीजिये रे।'

6. **मैत्री भाव का विकास–** प्राणिमात्र में मैत्री, प्रेम, प्रीति के परिणाम रखने से क्रोध नहीं आता है। सभी जीव अपने हैं। किस पर गुस्सा करूँ? परायेपन के भाव में ही क्रोध उत्पन्न होता है। कहते हैं- राग को जीतना हो तो समझना कोई अपना नहीं है, द्वेष को जीतना हो तो सोचना सभी अपने हैं। अर्थात् जीवों पर अपनापन स्थापित होने पर क्रोध पर विजय मिलायी जा सकती है। प्राणिमात्र पर समदर्शिता ही सामायिक है और सामायिक ही मुक्ति का मूल है। सामायिक की परिभाषा में यही कहा है- समता सर्वभूतेषु....। सभी जीवों में समान भाव ही सामायिक है। कोई और नहीं, कोई गैर नहीं।

7. **धैर्य रखना–** क्रोध पर विजय मिलाने हेतु धैर्य भी एक महत्त्वपूर्ण गुण है। आचार्य हरिभद्रजी ने तो

कहा है-''जस्स धिई होई, तस्स होई सामण्णं।'' अर्थात् जिसके धैर्य होता है, उसी का श्रामण्य सफलीभूत होता है। श्रमण जीवन में पग-पग पर विपरीतताएँ आती हैं- वह धैर्य से ही उन क्षणों में समत्व रख पाता है। धैर्यवान व्यक्ति को प्रायः तत्काल गुस्सा नहीं आता है। एक दोहे में कहा है- धीरज से धोखा टले, शरीर रहे मस्त। तामस कभी न उपजे, धीरज बड़ी वस्त।'' धीरज रखने से व्यक्ति बड़े धोखे (समस्या) से बच जाता है, तन भी दुरुस्त रहता है, उसे तामस (गुस्सा) नहीं आता, इसलिए धीरज बड़ी वस्तु (चीज) है।

अंग्रेजी में किसी ने कहा- "Time, Nature and Patience are three great physicians" अर्थात् समय व्यतीत होने पर व्यक्ति अपने दुःख से उबर जाता है, प्रकृति की गोद में भी व्यक्ति दुःखों को भूल जाता है। वैसे ही धैर्यवान के भी सब दुःख दूर हो जाते हैं।

8. **दोषी उपादान है-** ज्ञानी उपादान को दोष देता है, जबकि अज्ञानी निमित्त को, जीवन में आयी हुई प्रतिकूलता का प्रमुख कारण उपादान है न कि निमित्त। अगर स्वयं का उपादान न होता तो निमित्त वैसा मिलता ही नहीं। उपादान को दोषी मानने पर व्यक्ति की समाधि सहज ही, स्वतः ही टिक जाती है, उसे दूसरे पर क्रोध नहीं आता। अपितु उसे कर्म निर्जरा में सहायक मानता है। जैसे कि गजसुकुमाल ने सोमिल को माना। **साहिज्ज दिण्णे-** यह तो कर्म काटने में सहायक बन रहा है, कर्म तो ममकृत ही हैं।

2. व्यावहारिक उपाय- कषाय विजय (क्रोध विजय) के प्रमुख उपाय तो आध्यात्मिक ही हैं। परन्तु प्रारम्भ में साधक उतनी समझ व साधना नहीं जुटा पाये तो व्यावहारिक साधनों को अपनाकर साधना में आगे बढ़ना चाहिए। अपरिपक्व अवस्था में, ये भी क्रोध-विजय में सहायक बनते हैं।

1. **स्थान त्याग-** जिस जगह, जिन लोगों के निमित्त गुस्सा आ रहा है, उस स्थान का त्याग कर देना चाहिए, उन लोगों से दूर चले जाना चाहिए ताकि कुछ समय में क्रोध उपशान्त हो सके।

2. **मौन रखना-** क्रोध के वातावरण में मौन रखना श्रेयस्कर है। बात और बाल, ये दोनों काटने से बढ़ते हैं। प्रबल क्रोध के रोग को हर सकता है कौन? इसका इलाज एक है, मन में रक्खो मौन। और भी कहा है- एक मौन सब दुःख हरे, नहीं बोले तो गुस्सा मरे। कहते हैं जब गुस्सा आए तब मुँह में प्रासुक जल रख लेने से कहना बन्द हो जायेगा और क्रोध उपशान्ति का यह तात्कालिक उपाय बन जायेगा। राई जितना वजन नहीं, दो के बिना उठे नहीं, क्या चीज है? कहते हैं लड़ाई। लड़ाई दो बिना नहीं होती, जब एक जवाब नहीं देगा तो अपने आप शांति हो जायेगी। एक ज्वाला बने तो दूसरा जल बन जाओ। एक आग बने तो दूसरा पानी बन जाओ।

3. **नवकार गिनना-** जब गुस्सा आए तो मन ही मन नवकार गिनना प्रारम्भ कर देना चाहिए। महामंत्र नवकार का अपना प्रभाव है। साथ ही इससे ध्यान विकेन्द्रित हो जाता है। इसी तरह गिनती भी गिन सकते हैं।

4. **दर्पण देखना-** क्रोध में व्यक्ति की आँखें लाल हो जाती हैं, भौंहे तन जाती हैं, चेहरा बदसूरत हो जाता है। दर्पण में व्यक्ति अपनी यह दशा देखेगा तो उसका गुस्सा कम पड़ जायेगा।

5. **शारीरिक मुद्रा परिवर्तन-** गुस्सा आने पर बैठ जाओ या लेट जाओ। इससे भी गुस्सा कम पड़ सकता है।

6. **सकारात्मक सोच-** इसने गाली ही तो दी है, पिटाई तो नहीं की। गालियों से गूमड़े नहीं होते हैं। किसी से टाइम पूछा। उसने सिर पर डण्डा देकर कहा- एक बजा है। पूछने वाला खुशी से नाचने लगा। लोगों ने पूछा- नाच क्यों रहा है? उसने

कहा एक घण्टे पहले नहीं पूछा।

7. **विचारशीलता**– सामने वाला मेरी गलती बता रहा है। मुझमें वह गलती है तो निकाल दूँ, नहीं है तो बुरा मानने का कोई कारण है ही नहीं?
8. **सहनशीलता**– जिसे सहना आ गया, उसे रहना आ गया, हँसते-हँसते सहना चाहिए। सहने से स्वयं के भीतर व वातावरण में शांति रहती है, कर्म नहीं बंधते।
9. **चन्द्रदर्शन**– मस्तिष्क में पूर्णिमा के चन्द्रमा का ध्यान करना चाहिए। पूर्णिमा हो तब कुछ समय एकटक चन्द्रमा को देखना चाहिए। इससे मस्तिष्क में शीतलता का संचार होता है।
10. **जप**– चन्द्र प्रभु भगवान का जप करना चाहिए। 'चन्द्रप्रभुनाथाय नमः'।
11. **भावना देना**– प्रातःकाल ब्रह्ममुहूर्त्त में अपने आपको भावना देना- मेरा क्रोध उपशान्त हो रहा है। मैं क्षमाशील हो रहा हूँ। प्रभु की, गुरुदेव की अनन्त कृपा बरस रही है।
12. **पूर्व तैयारी**– क्रोध आने से पूर्व ही मानसिक तैयारी रखना कि मुझे क्रोध नहीं करना है।
13. **निमित्तों से दूरी**– जिन निमित्तों से क्रोध आता है, हो सके वहाँ तक उनसे दूर रहना।
14. **भूल जाना**– दूसरों की गलतियों को मस्तिष्क में संचय **(Store)** करके नहीं रखना। भूल जाना चाहिए। जो भूल सकता है, वह सबके साथ मिल सकता है, जो सबके साथ मिल सकता है वह भगवान बन सकता है। तत्काल समाधान करने का लक्ष्य रखना। गन्दगीं को लम्बे समय तक इकट्ठी रखने से सड़ान्ध बढ़ने वाली है। ऐसे समझकर बिना विलम्ब किये समाधान कर लें और उसे भूल जाएं। पुरानी अप्रिय बातें याद नहीं रखें।
15. **दृष्टान्त याद रखें**– जिन महापुरुषों ने क्रोध को जीता उन्हें सदैव स्मृति में रखें। क्रोध आने पर उन आदर्श पुरुषों को स्मृति पटल पर ले आएँ। इससे क्रोध को जीतने में बल मिलता है, मदद मिलती है। **अनेकान्त दृष्टिकोण, श्वास-प्रेक्षण, दीर्घ श्वास का प्रयोग- Let go यह भी बदल जायेगा** आदि भी ऐसे अनेक व्यवहारिक उपाय हो सकते हैं, जिससे क्रोध को नियन्त्रित किया जा सकता है। दशवैकालिक की एक गाथा बताकर उपसंहार करते हैं। ''अतिंतिणे अवचले- अप्पभासी मियासणे। हविज्ज उअरे दन्ते, थोवं लद्धुं न खिंसए।'' (8.29) अतिंतिणे- तिन तिन (तुन-तुन) नहीं करने वाला क्रोध पर विजय प्राप्त कर लेता है।

अचवले– चपलता क्रोध कारक है। उतावला सो बावला। हड़बड़ी से व्यक्ति गड़बड़ी कर देता है और वह उसके गुस्से का कारण बन जाता है। **Hurry, Worry, Curry** इन तीन से बचना चाहिए। जल्दबाजी, चिन्ता और तेज मिर्च-मसाले से।

अल्पभाषी– कम बोलने से गुस्से के निमित्त नहीं बनते, अतः आवश्यकतानुसार ही बोलना, अधिक नहीं।

मियासणे– मित अशन करना- अधिक आहार करने से भी क्रोध जल्दी आता है। साधक दान्त रहे। कम मिलने पर किसी की खिंसना न करे।

यह जीव आत्मार्थी बने। आराधक बनने का भाव रखे। क्रोध व्यक्ति को विराधक बना देता है। अतः हम विराधक होने से बचें। क्रोध दुर्गतिदायक है, ऐसा विचारकर क्रोध का त्याग करें। क्षमा के माहात्म्य व आनन्द को समझकर उसी का रसास्वादन करें। किसी के प्रति वैर, वैमनस्य, द्वेष, घृणा के परिणाम नहीं रखें। पेट साफ-रोग माफ, दिल साफ- कसूर माफ।।

मित्ती मे सव्व भूएसु.....।।

(क्रमशः)

कषाय का स्वरूप एवं उसके भेद-प्रभेद

श्री कन्हैयालाल लोढ़ा

कर्मबन्ध एवं संसार-परिभ्रमण का प्रमुख कारण कषाय है। कष का अर्थ है 'संसार', अतः जिससे संसार में 'आय' अर्थात् आवागमन बना रहे वह कषाय है। कषाय का अर्थ कर्षण भी है। जिससे आकर्षण (राग) एवं विकर्षण (द्वेष) हो वह कषाय है तथा जो क्रोधादि के रूप में प्रकट होता है वह कषाय है। कषाय के 1. क्रोध, 2. मान, 3. माया एवं 4. लोभ ये चार मौलिक भेद हैं, भाव हैं, परिणाम हैं। इनमें से प्रत्येक के चार-चार उपभेद हैं- 1. अनन्तानुबंधी, 2. अप्रत्याख्यान, 3. प्रत्याख्यानावरण और 4. संज्वलन। इस प्रकार कुल 16 ही भेद स्वतंत्र हैं। चित्त का कुपित, क्षुब्ध या अशान्त होना 'क्रोध कषाय' है। अपने से भिन्न पदार्थों से तादात्म्य स्थापित कर अपने को तद्रूप मानने का आचरण 'मान कषाय' है। अनित्य वस्तु आदि के प्रति ममत्व का आचरण 'माया कषाय' है। पर पदार्थों के संग्रह की लालसा 'लोभ कषाय' है। विषय भोग के सुख को ही जीवन मानकर निरन्तर भोग भोगते रहना तथा उन भोगों की पूर्ति के लिए प्रयास करते रहना उनका अंत न होने देने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहना **अनन्तानुबंधी** है। मिथ्यात्वमोहनीय एवं अनन्तानुबंधी में घनिष्ठ सम्बन्ध है। विषय-भोगों में दुःख मानते हुए भी उनका त्याग न करने का भाव **अप्रत्याख्यानावरण** है। अप्रत्याख्यानावरण एक प्रकार से भोगों की दासता है। संयम को शान्ति, स्वाधीनता, चिन्मयता आदि के लिए आवश्यक मानकर तथा संयम धारण करने की इच्छा होते हुए भी संयम धारण न करना **प्रत्याख्यानावरण** है। **संज्वलन** कषाय एक प्रकार से भुक्त-अभुक्त भोगों के संस्कारों की स्फुरणा है जो है जो व्यक्ति में आकुलता की आग जलती है।

वर्तमान में कुछ लोगों में ऐसी धारणा है कि अनन्तानुबंधी, अप्रत्याख्यानावरण, प्रत्याख्यानावरण तथा संज्वलन एक ही कषाय की तरतम या न्यूनाधिक अवस्थाएँ हैं अर्थात् परिमाण या क्वान्टिटी में न्यूनाधिकता है, परन्तु यह मान्यता उचित नहीं लगती है। कारण कि अधिक तथा न्यून; अथवा तीव्र तथा मंद कषाय परस्पर विरोधी हैं, अतः उनका उदय एक साथ संभव नहीं है। एक ही कषाय एक ही समय अधिक भी हो, न्यून भी हो, तीव्र भी हो और मंद भी हो, यह संभव नहीं है। जबकि आगम और कर्म-सिद्धान्त में अनन्तानुबंधी क्रोध आदि कषायों के उदय के साथ नियम से संज्वलन क्रोध सहित चारों कषायों का उदय माना है। इससे स्पष्ट है कि ये परिमाण नहीं, अपितु परिणाम (भाव) या क्वालिटी हैं। प्रत्येक कषाय में अनुभाग (रस) की तरतमता द्विस्थानिक, त्रिस्थानिक, चतुःस्थानिक तथा इनके अनन्त भेद के रूप में कही गई है। अतः अनन्तानुबंधी क्रोध कषाय में क्रोध उग्र हो और संज्वलन क्रोध में क्रोध नगण्यवत् हो, ऐसा नहीं है। कारण कि प्रथम तो दोनों का उदय एक साथ है। दूसरा, मिथ्यात्वी जीव के एक समय मात्र भी ऐसा नहीं होता कि अनन्तानुबंधी कषाय का उदय न हो। तीसरा, नवग्रैवेयक देवों में मिथ्यात्वी देव के शुक्ललेश्या होने पर भी अर्थात् पूर्ण शान्त भाव होने पर भी अनन्तानुबंधी कषाय का उदय निरन्तर रहता है। सब एकेन्द्रिय जीव अनन्तानुबंधी कषाय के उदय वाले हैं। उन जीवों के एक सागर की स्थिति वाला तथा द्विस्थानिक अनुभाग कर्म बंधता है। जो आठवें गुणस्थानवर्ती शुक्ल लेश्या वाले साधु से भी कम है। लेश्या शुभाशुभ भावों की तरतमता की द्योतक है। इससे यह भी फलित होता है कि अनन्तानुबंधी आदि कषाय योगों की शुभता-अशुभता पर निर्भर नहीं हैं।

मन, वचन, काया की प्रवृत्ति से संबंधित नहीं हैं। इनका सम्बन्ध राग-द्वेष रूप भावों की प्रधानता से है, विषय भोगों से है। क्रोध, मान, माया, लोभ ये राग-द्वेष के, भोग के प्रवृत्तिमान रूप हैं तथा अनन्तानुबंधी, अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यानावरण तथा संज्वलन ये चार राग-द्वेष की वृत्तियाँ हैं, भाव हैं, क्वालिटी हैं, ये क्वाण्टिटी नहीं हैं।

क्रोधादि चारों कषायों एवं उनके अनन्तानुबंधी आदि प्रकारों का संक्षेप में आगे प्रतिपादन किया जा रहा है।

क्रोध कषाय

चित्त का कुपित, क्षुब्ध व अशान्त होना क्रोध है। चित्त कुपित, क्षुब्ध व अशान्त होता है- द्वेष व वैर भाव से कामना अपूर्ति से, प्रतिकूलता से, विषय-सुख में बाधा उत्पन्न होने से। विषय-सुख में जब कोई बाधक होता है तो उसके प्रति द्वेष, वैरभाव, कोप या क्रोध उत्पन्न होता है। अतः किसी का बुरा मानना, बुरा चाहना, बुरा कहना, ये सब भी क्रोध के ही रूप हैं और इन सबका कारण अपने दुःख-सुख का कारण अन्य को मानना है।

1. **अनन्तानुबंधी क्रोध-** अपने सुख में बाधा उत्पन्न होने पर चित्त का निरन्तर क्षुब्ध या अशान्त होना अनन्तानुबंधी क्रोध है। यह दूसरे को दुःख का कारण मानने की मिथ्या मान्यता के कारण होता है एवं सुख में दूसरे को बाधक मानकर व्यक्ति उससे निरन्तर वैरभाव रखता है तथा कभी क्षमा नहीं करता।
2. **अप्रत्याख्यानावरण क्रोध-** क्रोध से उत्पन्न होने वाले अशान्ति, खिन्नता, चिन्ता, तनाव, भय आदि दुःखों को जानते हुए भी सहन करते रहना, परन्तु क्रोध के त्यागने व घटाने का भाव उत्पन्न न होना अप्रत्याख्यानावरण क्रोध है।
3. **प्रत्याख्यानावरण क्रोध-** क्रोध को त्याग कर क्षमा व शान्ति धारण करने से प्रसन्नता, निश्चिन्तता, निर्भयता आदि स्वाभाविक सुखों की उपलब्धि होती है। यह जानते हुए भी क्षमा धारण न करना प्रत्याख्यानावरण क्रोध है।
4. **संज्वलन क्रोध-** क्रोध जनित कार्यों की स्मृति का उदय होने से खेद व खिन्नता की आग में जलना संज्वलन क्रोध है।

सारांश यह है कि कामना की उत्पत्ति तथा उसकी पूर्ति में बाधा पड़ना, चित्त का क्षुब्ध या अशान्त होना, कामना पूर्ति के सुखों की उपलब्धि में जीवन मानना, कामना पूर्ति के लिए सतत प्रयत्नशील रहना अनन्तानुबंधी क्रोध है। कामना उत्पत्ति के साथ जुड़े चित्त की अशान्ति, पराधीनता, जड़ता का अभाव आदि दुःखों से छूटने की भावना न होना अप्रत्याख्यानावरण क्रोध है। कामना निवृत्ति से, निष्काम भाव से मिलने वाले शान्ति, ऐश्वर्य के अक्षय सुख की उपलब्धि की भावना न होना, क्रोध का त्याग न करना प्रत्याख्यानावरण क्रोध है। कामना उत्पत्ति से राग-द्वेष की आग का प्रज्वलित रहना संज्वलन क्रोध है।

मान कषाय

वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति, अवस्था आदि अपने से भिन्न पदार्थों से तादात्म्य स्थापित कर अपने को कुछ मानना 'मान' कषाय है। देह से तद्रूप होकर अपने को देही मानना, देह जनित अवस्थाएँ बचपन, यौवन, बुढ़ापा, रोग, आरोग्य, काला, गोरा आदि अवस्थाओं से तद्रूप होकर अपने को बालक, युवा, वृद्ध, रोगी, नीरोग, काला, गोरा, सुंदर, कुरूप आदि मानना, धन से तद्रूप होकर अपने को धनी मानना, विद्या से तद्रूप होकर अपने को विद्वान् मानना अर्थात् अपने को अपने से भिन्न से तद्रूप होकर कुछ मानना अपना मूल्यांकन करना 'मान' है। मान ही मद के रूप में प्रकट होता है। मद मान का क्रियात्मक रूप है।

5. **अनन्तानुबंधी मान-** देह, धन, बल, बुद्धि, विद्या आदि की उपलब्धि को ही अपना जीवन मानना, इन्हें अनन्तकाल तक बनाये रखने की अभिलाषा

रखना, इनका अंत न हो जाय, इसके लिए प्रयत्नशील रहना, अपने अहं को, व्यक्तित्व को अनन्त काल तक बनाये रखने के लिए निरन्तर तत्पर रहना, मरने के बाद भी मेरा नाम अमर रहे, इसके लिए प्रयास करना अनन्तानुबंधी मान है।

6. **अप्रत्याख्यानावरण मान–** मान या मद के कारण उत्पन्न महत्ता, दीनता, गर्व, जड़ता, पराधीनता, हृदय की कठोरता आदि दुःखों की उपेक्षा करना, उन्हें दूर करने का प्रयत्न न करना, मान कषाय को न रोकना उसका परिमाण न करना अप्रत्याख्यानावरण मान है।
7. **प्रत्याख्यानावरण मान–** मान के त्याग से होने वाले मृदुता, हृदय की कोमलता, विनम्रता आदि दिव्य गुणों से होने वाले सुखों की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील न होना, सजग न होना, मान या मद का त्याग न करना प्रत्याख्यानावरण मान कषाय है।
8. **संज्वलन मान–** मान की उत्पत्ति से दीनता और अभिमान की अग्नि में जलना संज्वलन मान है।

माया कषाय

मुझे स्वाधीनता चाहिए- इस स्वाभाविक ज्ञान, निजज्ञान, विवेक के विपरीत आचरण करना माया है। ममता इसका क्रियात्मक रूप है। देह, इन्द्रिय, वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति, धन, संपत्ति आदि जो सदा साथ नहीं देने वाले हैं, जो एक दिन अवश्य धोखा देने वाले हैं, इन्हें अपना मानना धोखा है, माया है।

9. **अनन्तानुबंधी माया–** वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति, परिवार, धन, संपत्ति, समाज, संप्रदाय आदि नश्वर एवं पौद्गलिक पदार्थों को सदा अपना मानते रहना, ये सब मेरे बने रहें, मेरे से जुड़े रहें, अनन्तकाल तक इनका वियोग कभी न हो पावे, इसके लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहना अनन्तानुबंधी माया है।
10. **अप्रत्याख्यानावरण माया–** जहाँ माया या ममता है, वहाँ पराधीनता है। पराधीनता भयंकर दुःख है। इस दुःख से छूटने की अभिलाषा (भावना) उत्पन्न न होना, अर्थात् ममता को बढ़ाने से अपने को न रोकना, इसको न घटाना या परिमाण न करना अप्रत्याख्यानावरण माया है।
11. **प्रत्याख्यानावरण माया–** ममता के त्याग से स्वाधीनता, सरलता, सरसता आदि दिव्य गुणों के सुखों की उपलब्धि होती है। उन सुखों के पाने की अभिलाषा न होना अर्थात् ममता का त्याग न करना प्रत्याख्यानावरण माया है।
12. **संज्वलन माया–** माया व ममता की रुचि, उत्पत्ति व स्मृति से पराधीनता, विवशता की ज्वाला में जलना संज्वलन माया है।

लोभ कषाय

विषय सुख के प्रलोभन के वशीभूत हो सुख की सामग्री जुटाने की प्रवृत्ति लोभ है। तृष्णा इसका क्रियात्मक रूप है।

13. **अनन्तानुबंधी लोभ–** विषय सुख को जीवन मानकर सुख की सामग्री जुटाने एवं उसे सदैव बनाये रखने में अपने को सदैव रत रखना, अनन्तानुबंधी लोभ है।
14. **अप्रत्याख्यानावरण लोभ–** लोभ से, तृष्णा से होने वाले अभाव, अतृप्ति, असंतोष आदि दुःखों से मुक्त होने की भावना न होना, अधिकाधिक संग्रह करने के लिए प्रयत्नशील होना, इच्छाओं को घटाने का व इनको सीमित व परिमित करने का प्रयत्न न करना, अप्रत्याख्यानावरण लोभ है।
15. **प्रत्याख्यानावरण लोभ–** लोभ के त्याग से मिलने वाले संतोष, शान्ति, ऐश्वर्य आदि दिव्य गुणों की प्राप्ति के लिए प्रयत्न न करना अर्थात् लोभ का त्याग न करना प्रत्याख्यानावरण लोभ है।
16. **संज्वलन लोभ–** लोभ की रुचि-उत्पत्ति से होने वाले अभाव, अतृप्ति, दरिद्रता के अनुभव की आग में जलना संज्वलन लोभ है।

सारांश यह है कि भोगों की उपलब्धि में ही जीवन है, सुख है, भोग स्थायी रूप से रहने वाले हैं, यह

मान्यता ही मिथ्यात्व है। भोगों का अंत कभी नहीं हो, इसके लिए सतत प्रयत्नशील रहना अनन्तानुबंधी कषाय है। विषय-भोगों की ओर सम्मुख होना, उनकी वृद्धि करने का प्रयत्न करना अप्रत्याख्यानावरण कषाय है, विषय भोगों के त्याग की भावना न होना प्रत्याख्यानावरण कषाय है। विषय सुखों के विकारों की स्फुरणा से जलते रहना संज्वलन कषाय है।

इसके विपरीत यह यथार्थ बोध होना कि विषय-सुख क्षणिक है, यह सुख नहीं होकर सुखाभास है; विषय-सुख की सामग्री सड़न-गलन, विध्वंसन वाली होने से अशुचिमय एवं नश्वर है, पराधीनता में आबद्ध करने वाली है तथा विषय-सुख अभाव, तनाव, दबाव, हीनभाव, भय, चिन्ता, द्वन्द्व आदि भयंकर दुःखों का हेतु है, दुःखद होने से विषय-सुख त्याज्य है, मुझे स्वाधीन होना है, जो स्वरूप से स्व-भाव में स्थित होने से ही संभव है, ऐसा लक्ष्य बनाना सम्यग्दर्शन है। विषय भोग के सुख की नश्वरता को अवश्यम्भावी जानकर उसमें जीवन नहीं है, यह बुद्धि रखना, स्वाधीनता में ही, स्वरूपरमणता में ही जीवन है इसके लिए प्रयास करना अनन्तानुबंधी का क्षय या उपशम है। विषय-सुखों को समस्त दुःखों का मूल जानकर उनसे विमुख होना अर्थात् उनका बढ़ाना रोककर उन्हें घटाने का प्रयत्न, पुरुषार्थ या पराक्रम करना- अप्रत्याख्यानावरण कषाय का उपशम व क्षय है। संयम में ही शान्ति, स्वाधीनता का अक्षय-अखंड सुख है। इस सुख से प्रभावित होकर विषय-भोगों की दासता का त्याग करना, संयम धारण करना, इन्द्रिय व मन को भोगों से हटाना प्रत्याख्यानावरण कषाय का क्षय या उपशम है। पहले के भोगे हुए विषय भोगों के संस्कारों के उदय में आने से चित्त का क्षुब्ध होना, चंचल होना, संज्वलन कषाय है। इसका उदय न होना संज्वलन कषाय का उपशम है और कषाय के प्रभाव के सर्वथा नष्ट हो जाने से संज्वलन कषाय का क्षय हो जाता है। इस अवस्था में कुछ क्षण टिकने के पश्चात् पूर्ण चैतन्य का सदा के लिए अनुभव हो जाता है। फिर जानना, पाना, करना कुछ भी शेष नहीं रह जाता है। जानना शेष न रहने से अनन्तज्ञान, चैतन्य का पूर्ण अनुभव हो जाने से अथवा निर्विकल्प-बोध हो जाने से अनन्तदर्शन, साध्य की उपलब्धि होने से वस्तु, व्यक्ति, भोगों की इच्छा, कामना, ममता, तादात्म्य व कर्तृत्व भाव का सर्वथा नाश हो जाने से पाना व करना शेष न रहने से क्षायिक चारित्र की अभिव्यक्ति होती है।

बनें कषाय विजेता

श्री तरुण बोहरा

करें मौन से क्रोध का विरोध,
नहीं होगा लक्ष्य में अवरोध।
धैर्य व क्षमा के विरल गुणों से,
होगा निजस्वरूप का बोध।।1।।
यह मान का भीषण तूफान,
कभी नहीं बनने देगा भगवान।
करेंगे विनय धर्म से बहुमान,
तो ही मिलेगा मुक्ति वरदान।।2।।
यह माया की काली छाया,
कोई विरला ही बच पाया।
सरलता की लता पर ही,
धर्म का फूल खिल पाया।।3।।
यह लोभ भी है एक महारोग,
अनन्त इच्छाओं से त्रस्त लोग।
कर धारण संतोष मुकुट को
अव्याबाध राज्य को भोग।।4।।
कषायों का सुलगता दावानल,
बुझा देगा उसे ममता का जल।
कषाय विजेता की भक्ति से ही,
है 'तीर्थ' की शक्ति अविचल।।5।।

-राष्ट्रीय मंत्री,
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ,
जोधपुर (राज.)

मित्र जीवाणु के कार्य

श्री पी. शिखरमल सुराणा

1. जीवाणुओं के रहने से हमें तीन बड़े फायदे हैं- ये भोजन को पचाने में बहुत बड़ी भूमिका निभाते हैं। भोजन में मौजूद कई तरह के जटिल रसों को ये सरल और सुपाच्य बनाते हैं। ये आंतों के भीतर भोजन को गला कर सोखने के लिए कई तरह के रसायन बनाते हैं।
2. हमारी आंत में रहने वाले एक बेहद कामयाब बैक्टीरिया को ई. कोलाइ कहते हैं। मनुष्य ही नहीं, ई. कोलाइ हर गर्म खून वाले प्राणी की आंत में बसता है और इसके सौ से अधिक प्रकार हैं। इनमें से कुछेक ही हैं जो मनुष्य को बीमार कर सकते हैं। ज्यादातर या तो कोई नुकसान नहीं पहुँचाते या लाभकारी होते हैं। ई. कोलाइ 'के-2' नाम का एक खास विटामिन बनाने का काम करता है। यह विटामिन हमारे शरीर के लिए जरूरी है, खासकर खून और हड्डी के स्वास्थ्य के लिए। यह बैक्टीरिया 'के-2' विटामिन को तैयार करता है और आंतों द्वारा सोखने लायक भी बनाता है।
3. जब किसी रोगाणु को मारने के लिए हम एंटीबायोटिक दवाएँ लेते हैं तो पाचन और स्वाद, दोनों बिगड़ जाते हैं। ऐसा इसलिए कि ये दवाएँ रोगाणुओं को मारें या न मारें, हमारे मित्र जीवाणुओं को तो जरूर ही मार देती हैं। जब तक ये सूक्ष्म मित्र हमारे शरीर में लौट न आएं, खाना पचाना तो कठिन होता ही है, मुँह में जायका भी नहीं रह जाता।
4. वैज्ञानिकों ने पाया है कि एंटीबायोटिक लेने के बाद शरीर में ई. कोलाइ के साथ ही विटामिन 'के-2' भी कम होने लगता है। एक रोग की दवाई एक और बीमारी का कारण बन जाती है।
5. हमारा मोटा होना या न होना भी हमारे पेट में रहने वाले जीवाणुओं पर निर्भर होता है। ऐसे लोग कभी-कभी मिलते हैं जो बहुत ज्यादा खाते हैं लेकिन दुबले ही रहते हैं। और ऐसे भी जिनका भोजन बहुत ज्यादा नहीं होता पर शरीर भारी होता है।
6. मधुमेह रोग में भी जीवाणुओं के संतुलन बिगड़ने के प्राथमिक प्रमाण मिले हैं। हमारे चित्त पर, आनन्द-अवसाद में तो जीवाणुओं का दखल होता ही है, हमारे विवेक पर भी उनका प्रभाव रहता है।
7. हमारे पेट में रहने वाला एक बैक्टीरिया हेलिकोबैक्टर पाइलोरी पेट के लिए अनुकूल होता है। यह बैक्टीरिया पेट के तेजाब को काबू में रखता है और पेट के बारीक रसायन को संतुलित भी रखता है। दवाओं से इसे खत्म करने के बाद पेट के तेजाब से जुड़े ऐसे रोग बढ़ने लगे हैं, जिनके बिगड़ने से भोजन नली मे कैंसर हो सकता है। इस प्रकार एक तरह के रोग कम करने की कोशिश से एक अन्य तरह के रोग को बढ़ावा मिला है। दवाओं पर खर्च अलग।
8. किसी एक इलाके में रहने वाले के पेट में जीवाणु एक तरह के होते हैं, किसी दूसरी जगह रहने वालों के पेट में दूसरे तरह के होते हैं। इसका सम्बन्ध खान-पान और मिट्टी-पानी से माना जाता है।
9. जिस तरह का भोजन एक जगह खाया जाता है, उसे पचाने वाले जीवाणु भी कहीं-कहीं खास होते हैं। इसलिए किसी नई जगह के भोजन-पानी के साथ संतुलन बैठाने में समय लगे तो क्या आश्चर्य है।

(सोपान जोशी कृत 'जल,थल,मल' पुस्तक से साभार)

-राष्ट्रीय अध्यक्ष, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर (राज.)

आगम-साहित्य में कषाय-विषयक चिन्तन

श्री सौभाग्यमल जैन

क्रोध-लोभादि विकारों के लिए जैन दर्शन में 'कषाय' शब्द का प्रयोग हुआ है। 'कषाय' शब्द साहित्य में कषैला, रंगा हुआ, गेंहुआ, क्वाथ, गोंद आदि के अर्थ में भी प्रयुक्त हुआ है।

कषाय के स्वरूप के सम्बन्ध में निम्नांकित कथन ध्यातव्य हैं-

1. 'जैन तत्त्व प्रकाश' में 'कषाय' के अनुसार जिसके परिणाम से संसार की वृद्धि होती है और जो कर्म-बन्ध का प्रधान कारण है, वह आत्मा का विभाव परिणाम 'कषाय' कहलाता है। कषाय आत्मा का सबसे प्रबल शत्रु है। जैसे पीतल के पात्र में रखे हुए दूध-दही, कषैले और विषाक्त होने के कारण फैंक देने योग्य हो जाते हैं, इसी प्रकार कषाय रूपी दुर्गुण से, आत्मा के संयम आदि गुण नष्ट हो जाते हैं।
2. मोक्षमार्ग प्रकाशक में पं. टोडरमल जी लिखते हैं- ''मोह के उदय से मिथ्यात्व एवं क्रोधादि भाव उत्पन्न होते हैं-उन सब का नाम सामान्यत: कषाय है।''
3. पन्नवणा (प्रज्ञापना) सूत्र, पद संख्या 13 एवं 14 में, कषाय का परिचय विस्तार से उपलब्ध है। चौदहवें कषाय पद की टीका में उद्धृत गाथा इस प्रकार है :-''**सुह-दुक्खसहियं कम्मखेत्तं कसंति जे जम्हा। कलुसंति जं जीवं तेण कसाय त्ति उच्चंति।।**'' अर्थात् सुख-दु:ख युक्त कर्म क्षेत्र का जो कर्षण करता है और जो जीव को कलुषित करता है, वह कषाय है।

कषाय शब्द के तीन व्युत्पत्ति लभ्य अर्थ मिलते हैं।

1. 'कष' अर्थात् संसार, उसका 'आय' अर्थात् लाभ जिससे हो, वह कषाय है।
2. 'कृष' धातु विलेखन अर्थ में है। उससे भी कृष को कष आदेश होकर 'आय' प्रत्यय लगने से 'कषाय' शब्द बनता है। जिसका अर्थ होता है, जो कर्म रूपी क्षेत्र को, सुख-दु:ख रूपी धान्य की उपज के लिए विलेखिल (कर्षण) करते हैं, जोतते हैं, वे कषाय हैं।
3. 'कलुष' धातु को 'कष' आदेश हो कर भी 'कषाय' शब्द बनता है, जिसका अर्थ होता है, जो स्वभाव शुद्ध जीव को कलुषित या कर्म-मलिन करते हैं, वे कषाय हैं। (प्रज्ञापना मलयगिरिवृत्ति)।
4. ठाणांग सूत्र, ठाणा-4 में, वृत्तिकार के शब्दों में, कषाय शब्द का अर्थ है-'**तत्र कृषन्ति विलिखन्ति कर्मक्षेत्रं सुख-दु:खफलयोग्यं कुर्वन्ति कलुषयन्ति वा जीवमिति निरुक्ति-विधिना कषाया:। अथवा कषति-हिनस्ति देहिन इति, कषं कर्मभवो वा तस्य आय लाभहेतुत्वात् कषं वा आययन्ति-गमयन्ति देहिन इति कषाया:।**' अर्थात् जिसके द्वारा सुख-दु:ख, जन्म-मरण रूप संसार की प्राप्ति हो, अथवा जो आत्मा के शुद्ध स्वभाव को मलिन एवं कलुषित करता है, उसे कषाय कहा जाता है। अथवा जीव जिससे हिंसादि पापों में प्रवृत्त हो, वह कषाय है अथवा जिससे कर्मों का बंध हो वह कषाय है। कष का अर्थ है, भव, कर्म। अतः संसार का जिससे बन्धन हो, वही कषाय है।
5. तत्त्वार्थ सूत्र में वर्णन आया है-'**सकषायत्वाज्जीव: कर्मणो योग्यान् पुद्गलानादत्ते।**' अर्थात् कषाय-युक्त होकर जीव कर्म के योग्य

पुद्गलों को ग्रहण करता है। अत: कषाय से ही कर्मों का आदान होता है।

जैनागम साहित्य में कषाय-विषयक धारणा पर्याप्त व्यापकता लिए हुए हैं। विवेचन एवं विश्लेषण के साथ-साथ, कषाय के भेद-प्रभेद एवं उनका साधक जीवन पर प्रभाव आदि का निरूपण आगमों में सन्निविष्ट है। काषायिक प्रवृत्तियाँ साधक-आत्मा को भी भव-भवांतर में रूलाने वाली हैं।

जैनागम आधारित कषाय-विषयक चिन्तन

मोहनीय कर्म के दो भेदों का उल्लेख कर्म ग्रंथ, भाग-प्रथम में उपलब्ध हैं:- 1. दर्शन मोहनीय और 2. चारित्र मोहनीय। चारित्र मोहनीय के दो प्रकार हैं- 1. कषाय मोहनीय और 2. नोकषाय मोहनीय। उसमें से 'कषाय' विषयक जो चिंतन जैनागम साहित्य में उपलब्ध है, उसी को यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है-

आचारांग सूत्र में कषाय-निरूपण

कषाय की भयंकरता:- आचारांग सूत्र, प्रथम श्रुतस्कंध, तृतीय अध्ययन, तृतीय उद्देशक की गाथा में उल्लेख है-

'कोहाइ माणं हणियाय वीरे,
लोभस्स पासे निरयं महंतं।
तम्हाय वीरे विरए वहाओ,
छिंदिज्ज सोयं लहुभूयगामी।।'

वीर पुरुष क्रोध, मान आदि का विनाश करे तथा नरक के हेतुभूत लोभ को देखे। इसलिये मोक्ष-गमन की इच्छा रखने वाले वीर पुरुष साधक को वध आदि हिंसा से निवृत हो जाना चाहिए।

कषाय त्याग का उपदेश:- आचारांग सूत्र, प्रथम श्रुत स्कंध, अध्ययन तृतीय, उद्देशक चतुर्थ में भगवान ने कथन किया है कि कषाय से कर्मो का बंध होता है और कर्म-बंध से जीव संसार में परिभ्रमण करता है। इसलिए साधक को चाहिए कि वह संसार-परिभ्रमण में सहायक, क्रोध-मान-माया-लोभ का परित्याग कर दे। जो व्यक्ति कषाय का परित्याग कर देता है, वह स्वकृत कर्म का भी भेदन कर देता है, क्योंकि कषाय कर्मबंध का कारण है। अत: कर्म क्षय करने के लिए, पहले कषाय त्याग का उपदेश दिया है- 'कोहं च माणं च मायं च लोभं च, एयं पासगस्स दंसणं, उवरयसत्थस्स पलियंतकरस्स आयाणं सगडब्भि।। 122।।'

आचारांग सूत्र, प्रथम श्रुतस्कन्ध, तृतीय अध्ययन उद्देशक-4 के सूत्र संख्या-125 में उल्लेख आया है-''**एगे विगिंचमाणे पुढो विगिंचइ, पुढोवि एगं, सड्ढीआणाए मेहावि लोगं च आणाएं अभिसमेच्चा अकुओभयं, अत्थि सत्थं परेण परं, नत्थि, असत्थं परेण परं ।।**''

आगमकार महापुरुषों ने इस सूत्र का भाव प्रकट करते हुए फरमाया कि मुनि एक अनन्तानुबंधी क्रोध का क्षय करता हुआ, दर्शन-सप्तक का भी क्षय करता है, और दर्शन सप्तक का क्षय करता हुआ एक अनन्तानुबन्धी क्रोध का क्षय कर देता है। ऐसा श्रद्धावान भगवत्प्रणीत आज्ञा के अनुसार अनुष्ठान करता हुआ, बुद्धिमान साधक, भगवान के उपदेश से लोक को जानकर, किसी भी जीव को भय न दे, क्योंकि असंयम तारतम्य वाला होता है, परन्तु संयम, उतार-चढ़ाव वाला नहीं होता।

'इह आणाकंखी पंडिए अणिहे एगमप्पाणं संपेहाए धुणे सरीरं, कसेहि अप्पाणं जरेहि अप्पाणं जहां जुन्नाइं कट्ठाइं हव्ववाहो पमत्थइ। एवं अत्तसमाहिए अणिहे, विगिंचकोहं अविकम्पमाणे।।'

इसी प्रकार अग्रांकित सूत्र संख्या-137 में भी कहा गया है- इस मनुष्य-जन्म को अल्प आयुष्क समझ कर, इसी जीवन में कषायों से होने वाले शारीरिक और मानसिक दु:खों को देख। इसके अतिरिक्त क्रोध से उत्पन्न होने वाले आगामी जन्मों के दु:खों को समझना आवश्यक कहा है, क्योंकि क्रोध के कारण ही जीव नरक आदि योनियों में भिन्न-भिन्न प्रकार के कष्टों को अनुभव करते हैं। जो क्रोधादि विकारों और पाप-कर्मो से निवृत्त हो गये हैं और निदान से रहित हैं, वे ही इच्छा

रहित कहे जाते हैं। अत: विद्वान् पुरुष कभी भी कषायाग्नि को अपने हृदय में प्रज्वलित नहीं होने दें-"**इमं निरद्धाउयं संपेहाय, दुक्खं च जाण, अदुआगमेस्सं, पुढो फासाइं च फासे लोयं च पास विकंदमाणं जे निव्वुडा पावेहिं कम्मेहिं अणियाणा ते विहाइया, तम्हा अतिविज्जे नो पडिसंजलिज्जासि, त्ति बेमि।।**"

पन्नवणा (प्रज्ञापना) सूत्र में कषाय-निरूपण- प्रज्ञापना सूत्र का, चतुर्दश पद 'कषाय-पद' है। 'कषाय' संसार की वृद्धि करने वाले, पुनर्भव के मूल को सींचने वाले तथा शुद्ध स्वभाव युक्त आत्मा को, क्रोधादि विकारों से मलिन करने वाले हैं, इसी के साथ अष्टविध कर्मों के चय, उपचय, बंध, उदीरणा, वेदना आदि के कारणभूत हैं। जीव के आत्म-प्रदेशों के साथ सम्बद्ध होने से इनका यहाँ चिन्तन किया जा रहा है।

इस पद में सर्वप्रथम कषायों के क्रोधादि चार मुख्य प्रकार बताये हैं। तत्पश्चात् बताया गया है कि ये चारों कषाय चौबीस दण्डकवर्ती जीवों में पाये जाते हैं। क्रोधादि चारों कषायों के भाजन-अभाजन की दृष्टि से चार आधार एवं क्रोधादि कषाय की उत्पत्ति के जो चार-चार कारण हैं, उनका भी समावेश किया गया है।

1. **कषाय से ही कर्मों का आदान-** दशवैकालिक सूत्र, अध्ययन-8, गाथा-40 में कहा गया है-

   "कोहो य माणो य अणिग्गहीया,
   माया य लोहो अ पवड्ढमाणा।
   चत्तारि एए कसिणा कसाया,
   सिंचंति मूलाइं, पुणभवस्स।।"

   अर्थात्-अनिगृहीत क्रोध और मान तथा प्रवर्द्धमान माया और लोभ में चारों ही क्लिष्ट-कषाय पुनर्जन्म रूप विष-वृक्ष की जड़ों का सिंचन करने वाले हैं। इस गाथा से स्पष्ट है कि चारों ही दोष संसार-वृद्धि के कारण हैं। वश में नहीं हुए क्रोध और मान तथा बढ़े हुए माया और लोभ ये चारों ही कषाय पुनर्जन्मरूपी विष वृक्ष के मूल का सिंचन करने वाले हैं। इसलिये सबसे बड़ा धर्म कृत्य यही है कि इन चारों महा दोषों को आत्मा से पृथक् कर दिया जाए।

2. **कषायों के प्रतिष्ठित स्थान की प्ररूपणा-** सूत्र संख्या 959 में नैरयिकों से वैमानिकों तक समस्त संसारी जीवों में इन चारों कषायों का सद्भाव बताया है। सूत्र संख्या 960 में उक्त चारों कषायों को चार-चार स्थानों पर प्रतिष्ठित बताया है, जो इस प्रकार है-1. आत्म प्रतिष्ठित कषाय 2 पर प्रतिष्ठित कषाय 3 उभय प्रतिष्ठित कषाय और 4 अप्रतिष्ठित कषाय।

3. **कषाय उत्पत्ति के कारणों की प्ररूपणा-** कषायों की उत्पत्ति के सूत्र संख्या 961 में प्रत्येक के चार-चार कारण बताये हैं, यथा- 1. क्षेत्र, 2. वास्तु, 3. शरीर और 4. उपधि।

4. **कषायों के भेद-प्रभेद की प्ररूपणा-** सूत्र संख्या 962-963 में 'कषाय' के मुख्य चार भेद 1. क्रोध, 2. मान, 3. माया और 4. लोभ प्ररूपित हैं। इन चारों कषायों के प्रकारान्तर से चार-चार भेद हैं- 1. अनन्तानुबंधी, 2. अप्रत्याख्यानावरणीय, 3. प्रत्याख्यानावरणीय और 4 संज्वलन।

ठाणांग सूत्र में कषाय विषयक-चिन्तन

ठाणांग सूत्र, ठाणा-चतुर्थ, प्रथम उद्देशक, सूत्र संख्या-15 में कषायों का वर्गीकरण एवं तद्विषयक विवरण प्राप्त होता है, जो इस प्रकार है-"**चत्तारि कसाया पण्णत्ता, तं जहा-कोहकसाए, माणकसाए मायाकसाए, लोहकसाए एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं।**"

कषाय चार प्रकार के कह गए हैं, जैसे-1. क्रोध कषाय, 2. मान कषाय, 3. माया कषाय और 4. लोभ कषाय। नारकियों से लेकर वैमानिक देवों तक ये चार कषाय पाये जाते हैं। वीतराग भगवान के अतिरिक्त अन्य सभी जीवों में 'कषाय' होते ही हैं।

क्रोध प्रीति एवं शान्ति का विनाशक है-उसमें

क्रूरता का निवास है। **मान** में कठोरता रहती है। यह विनय एवं नम्रता का नाशक है। **माया** में धूर्तता का निवास होता है, यह मित्रता और विश्वास दोनों का घात करती है। **लोभ** के वशीभूत जीव सभी गुणों का नाश करता है, इसमें इच्छा एवं मूर्च्छा की प्रधानता रहती है।

कषायों की उत्पत्ति के चार कारण: (ठाणांग, सूत्र 961, 1, 2, 3) क्रोधादि कषायों की उत्पत्ति के क्षेत्र, वास्तु, शरीर और उपधि, ये चार-चार कारण प्रस्तुत किये गये हैं। क्षेत्र का अर्थ खेत या जमीन होता है, परन्तु नारकों के लिए नैरयिक क्षेत्र, तिर्यंचों के लिए तिर्यक् क्षेत्र, मनुष्यों के लिए मनुष्य क्षेत्र के निमित्त एवं देवों के लिये एवं देवक्षेत्र के निमित्त से क्रोधादि कषाय की उत्पत्ति समझनी चाहिए। 'वत्थु' के दो अर्थ हैं-वास्तु और वस्तु। वास्तु का अर्थ मकान बंगला, कोठी, महल आदि और वस्तु का अर्थ है, सजीव-निर्जीव पदार्थ। महल, मकान आदि को लेकर भी क्रोधादि उमड़ते हैं। सजीव वस्तु में माता, पिता, स्त्री-पुरुष या मनुष्य तथा किसी प्राणी को लेकर, क्रोध, संघर्ष, अभिमान आदि उत्पन्न होते हैं। निर्जीव वस्तु पलंग, सोंना, चांदी, रत्न, माणक, मोती, वस्त्र, आभूषण आदि को लेकर क्रोधादि उत्पन्न होते हैं। विरूप या सचेतन-अचेतन शरीर को लेकर भी क्रोधादि उत्पन्न होते हैं। अव्यवस्थित एवं बिगड़े हुए उपकरण आदि को लेकर अथवा चोरादि के द्वारा अपहरण किये जाने पर क्रोधादि उत्पन्न होते हैं। जमीन, मकान, शरीर या अन्य साधनों को जब किसी कारण से हानि या क्षति पहुँचती है तो क्रोधादि उत्पन्न होते हैं।

कषायों के भेद-प्रभेद- स्थानांगसूत्र के सूत्र सं.962, 963 में क्रोध आदि कषायों के चार भेद करके समस्त संसारी जीवों में उनकी सत्ता तथा कषायों के प्रकारान्तर से चार प्रभेदों और समस्त संसारी जीवों में उनके सद्भाव की प्ररूपणा की गई है। उनका परिचय पूर्व विवेचित प्रज्ञापना के चिंतन में किया जा चुका है।

1. **आभोग निर्वर्तित्त (उपयोगपूर्वक उत्पन्न हुआ) क्रोध-** जब दूसरे के अपराध को जानकर और क्रोध के पुष्ट कारण का अवलम्बन लेकर तथा प्रकारान्तर से, इसे शिक्षा नहीं मिल सकती, इस प्रकार का उपयोग (विचार) करके कोई क्रोध करता है, तब वह क्रोध आभोग निर्वर्तित्त (विचार पूर्वक उत्पन्न) कहलाता है।
2. **अनाभोग निर्वर्त्तित क्रोध** (बिना उपयोग पूर्वक उत्पन्न हुआ) यों ही साधारण रूप से मोह वश, गुण-दोष की विचारणा से शून्य पराधीन हुआ जीव क्रोध करता है।
3. **उपशांत क्रोध-**जो क्रोध उदयावस्था को प्राप्त न हो, वह 'उपशान्त' कहलाता है।
4. **अनुपशांत-क्रोध-** जो क्रोध उदयावस्था को प्राप्त हो, वह 'अनुपशान्त' कहलाता है।

सूत्र संख्या 964-971 एवं संग्रहणी गाथाओं में जीवों के द्वारा अष्टविध कर्म प्रकृतियों के चयादि कारणभूत चार कषायों का निरूपण हुआ है।

भूत, वर्तमान और भविष्य-इन तीनों कालों में समुच्चय जीव तथा नारकों से लेकर वैमानिकों तक चौबीस दण्डकों के जीवों द्वारा क्रोध-मान-माया और लोभ के कारण आठ कर्म-प्रकृतियों का चय, उपचय, बंध, उदीरणा, वेदना और निर्जरा की गई है, की जाती है और की जाएगी।

चय, उपचय आदि की शास्त्रीय परिभाषा:-

1. **चय:** कषाय परिणत होकर जीव द्वारा कर्म योग्य पुद्गलों का उपादान (ग्रहण) करना।
2. **उपचय:** अपने आबाधा काल के उपरान्त ज्ञानावरणीयादि कर्म पुद्गलों के वेदन (भोगने) के लिये निषेक (कर्म पुद्गलों) की रचना।
3. **बन्ध:** कर्म पुद्गलों का आत्मप्रदेशों के साथ कार्मण शरीर में संयुक्त होना।
4. **उदीरणा-**कर्मों को उदयावलिका में लेकर आना।
5. **वेदना-**आबाधाकाल समाप्त होने पर उदीरणा करके कर्म का उपभोग करना।

6. **निर्जरा**–कर्म पुद्गलों के वेदन (भोग) के पश्चात् अकर्म रूप में हो जाना। अर्थात् कर्मो का आत्म-प्रदेश से झड़ जाना।

कषाय के चार स्तर–

1. क्रोधादि कषायों से, कर्म-प्रकृतियाँ इतनी भयंकर फलदायिनी बन जाती हैं कि उनका उदय होने पर जीव को अनंत काल तक संसार में परिभ्रमण करना पड़ता है, ऐसी कर्म प्रकृतियों को, 'अनन्तानुबंधी कषाय' कहते हैं। जीव, अनन्त दुःखों का भोक्ता इसी कषाय के कारण बनता है। इस कषाय का उदय होने पर सम्यक्त्व का घात होता है। यह अनन्तानुबंधी कषाय ही सबसे भयंकर एवं निकृष्ट माना जाता है।
2. जिस कषाय का उदय होने पर, जीव स्वल्प मात्र भी त्याग नहीं कर सकता, विरताविरतरूप श्रावक-व्रत भी धारण नहीं कर सकता, उसे 'अप्रत्याख्यान' कषाय कहते हैं। यह सम्यग्दर्शन का बाधक एवं घातक तो नहीं, किंतु विरताविरत श्रावक-व्रत का घातक एवं बाधक अवश्य है। सामान्य रूप से इस कषाय का उदय किसी भी दण्डक में रहे हुए जीव में हो सकता है।
3. जिस कषाय का उदय होने पर सर्वविरतित्व अर्थात् साधु धर्म की प्राप्ति नहीं हो सकती, उसे प्रत्याख्यानावरण कषाय कहते हैं। यह सम्यग्दर्शन और देशविरति का घातक नहीं होता।
4. जिस कषाय के उदय से वीतरागता की प्राप्ति नहीं होती, वह संज्वलन कषाय कहलाता है। यह कषाय यथाख्यात-चारित्र का बाधक है। यथा-ख्यात चारित्र के बिना, केवल ज्ञान उत्पन्न नहीं होता। संज्वलन कषाय में यदि आयु का बंध हो जाय, तो देव-गति की आयु का बंध होता है। संज्वलन कषाय के उदय काल में चारित्र अतिक्रम आदि दोषों से दूषित एवं मलिन अवश्य होता है, किंतु वह चारित्र का घात नहीं करता, किंतु यथाख्यात चारित्र का बाधक अवश्य है।

समवायांग एवं उत्तराध्ययन सूत्र के अंतर्गत कषाय-विषयक चिन्तन

'समवायांगसूत्र' के चतुःस्थानक में क्रोधादि चार कषायों का उल्लेख है। व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र शतक12, उद्देशक 5 में क्रोध, मान, माया एवं लोभ के पर्यायवाची शब्द दिए गए हैं।[1]

1. उत्तराध्ययनसूत्र अध्ययन 9 की गाथा-54 में कहा गया है- **'अहे वयइ कोहेणं, माणेणं अहमा गई। माया गई पडिग्घाओ, लोहाओ दुहओ भयं।'** अर्थात् क्रोध से आत्मा नीचे गिरती है, मान से आत्मा अधम गति प्राप्त करती है, माया करने से सद्गति का मार्ग अवरुद्ध हो जाता है, लोभ से इहलोक और परलोक दोनों में ही भय और कष्ट की प्राप्ति होती है।
2. उत्तराध्ययनसूत्र, अध्ययन-23 की गाथा 53-54 में, कषायों को अग्नि से उपमित कर, गौतम स्वामी ने केशी श्रमण से कहा- ''मुनिवर! कषायों को अग्नि कहा गया है, और श्रुत, शील एवं तप को जल। श्रुत की शीतल जलधारा के वेगपूर्ण प्रवाह के प्रपात से शान्त अथवा नष्ट हुई अग्नियां मुझे किंचित्मात्र भी नहीं जला पाती। गौतम स्वामी का अभिप्राय यह है कि कषाय-चतुष्टय रूप अग्नियां, आत्मा के शान्ति, संतोष, नम्रता, विनय, प्रीति, मित्रता आदि गुणों को निरन्तर जलाती हैं- शोषण करती हैं। तीर्थंकर देव महा मेघ के समान हैं। जैसे मेघ से शुद्ध जल उत्पन्न होता है, उसी प्रकार तीर्थंकर भगवान के पावन मुखारविन्द से, श्रुत रूप उत्तम जल प्रकट होता है, जो 'आगम' के नाम से प्रसिद्ध है। कषायाग्नि को शान्त करने के लिए निर्ग्रन्थ प्रवचन रूप महास्रोत से उत्पन्न, श्रुतज्ञान, शील और तप रूप निर्मल जल धारा का उपयोग करना चाहिए।

कसाया अग्गिणो वुत्ता, सुय-सीलतवो जलं। सुय-

धाराभिहया सन्ता भिन्ना हु न डहंति मे।।53।।
आक्रोश, वध, ताड़न, तर्जन, धर्म-भ्रंश और अलाभ आदि परीषहों के निमित्त मिलने पर कषा-याग्नियों के प्रचण्ड होने की संभावना है, जबकि श्रुतधारा रूप आगम के सम्यक् उपदेश से जब वे शान्त कर दी जाती हैं, तब इनका मेरी आत्मा पर या आत्म-गुणों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

3. **उत्तराध्ययन सूत्र, अध्ययन-29 'सम्यक्त्व पराक्रम'**- सम्यक्त्व पराक्रम अध्ययन में 73 प्रश्नों का समावेश है, जिन्हें ज्ञानीजनों ने, 73 अध्यात्म-सूत्रों के नाम से उपमित किया है। आत्मार्थी साधक के लिए ये सूत्र अतीव प्रेरक हैं। सूत्र संख्या 68 से 81 तक कषाय-चतुष्टय-विजय' की चतु: सूत्री है। इसमें क्रोध-कषाय का प्रथम स्थान है। यहाँ संक्षेप में, कषाय-विजय की, फल-श्रुति का विवेचन किया जा रहा है- 1. क्रोध पर विजय पाने से जीव, क्षमा-भाव को प्राप्त करता है-फिर वह क्रोध-वेदनीय कर्म का बंध नहीं करता, और पहले बंधे हुए इस कर्म की निर्जरा कर लेता है। 2. मान-विजय से जीव को मृदुता प्राप्त होती है, फिर वह मान-वेदनीय कर्म का बंध नहीं करता, पहले बंधे हुए कर्म की निर्जरा कर लेता है। 3. माया पर विजय पाने से जीव, आर्जव, सरलता को प्राप्त करता है-फिर वह 'माया-वेदनीय' कर्म को नहीं बांधता और पहले बंधा हुआ हो तो उसकी निर्जरा कर लेता है। 4. लोभ-विजय से जीव को संतोष-गुण प्राप्त होता है। फिर वह लोभ-वेदनीय कर्म को नहीं बांधता और पूर्व में बंधे हुए इस कर्म की निर्जरा करता है। सारांश यह है कि कषाय चतुष्टय में क्रोध, मान, माया और लोभ, ये चार कषाय हैं। क्रोध-मोहनीय कर्म के उदय से होने वाला जीव का प्रज्वलात्मक परिणाम-विशेष है। इसी प्रकार मान, माया, लोभ को भी जानना है। क्रोधादि कषायों का परिणाम बहुत ही भंयकर, दु:खद और पश्चात्तापजनक होता है। क्रोधादि के स्वरूप पर विचार करने से जीव, क्रोधादि चारों कषायों पर विजय प्राप्त कर कर्म बंधन के कारणों को समाप्त कर ऊर्ध्वमुखी बन जाता है।

जैन आगम साहित्य में दशवैकालिक सूत्र को मूल सूत्रों में द्वितीय स्थान प्राप्त है। इस आगम-सूत्र के चतुर्थ अध्याय-छज्जीवणिया (षट्जीव निकाय) के द्वितीय महाव्रत की विषय वस्तु के अंतर्गत समाविष्ट भाव-**''अहावरे दुच्चे भंते। महव्वए मुसावायाओ वेरमणं! मुसावायं पच्चक्खामि। से कोहा वा लोहा वा, भया वा हासा वा, नेवं सयं मुसं वइज्जा, नेवन्नेहिं मुसं वायाविज्जा, मुसं वयंतेऽति अन्नेण समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं... अप्पाणं वोसिरामि 11811''**

व्याख्याप्रज्ञप्तिसूत्र शतक 12, उद्देशक 5 में क्रोधादि के पर्यायवाची शब्दों का उल्लेख हुआ है, जिनका विवेचन डॉ. दिलीप धींग के जिनवाणी, जुलाई 2017 में द्रष्टव्य है।

संदर्भ:- इस आलेख में आगम प्रकाशन समिति,ब्यावर से प्रकाशित आगम एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर से प्रकाशित आगमों का उपयोग हुआ है।

-खिड़की दरवाजा, अलीगढ़-304023, जिला-टोंक (राज.)

जिनवाणी पर अभिमत

डॉ. समीरमल मारू

जून-2017 का अंक मिला, देखा, पढ़ा। हीरक वर्ष में 'अध्यात्म और ध्यान' अंक सराहनीय लगा। इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। प्रवचन माला, लेख बहुत सुन्दर, रोचक एवं ज्ञानवर्धक लगे जो आज की युवा पीढ़ी और सभी के लिए बहुत उपयोगी है। इस अंक से सम्बन्धित व्यक्तियों एवं गुरुजनों के प्रति सादर आभार। वृद्धजनों की रचनाएँ उनसे सम्बन्धित लेख भी छापेंगे तो अति उत्तम होगा।

-बी-151, जनता कॉलोनी, मंदसौर (मध्यप्रदेश)

बौद्ध सुत्तपिटक में कषाय-विवेचन

डॉ. श्वेता जैन

कषाय* चित्त में उत्पन्न होने वाले वे चैतसिक हैं, जो मनुष्य को नकारात्मकता की ओर ले जाते हैं, पतन की ओर ढकेल देते हैं, जन्म-मरण के बन्धन में या संस्कार में बांध देते हैं। चित्त में होने वाली यह बन्धन प्रक्रिया चार स्तरों से होकर गुजरती है- 1.विज्ञान 2.संज्ञा 3.वेदना और 4.संस्कार। विज्ञान से तात्पर्य है जानना। आँख, नाक, कान, जिह्वा एवं त्वचा, ये इन्द्रियाँ अपने आप में बिल्कुल निर्जीव हैं। जब चित्त का यह विज्ञान खण्ड इन इन्द्रियों के साथ जुड़ता है तो हमें रूप की, गंध की, शब्द की, रस की और स्पर्श की जानकारी होती है। मात्र जानकारी होती है, और कुछ नहीं। जैसे ही जानकारी हुई चित्त का दूसरा खण्ड संज्ञा उत्पन्न होता है, जिसका काम पहचानने का है। यह पहचान अब तक के अनुभवों के आधार पर, स्मृति के आधार पर होती है। पहचान होती है तो मूल्यांकन होता है। शब्द आए तो पहचाना- ये प्रशंसा के हैं, ये गाली के हैं। जैसे ही पहचाना और मूल्यांकन कर लिया, चेतना का तीसरा खण्ड उत्पन्न होता है, जिसे वेदना कहा जाता है। वेदना अर्थात् संवेदना, जो सुखद भी होती है और दुःखद भी। जैसे ही दुःखद या सुखद संवेदना होती है तुरन्त उसके प्रति प्रतिक्रिया होती है, जिसे संस्कार कहा जाता है। यह चित्त का चतुर्थ खण्ड है। सुखद संवेदना हुई, प्रिय लगी, उसके प्रति राग जागा। दुखद संवेदना हुई, अप्रिय लगी, उसके प्रति द्वेष जागा। इन्द्रियों पर ज्योंही सम्बन्धित विषय टकराते हैं, त्योंही त्वरित गति से जानने, पहचानने, मूल्यांकन करने संवेदनशील होने और संस्कार बनाने का कार्य होता है। संस्कार के स्वरूप में बौद्ध साहित्य में राग, द्वेष, मोह और तृष्णा को बन्धन के कारण बताए गए हैं। धम्मपद में कहा गया है-

नत्थि रागसमो अग्गि नत्थि दोससमो गहो।
नत्थि मोहसमं जालं नत्थि तण्हासमा नदी।।[1]

राग के समान आग नहीं, द्वेष के समान ग्रह (भूत) नहीं, मोह के समान जाल नहीं, तृष्णा के समान नदी नहीं। आग, ग्रह, जाल, और नदी की उपमाओं से इनकी दुष्करता को बताया गया है। तण्हा वग्ग में राग, द्वेष, मोह और तृष्णा से रहित व्यक्ति को दान देने में महाफल बताया गया है।[2]

बौद्ध त्रिपिटक में राग, द्वेष और मोह को नीघ (दुःख) कहा जाता है। जिनके ये नीघ क्षीण हो जाते हैं तथा भविष्य में भी उत्पन्न होने के स्थिति में भी नहीं होते, वे क्षीणास्रव भिक्षु अनीघ कहलाते हैं। 'स्रोत' शब्द से तृष्णा को कहा गया है। यह तृष्णा क्षीणास्रव में सदा के लिए विनष्ट हुई रहती है, अतः वह छिन्नसोतो कहलाता है।[3]

राग, द्वेष, मोह और तृष्णा के भाव कहाँ उत्पन्न होते हैं, ये भाव हमारे जीवन में किस तरह के दोष उत्पन्न करते हैं, इनको कैसे नियन्त्रित किया जा सकता है?-इन विषयों को लेकर बौद्ध साहित्य में व्यापक चर्चा प्राप्त होती है। धम्मपद का प्रारम्भ ही इन भावों के उत्पत्ति स्थान मन को लेकर किया जाता है-

मनो पुब्बंगमा धम्मा मनो सेट्ठा मनोमया।
मनसा चे पदुट्ठेन भासति वा करोति वा।
ततो नं दुक्खमन्वेति चक्क'व वहतो पदं।।[4]

*यद्यपि बौद्धदर्शन में क्रोधादि विकारों के लिए 'कषाय' शब्द का प्रयोग नहीं हुआ है, तथापि क्रोधादि विकारों का सुत्तपिटक से सम्बद्ध ग्रंथों में चैतसिक संस्कारों, अकुशलचित्त-स्वरूप आदि के रूप में विवेचन हुआ है, उसे यहाँ रोचक ढंग से प्रस्तुत किया जा रहा है, जो पठनीय एवं ग्राह्य है।-सम्पादक

मन सभी प्रवृत्तियों का अगुआ है, मन उन सभी का प्रधान है, वे मन से ही उत्पन्न होती हैं। यदि कोई दूषित मन से वचन बोलता है या काम करता है, तो दु:ख उसका अनुसरण उसी प्रकार करता है, जिस प्रकार चक्का गाड़ी खींचने वाले बैलों के पैर का। यह श्लोक स्पष्ट रूप से कहता है कि राग, द्वेष आदि भाव मन की भूमि पर उत्पन्न होते हैं और मन ही इनके आगे आगे चलता है और उसका अनुसरण करती हुई ये भावनाएँ पीछे-पीछे चलती हैं। यदि कोई प्रसन्न मन से वचन बोलता है या काम करता है तो सुख उसका अनुसरण उसी प्रकार करता है, जिसप्रकार कि कभी साथ नहीं छोड़ने वाली छाया।

चित्त में जब क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, तृष्णा जैसे विचार उत्पन्न होते हैं, तो बौद्ध दर्शन में वह अकुशल चित्त कहलाता है। प्रेम, समता, करुणा, प्रमोद, क्षमा आदि भावों से युक्त चित्त कुशल चित्त कहलाता है। राग, द्वेष, मोह और तृष्णा रूपी अकुशल चित्तवृत्तियों में क्रोध, मान, माया और लोभ रूपी कषाय चतुष्क समाविष्ट हैं। राग की पृष्ठभूमि पर ही माया और लोभ फलित होते हैं तथा द्वेष की पृष्ठभूमि पर क्रोध और मान फलित होते हैं। वस्तु, व्यक्ति, धन या परिस्थिति के प्रति राग होने पर ही व्यक्ति छल अर्थात् मायावी आचरण करता है और लोभ के वशीभूत हो जाता है। द्वेष या वैर का भाव ही व्यक्ति को क्रोधाविष्ट और मान से योजित कर देता है। अत: राग के अन्तर्गत माया व लोभ का तथा द्वेष के अन्तर्गत क्रोध व मान का विवेचन किया गया है।

राग रूपी संस्कार

जहाँ प्रियता का भाव होता है उसी से राग होता है। अत: पियवग्गो में गौतम बुद्ध कहते हैं- तस्मा पियं न करियाथ'[5] इसलिए किसी को प्रिय न बनावें। क्योंकि एक के प्रिय होने पर दूसरे का अप्रिय होना स्वाभाविक है। प्रियता और अप्रियता एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। जो राग में रक्त हैं, वे मकड़ी के समान अपने बनाये जाल में फंस जाते हैं, और अपने बनाए स्रोत में पड़ते हैं।[6] राग बन्धन का बीज है। यह बीज मन में कब वपित होता है, तो इसके उत्तर में बुद्ध कहते हैं-

यथागारं दुच्छन्नं वुट्ठी समतिविज्झति।
एवं अभावितं चित्तं रागो समतिविज्झति।।[7]

ठीक से न छाए हुए (अनाच्छादित) घर में वृष्टि का जल घुस जाता है वैसे ही ध्यान भावना से रहित चित्त में राग प्रविष्ट कर जाता है।

यथागारं सुच्छन्नं वुट्ठी न समतिविज्झति
एवं सुभावितं चित्तं रागो न समतिविज्झति।।[8]

जैसे ठीक से छाये हुए घर में वृष्टि का जल नहीं घुसता है, वैसे ही ध्यान भावना से अभ्यस्त चित्त में राग नहीं घुसता है।

रागी व्यक्ति धन आदि के लोभ के वशीभूत होकर मायावी आचरण करता है। यह लोभ व्यक्ति को कठोर, निर्दय, अत्यधिक कंजूस, अतिमहत्त्वाकांक्षी बना देता है। इस संदर्भ में राजा प्रसेनजित कौसल एवं गौतम बुद्ध का संवाद द्रष्टव्य है-

एक दिन राजा प्रसेनजित कौसल गौतम बुद्ध के सम्मुख पहुँचे तो बुद्ध ने पूछा कहाँ से आ रहे हो, तब कौसल नरेश ने कहा- ''भन्ते! यहाँ श्रावस्ती में नगरश्रेष्ठी गृहपति का देहावसान हो गया है। वह सन्तानहीन था, अत: उसकी सम्पत्ति राजकोष में भिजवा कर आ रहा हूँ। भन्ते! उसके पास अस्सी लाख केवल सोने की मुद्रायें थीं, चाँदी की तो बात ही क्या कही जाय। परन्तु आप उस अतिलोभी का भोजन सुनेंगे तो आश्चर्य करेंगे। वह खट्टी छाछ के साथ खुद्दी का भात खाता था। कपड़े भी वह ऐसे पहनता था जो टाट के बने हुए तथा स्थान स्थान पर सिले हुए होते थे। ऐसे यान पर चलता था कि या तो कोई पुराना जीर्ण शीर्ण रथ होता था जिसका छत्र पत्तों से छाया रहता था, या फिर कोई टूटी पुरानी पालकी।''

बुद्ध कहते हैं- ''ऐसा ही होता है, महाराज!

अतिलोभी पुरुष अतुल भोग्य सामग्री पाकर भी न तो स्वयं उसका सुखपूर्वक उपभोग कर पाते हैं, न उससे अपने माता-पिता को ही कोई सुख पहुँचा सकते हैं। न अपने पुत्र या स्त्री को, न अपने नौकर चाकरों को, न अपने मित्रों या साथियों को कोई सुख पहुँचा पाते हैं। न उसमें से किसी श्रमण या ब्राह्मण को ही भिक्षा देते हैं। इस तरह उनकी इस अतुल सम्पत्ति को स्वयं न उपभोग करने के कारण, या तो राजा लोग छीन लेते हैं, या चोर चुरा ले जाते हैं, या अग्नि जला देती है, या वह बाढ में बह जाती है, या फिर अन्त में वह सम्पत्ति ऐसे सम्बन्धी जनों के हाथ लग जाती है जिन्हें वह कभी फूटी आँखों से भी नहीं देखना चाहता हो। इस तरह महाराज, उस महालोभी पुरुष की वह अतुल सम्पत्ति उसके उपभोग के बिना ही क्षीण हो जाती है। परन्तु धीर एवं विज्ञ पुरुष उक्त अतुल धन सम्पत्ति प्राप्त कर उसका स्वयं भी यथेष्ट उपभोग करता है, तथा साथ ही अपने अन्य कार्यो में लगाता है। वह उससे अपने माता-पिता एवं अन्य सम्बन्धी जनों का भी पालन पोषण करता हुआ इस लोक में प्रशंसा पाता है तथा दान आदि द्वारा स्वर्ग में भी अपना सुखमय स्थान बना लेता है।[9]

इस प्रसंग से बोध होता है कि लोभ मानसिक संतुलन बिगाड़ देता है। जिस वस्तु का जैसा उपयोग करना चाहिए वैसा उपयोग लोभी नहीं कर पाता है। वह साधन को साध्य समझने लगता है।

जो श्रमण या ब्राह्मण असत्य भाषण द्वारा छल या धोखा करता है अर्थात् माया करता है, उसे सुत्तनिपात में वृषल की संज्ञा दी गई है।[10] यह माया व्यक्ति किसी वस्तु, व्यक्ति आदि के प्रति राग होने के कारण करता है।

द्वेष रूपी संस्कार

मन के प्रतिकूल कथन होने पर या व्यवहार होने पर वैर का भाव जागता है, द्वेष का भाव विकसित होता है। धम्मपद में वैर के शान्त होने का उपाय बतलाते हुए कहते हैं-

अकोच्छि मं अवधि मं अजिनि मं अहासि मे।
ये च तं उपनय्हन्ति वेरं तेसं न सम्मति।।[11]

उसने मुझे डाँटा, उसने मुझे मारा, उसने मुझे जीत लिया, उसने मेरा लूट लिया- जो ऐसा मन में बनाये रखते हैं, उनका वैर शान्त नहीं होता।

अकोच्छि मं अवधि मं अजिनि मं अहासि मे।
ये तं न उपनय्हन्ति वेरं तेसूपसम्मति।[12]

उसने मुझे डाँटा, उसने मुझे मारा, उसने मुझे जीत लिया, उसने मेरा लूट लिया- जो ऐसा मन में नहीं बनाये रखते हैं, उनका वैर शान्त हो जाता है।

नहि वेरेन वेरानि सम्मन्तीध कुदाचनं।
अवेरेन च सम्मन्ति एस धम्मो सनन्तनो।।[13]

इस संसार में वैर से वैर कभी शान्त नहीं होते, अवैर (मैत्री) से ही शान्त होते हैं- यही सनातन नियम है।

द्वेष के परिणामस्वरूप ही क्रोध और मान के भाव मन में पैदा होते हैं। धम्मपद के क्रोधवग्ग में क्रोध के परिणाम को बताने वाली एक कथा है- एक समय अनुरुद्ध पाँच सौ भिक्षुओं के साथ कपिलवस्तु पधारे। तब अनुरुद्ध की बहिन रोहिणी उन्हें प्रणाम करने नहीं आई। कारण पता चला कि छवि रोग होने के कारण वह नहीं आई। बाद में गौतम बुद्ध ने रोहिणी को बतलाया कि यह छवि रोग क्रोध के कारण उत्पन्न हुआ है। पूर्वजन्म में राजमहिषी होकर एक नर्तकी को क्रोध से पीड़ित किया था, यह उसी का फल है। भगवान बुद्ध ने सतर्क करते हुए रोहिणी को कहा-यह कर्म तेरा ही किया हुआ है, अल्पमात्र भी क्रोध या ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए।[14]

तदनन्तर गाथा कहते हैं-

यो वे उप्पतितं कोधं रथं भन्तं'व धारये।
तमहं सारथिं ब्रूमि, रस्मिग्गाहो इतरो जनो।।[15]

जो चढे क्रोध को भ्रमण करते रथ की भाँति रोक लेता है, उसी को मैं सारथि कहता हूँ, दूसरे तो केवल लगाम पकड़ने वाले हैं। अक्कोधेन जिने कोधं

अर्थात् अक्रोध से क्रोध को जीता जाता है[16] और क्रोध न करने वाला ब्राह्मण कहलाता है।[17]

मज्झिमनिकाय के चुल्लकम्मविभंगसुत में क्रोध के परिणाम को बताने वाली यह दूसरी कथा है, जिसमें तोदेयपुत्र शुभ माणवक के प्रश्न के उत्तर में गौतम बुद्ध कहते हैं- *इध, माणव, एकच्चो इत्थी वा पुरिसो वा कोधनो होति उपायासबहुलो, अप्पं पि वुत्तो समानो अभिसज्जति कुप्पति ब्यापज्जति पतिट्ठीयति कोपं च दोसं च अप्पच्चयं च पातुकरोति। सो तेन कम्मेन एवं समत्तेन एवं समादिन्नेन कायस्स भेदा परं मरणा अपायं दुग्गतिं विनिपातं निरयं उपपज्जति। नो चे कायस्स भेदा परं मरणा अपायं दुग्गतिं विनिपातं निरयं उपपज्जति। नो चे कायस्स भेदा परं मरणा अपायं दुग्गतिं विनिपातं निरयं उपपज्जति, सचे मनुस्सत्तं आगच्छति यत्थ यत्थ पच्चाजायति दुब्बण्णो होति।* अर्थात् माणव! कोई स्त्री या पुरुष क्रोधी हो, सबको क्रोध के कारण परेशान (उपायास) करता हो, कुछ कहते ही आवेश में आ जाता हो, क्रोध करता हो, मारने को दौड़ता हो, दूसरों पर द्वेष व अविश्वास करता हो तो वह उस गृहीत व प्राप्त कर्म से, देहपात के बाद मरणान्तर या तो नरक योनि में गिरता है या फिर किसी कारण मनुष्य योनि में भी उत्पन्न हो जाय तो वह दुर्वर्ण (कुरूप) होता है। उसकी कुरूपता में क्रोधी होना, क्रोध के कारण दूसरों को परेशान करना, कुछ कहते ही आवेश में आ जाना, क्रोध में मारने को दौड़ना, दूसरों पर द्वेष व अविश्वास करना कारण है।[18]

क्रोध का निमित्त उपस्थित होने पर कैसा व्यवहार किया जाना चाहिए, इससे सम्बन्धित एक प्रसंग- एक बार गौतम बुद्ध के कौशाम्बी में विचरण करते समय मागन्दिय ने नगरवासियों को पैसे आदि का लोभ देकर तथागत तथा भिक्षु संघ का आक्रोशन करके भगा देने के लिए तैयार किया। वे भिक्षुओं को देखकर- तुम लोग मूर्ख हो, चोर हो, ऊँट हो, बैल हो, गधे हो, नारकीय हो, पशु हो आदि कहकर आक्रोशन करने लगे। आनन्द स्थविर ने भगवान् के पास जा वन्दना कर कहा- भन्ते! ये नगरवासी हम लोगों को आक्रोशन करते हैं, गाली देते हैं, यहाँ से दूसरी जगह चलें।

बुद्ध- कहाँ, आनन्द?

आनन्द- भन्ते! दूसरे नगर को।

बुद्ध- वहाँ मनुष्यों के आक्रोशन करने पर कहाँ जायेंगे?

आनन्द- भन्ते! वहाँ से दूसरे नगर को चलेंगे।

बुद्ध- आनन्द! ऐसा नहीं करना चाहिए। जहाँ विवाद उत्पन्न हुआ है, वहीं उसके शान्त हो जाने पर दूसरे स्थान पर जाना चाहिए। आनन्द! कौन आक्रोशन करते हैं?

आनन्द- दास-नौकर से लेकर सभी आक्रोशन करते हैं।

बुद्ध- आनन्द! जैसे संग्राम भूमि में गया हाथी चारों दिशाओं से आए हुए बाणों को सहता है, उसी प्रकार बहुत से दु:शीलों द्वारा कही गई बात को सह लेना हमारा कर्त्तव्य है।

भगवान् ने यह कहकर अपने प्रति उपदेश देते हुए इस गाथा को कहा-

अहं नागोव संगामे चापतो पतितं सरं।
अतिवाक्यं तितिक्खिस्सं दुस्सीलो हि बहुज्जनो।।[19]

जैसे युद्ध में हाथी धनुष से गिरे बाण को सहन करता है, वैसे ही मैं कटु वाक्य को सहन करूँगा, क्योंकि दु:शील लोग ही अधिक हैं।

यह कथा हमें संदेश देती है कि क्रोध की निवृत्ति के लिए कोई समय या स्थान अनुकूल व प्रतिकूल नहीं होता। यदि हम यह चाहें कि हमारे साथ ऐसे व्यक्ति हों जो हमें क्रोध न दिलाए, ऐसी घटनाएँ घटे जिनसे हमें क्रोध नहीं आए, तो यह कदापि संभव नहीं है, अत: हर परिस्थिति में अपनी सहनशीलता बढ़ानी चाहिए।

एक बार असुरेन्द्रक ब्राह्मण को भगवान बुद्ध कहते हैं-

जयं वे मञ्ञति बालो, वाचाय फरुसं भणं।
जयं चेवस्स तं होति, या तितिक्खा विजानतो।।
उभिन्नमत्थं चरति, अत्तनो च परस्स च।
परं सङ्कुपितं ञत्वा, यो सतो उपसम्मति।।[20]

अर्थात् मूर्ख मनुष्य अपने मुख से कठोर वचन कहकर अपनी विजय समझ लेता है, परन्तु विजय उसी ज्ञानी की होती है जो उन रूखे वचनों को सहन कर लेता है। दूसरों को क्रोध करते देखकर भी जो स्वयं सावधान होकर शान्त रहता है, उससे स्वयं को भी तथा दूसरों को भी- दोनों को ही लाभ होता है।

क्रोध विषयक अन्य प्रसंग इस प्रकार हैं-

भारद्वाजगोत्र ब्राह्मण बुद्ध से पूछता है-

किंसु छेत्वा सुखं सेति, किंसु छेत्वा न सोचति।
किस्सस्सु एकधम्मस्स, वधं रोचेसि गोतमा' ति?

मनुष्य किसका नाश कर सुख से सोता है? तथा उसे किसका नाश करने पर भी शोकमग्न नहीं होना पड़ता? किस एक धर्म (संस्कार) का वध आपको उचित लगता है?

बुद्ध कहते हैं-

कोधं छेत्वा सुखं सेति, कोधं छेत्वा न सोचति।
कोधस्स विसमूलस्स, मधुरग्गस्स ब्राह्मण।
वधं अरिया पसंसन्ति, तं हि छेत्वा न सोचती' ति।।

मनुष्य अपने क्रोध का नाश कर सुख से सोता है। क्रोध का नाश करने पर उसको शोकमग्न नहीं होना पड़ता। हे ब्राह्मण! विष के मूल रूप इस क्रोध का, जो पहले बहुत अच्छा लगता है, वध करना उत्तम पुरुषों द्वारा प्रशस्त है। उसका नाश कर मनुष्य शोक नहीं करता।[21]

भगवान के मुख से इस प्रकार की धर्म की वाणी सुनकर भारद्वाज ब्राह्मण प्रव्रजित हो गया। यह जानकर आक्रोशित एक अन्य भारद्वाज नामक ब्राह्मण गौतम बुद्ध को अपशब्द कहता है। तो बुद्ध कहते हैं-यो खो ब्राह्मण, अक्कोसन्तं पच्चक्कोसति, रोसेन्तं पटिरोसेति, भण्डन्तं पटिभण्डति, अयं वुच्चति, ब्राह्मण, सम्भुंजति वीतिहरती ति। ते मयं तया नेव संभुंजाम न वीतिहराम। तवेवेतं, ब्राह्मण, होति, तवेवेतं ब्राह्मण, होती'ति अर्थात् ब्राह्मण! जो अपशब्द करने वाले को अपशब्द कहता है, क्रुद्ध होने वाले पर क्रोध करता है, ऊँचा नीचा कहने वाले को ऊँचा नीचा कहता है- यह ऐसे अवसरों पर 'परस्पर खिलाना पिलाना' कहा जाता है। मैं तुम्हारे साथ यह परस्पर खिलाने पिलाने का व्यवहार नहीं करता। तुम्हारे दिये का मैं उपयोग नहीं करता। तो ब्राह्मण! ये बातें तुम्ही को पुनः मिल रही हैं। तुम्हारा ही इन पर अधिकार हो।[22]

संयुत्तनिकाय के सगाथवग्ग के अन्तर्गत सक्कसंयुत्त में ततिय वग्ग के अक्कोधसुत में भिक्षुओं को उपदेश देते हुए बुद्ध कहते हैं-

मा वो कोधो अज्झभवि, मा च कुज्झित्थ कुज्झतं।
अक्कोधो अविहिंसा च, अरियेसु च पटिपदा।
अथ पापजनं कोधो, पब्बतोवाभिमद्दती' ति।।

तुम्हें क्रोध अपने वश में न कर ले, इसलिए सतर्क रहना चाहिए। क्रोध करने वाले पर भी तुम्हें क्रोध नहीं करना चाहिए। अक्रोध एवं अहिंसा- ये दोनों आर्यों के परम्परागत गुण हैं। क्रोध तो पापी (क्रोधी) पुरुष को पर्वत की तरह दबा बैठता है।

सुत्तपिटक के खुद्दकनिकाय में परिगणित सुत्तनिपात में उपमाओं के माध्यम से क्रोधादि के त्याग की बात कही गई है। यथा- मन में बढ़ते हुए क्रोध को उसी प्रकार शान्त कर लेना चाहिए जैसे औषधि किसी के शरीर में फैलते हुए सर्पविष को शान्त कर देती है। क्रोध को सर्प की कैंचुली के समान त्याग देना चाहिए।[23]

धन, ज्ञान, रूप, सत्ता आदि के मद में मन की जैसी परिणति होती है, वह मान है। मान तुलना की प्रवृत्ति से उत्पन्न होता है। यदि मानव किसी से अपनी तुलना नहीं करे तो वह मान और हीनता दोनों से ग्रसित

नहीं होता है। मान विषयक संवाद यहाँ प्रस्तुत कर रही हूँ-

एक समय बुद्ध श्रावस्ती के जेतवनाराम में साधना हेतु विराजमान थे। तब तोदेयपुत्र शुभ माणवक उनके समीप आकर पूछता है- "भो! गौतम! क्या कारण है, क्या प्रत्यय है कि सभी मानव आकार प्रकार से समान होते हुए भी उनमें परस्पर हीनता या उत्तमता दिखाई देती है।"

बुद्ध उत्तर देते हुए कहते हैं- "इध, माणव, एकच्चो इत्थी वा पुरिसो वा थद्धो होति अतिमानी, अभिवादेतब्बं न अभिवादेति, पच्चुट्ठातब्बं न पच्चुट्ठेति, आसनारहस्स न आसनं देति, मग्गारहस्स न मग्गं देति, सक्कातब्बं न सक्करोति, गरुकातब्बं न गरुकरोति, मानेतब्बं न मानेति, पूजेतब्बं न पूजेति। सो तेन कम्मेन एवं समत्तेन एवं समादिन्नेन कायस्स भेदा परं मरणा अपायं दुग्गतिं विनिपातं निरयं उपपज्जति। नो चे कायस्स भेदा परं मरणा अपायं दुग्गतिं विनिपातं निरयं उपपज्जति, सचे मनुस्सत्तं आगच्छति यत्थ यत्थ पच्चाजायति नीचकुलीनो होति।" अर्थात् माणव! कोई स्त्री या पुरुष स्तब्ध (अतिगर्व करने वाला) या अतिमानी होता है, वह किसी अभिवादनीय का न अभिवादन करता है, न अभ्युत्थान करता है, न आसन देने योग्य को आसन देता है, न मार्ग पूछने वाले को मार्ग बताता है, न सत्करणीय का सत्कार करता है, न गुरुकरणीय का गौरव मानता है, माननीय का मान नहीं करता, पूजनीय की पूजा नहीं करता। वह इस कर्म के प्रभाव से नीच कुल में पैदा होता है। ये कार्य उसके नीच कुल में पैदा होने के प्रधान कारण हैं।

इसके विपरीत जो कोई स्त्री या पुरुष स्तब्ध, अतिमानी नहीं होता, वह इस कार्य के प्रभाव से उच्च कुल में पैदा होता है।[24]

आयुष्मान् वंगीश अपनी प्रत्युत्पन्नमतिता से दूसरे भिक्षुओं को उद्विग्न करते रहते थे। परन्तु अन्त में आयुष्मान् वंगीश को विचार हुआ कि ऐसा करना मेरे लिए बहुत अनुचित है। तब आयुष्मान् वंगीश ने स्वयं ही प्रायश्चित्त कर ये गाथाएँ कहीं-

मानं पजहस्सु गोतम, मानपथं च पजहस्सु।
असेसं मानपथस्मिं, समुच्छितो विप्पटिसारीहुवा चिररत्तं।।
मक्खेन मक्खिता पजा, मानहता निरयं पपतन्ति।
सोचन्ति जना चिररत्तं, मानहता निरयं उपपन्ना।।
न हि सोचति भिक्खु कदाचि, मग्गजिनो सम्मापटिपन्नो।
किन्ति च सुखं च अनुभोति, धम्मदसो ति तमाहु पहितत्तं।।
तस्मा अखिलोध पधानवा, नीवरणानि पहाय विसुद्धो।
मानं च पहाय असेसं, विज्जायन्तकरो समितावी'ति।।[25]

हे गौतम शिष्य! यह वृथाभिमान त्याग दे। अभिमान के मार्ग से दूर हट। इस अभिमान के मार्ग में भटक कर बहुत दिनों तक पश्चात्ताप करता रहेगा। अभिमानियों का अन्त में नरक में पात होता है। वे इस कारण नरक में उत्पन्न होकर बहुत काल तक शोक मग्न रहते हैं। परन्तु भिक्षु शोक नहीं करता। ऐसा सम्यक्प्रतिपन्न साधक चिरकाल तक सुखानुभव करता है। अत: ओ साधक! मन के मैल को दूर कर उत्साही बन। बन्धनों को काटकर विशुद्ध हो जा तथा अपने इस वृथाभिमान का सर्वथा शमन कर।

ज्ञानी को अहंकार को जगत् प्रपंच का आदि कारण मानकर सर्वप्रकार से अन्त कर देना चाहिए। अपने आन्तरिक एवं बाह्य गुणों को जान कर उस पर गर्व नहीं करना चाहिए। उन गुणों के कारण स्वयं को न श्रेष्ठ समझना चाहिए और न हीन।[26] अहंकार रहित अनास्रव सन्त की देवता भी स्पृहा करते हैं।[27]

मोह रूपी संस्कार

तृष्णा से उपादान की उत्पत्ति होती है। उपादान उग्र तृष्णा का वह रूप है, जिससे मोह उत्पन्न होता है। इसे आसक्ति भी कहा गया है। यह सास्रव धर्मों को उत्पन्न करता है। इसके होने पर पुद्गल भोगों की प्राप्ति में दौड़ता-घूमता है। वह भोगों की प्राप्ति के लिए सब ओर प्रधावित होता है। इस अवस्था को उपादान कहते हैं। संयुत्तनिकाय में उपादान के चार प्रकार बताए गए हैं, वे

हैं- कामोपादान, दृष्टि उपादान, शीलव्रतोपादान और आत्मवादोपादान। इनमें कामोपादान इन्द्रिय सुख को विषय करता है। मिथ्या सिद्धान्तों में विश्वास करना दृष्टि उपादान है। असद् आचरण में संलग्न होना शीलव्रतोपादान है तथा नित्य आत्मा को मानना आत्मवादोपादान है।

ममत्व का संस्कार कब नहीं होता?, इस प्रश्न के उत्तर में बुद्ध कहते हैं- भिक्षु! जो कोई भूत, भविष्य, वर्तमान का, शरीर के अन्दर या बाहर का, स्थूल या सूक्ष्म, हीन या उत्तम, दूर या समीप का रूप है, वह सब रूप 'न यह मेरा है', 'न यह मैं हूँ', 'न यह अपना है' उसे जानते समझते हुए ममत्व के संस्कार या अनुशय नहीं होते।[28] मोह से रहित होने पर व्यक्ति का व्यवहार कैसा हो जाता है, इस सम्बन्ध में धम्मपद अट्ठकथा में एक कथा कही जाती है- श्रावस्ती का एक गृहस्थ अपने पुत्र के पैदा होते ही घर से निकलकर प्रव्रजित हो गया और उद्योग करके थोड़े ही दिनों में अर्हत् हो गया। उसने पुत्र को देखने के विचार से जाकर उसे भी उपदेश देकर प्रव्रजित कर दिया। बाद में उसकी पत्नी भी पुत्र और पति से रहित होकर अकेले घर में न रह सकी, उसने भी भिक्षुणियों के पास जाकर प्रव्रजित होकर अर्हत्व पा लिया।

एक दिन धर्म-सभा में भिक्षुओं ने इसकी चर्चा की-आवुस! धार्मिक उपासक ने घर से निकल कर अपने तो दुःख से छुटकारा पाया ही, स्त्री-पुत्र का भी आधार हुआ। भगवान ने मध्य में आकर कहा- भिक्षुओं! अमोही पण्डित को न अपने लिए और न दूसरे के लिए समृद्धि चाहनी चाहिए, केवल धार्मिक बनने और बनाने का प्रयत्न करना चाहिए। यह कहते हुए इस गाथा को कहा- 'न अत्तहेतु न परस्स हेतु, न पुत्तमिच्छे न धनं न रट्ठं। न इच्छेय्य अधम्मेन समिद्धिमत्तनो, स सीलवा पञ्ञवा धम्मिको सिया।।'[29]

जो अपने लिए या दूसरों के लिए पुत्र, धन और राज्य नहीं चाहता और न अधर्म से अपनी उन्नति चाहता है, वही शीलवान्, प्रज्ञावान और धार्मिक है।

उरुवेलकप्प नामक कस्बे में एक ग्रामीण ने भगवान बुद्ध से पूछा- भन्ते! दुःख के उत्पाद एवं विनाश के विषय में कुछ बतायें?

भगवान ने कहा- इस उरुवेलकप्प में क्या तुम्हारे ऐसे कुछ परिचित मनुष्य हैं जिनके किसी कारण वध या बन्धन से, हानि या अप्रतिष्ठा से तुम्हें शोक, परिदेव, दुःख दौर्मनस्य आदि उत्पन्न हों?

हाँ, भन्ते! ऐसे मनुष्य यहाँ हैं जिनके किसी कारण वध या बन्धन से, हानि या अप्रतिष्ठा से मुझे शोक, परिदेव, दुःख, दौर्मनस्य आदि उत्पन्न हों।

ग्रामणि! क्या इस उरुवेलकप्प में ऐसे मनुष्य हैं जिनके किसी कारण वध या बन्धन से, हानि या अप्रतिष्ठा से तुम्हें शोक, परिदेव, दुःख दौर्मनस्य आदि उत्पन्न न हों?

हाँ भन्ते! यहाँ ऐसे भी पुरुष हैं जिनके किसी कारण वध या बन्धन से, हानि या अप्रतिष्ठा से तुम्हें शोक, परिदेव, दुःख दौर्मनस्य आदि उत्पन्न न होंगे।

ग्रामणि! क्या कारण है कि यहाँ एक के वध बन्धन से तुम्हें शोक परिदेव आदि उत्पन्न होते हैं तथा दूसरे के वध बन्धन से तुम्हें शोक परिदेवादि नहीं होते?

भन्ते! उसमें यही कारण है कि जिन उरुवेलकप्पवासियों के वध-बन्धन से मुझे शोक परिदेवादि होते हैं, उनके प्रति मेरा छन्दराग है तथा जिन उरुवेलकप्पवासियों के वध-बन्धन से मुझे शोक परिदेवादि नहीं होते उन के प्रति मेरा कोई छन्दराग नहीं है।

बस, ग्रामणि! इसी बात को तुम स्वयं अपने वर्तमान काल में उत्पन्न दुःखों के विषय में चरितार्थ कर देख लो, समझ लो। इसी तरह तुम्हें अतीत काल में जो भी दुःख उत्पन्न हुए थे उनका मूल कारण भी यह छन्द ही था तथा जो कुछ अनागत काल में दुःख उत्पन्न होंगे उनका भी मूल कारण यह छन्द ही होगा।[30]

एक समय बहुत से भिक्षु मत्स्यिकाषण्ड के

आम्रातकवन में साधना हेतु ठहरे हुए थे। उस समय कुछ भिक्षु भिक्षाचर्या के बाद भोजनकर्म से निवृत्त हो कर एक स्थान पर बैठे हुए 'संयोजन' विषयक चर्चा करने लगे। उस समय चित्त गृहपति भी चर्चा सुनने के लिए वहाँ उपस्थित हुआ। तब उस चित्तगृहपति ने इस विषय पर अपना मत प्रकट करते हुए कहा- भन्ते! मेरी समझ से संयोजन एवं संयोजनीय धर्म- ये दोनों शब्द भी पृथक् हैं तथा नाम भी पृथक् हैं। इस पर मैं आप को एक उपमा सुनाऊँगा, क्योंकि लोगों को उपमा (दृष्टान्त) द्वारा भी कभी कभी प्राकरणिक बात का अर्थ सरलता से समझ में आ जाता है। जैसे- दो बैल- एक काला तथा एक श्वेत- एक ही रस्सी तथा एक जूए से बाँध दिए जाएँ तो क्या वहाँ कोई यह कहे कि काला बैल श्वेत बैल का बन्धन है, या श्वेत बैल काले बैल का बन्धन है, तो क्या उसका यह कथन उचित होगा?

भिक्षु- नहीं गृहपति! ऐसी बात नहीं है। वहाँ न काला बैल श्वेत बैल का बन्धन है, न श्वेत बैल ही काले बैल का बन्धन है। वे तो दोनों जिस रस्सी या जूए से बँधे हुए हैं, वास्तव में वह रस्सी तथा जुआ ही उनके बन्धन हैं।

चित्तगृहपति- भन्ते! इसी तरह, न चक्षु रूप का संयोजन (बन्धन) है तथा न रूप ही चक्षु के संयोजन हैं। वहाँ उन दोनों की अपेक्षा करते हुए उत्पन्न छन्दराग (आसक्ति) ही बन्धन है। इसी तरह न श्रोत्र शब्द का, घ्राण गन्ध का, न जिह्वा रस का, न काय स्प्रष्टव्य का बन्धन है, न मन धर्मों का बन्धन है, अपितु वहाँ उन दोनों की अपेक्षा से उत्पन्न छन्दराग (आसक्ति) ही बन्धन है।[31]

तृष्णा रूपी संस्कार

सुख-दुःख के वेदन से तृष्णा का जन्म होता है। सुख के वेदन के साथ अधिक प्राप्ति की इच्छा और दुःख के वेदन के साथ उसका संयोग न प्राप्त हो, ऐसी इच्छा तृष्णा है। इसे जीवन धारण करने के मूल में भी माना गया है। इससे भव की शृंखला प्रवाहित होती रहती है। यह जीवन और दुःख का प्रबल कारण है। जन्म धारण करने की प्रबल तृष्णा के कारण हमने जीवन धारण किया है।

धम्मपद के तण्हावग्ग में उल्लिखित है कि जिसे तृष्णा ने आक्रान्त कर अपनी अधीनता में कर रखा है, उसका दुःख बढ़ता ही जाएगा, जैसे घास शीघ्रता से बढ़ती जाती है। किन्तु जो इस तृष्णा को अपने वश में रखता है, दुःख उससे दूर भाग जाता है, जैसे कि कमल के पुष्पों से पानी, उन्हें लिप्त किए बिना झर जाता है। जिस प्रकार यदि जड़ की हानि नहीं हुई है, अर्थात् जड़ बची हुई है तो वृक्ष काटे जाने के बावजूद भी नए सिरे से विशाल रूप में बढ़ सकता है, इसी प्रकार यदि तृष्णा की उत्तेजना पूर्ण रूप से मरी नहीं है तो दुःख सदा ही नए सिरे से फूट पड़ेगा।

तृष्णा भव का मूल है, कर्मों का मूल है। मूल के नष्ट हो जाने पर कर्म भविष्य में उत्पन्न नहीं हो सकते हैं। तृष्णा के अभाव में कर्म स्वयं फलीभूत नहीं हो सकता है। भोग-विलास की तृष्णा के कारण मनुष्य यहाँ वहाँ विषयों की ओर दौड़ता है और इनके सुख प्राप्त करने की प्रबल तृष्णा के कारण पुनर्जन्म के बंधन में फंसता है। यह तृष्णा कई प्रकार की है- विषय-भोग की तृष्णा, पुनर्जन्म की तृष्णा, पुनर्जन्म नहीं लेने की कामना आदि। ये सभी तृष्णाएँ मनुष्य को सताती हैं। जो वस्तुएँ इन्द्रियों को प्रिय लगती हैं, मधुर लगती हैं- रस, रूप, रंग, स्वाद, उनकी आसक्ति चित्त को चंचल करती है। तृष्णा इस आसक्ति से उत्पन्न होती है। दुःख से निवृत्ति तभी हो सकती है, जब व्यक्ति इस तृष्णा से मुक्त हो जाए।

संयुत्तनिकाय में तृष्णा तीन प्रकार की कही गई है- काम तृष्णा, भव तृष्णा व विभव तृष्णा।[32] इनमें पहली तृष्णा का सम्बन्ध विषयभोग से है, दूसरी का शाश्वत दृष्टि पर आधारित जीवन की इच्छा से तथा तीसरी का उच्छेद दृष्टि पर आश्रित विनाश की इच्छा से है। तृष्णा मूलतः सुख की खोज और उसमें आसक्ति है।

तृष्णा में बंधे होने के कारण मनुष्य संसार के पार नहीं जा पाता है। अविद्या और तृष्णा की सहकारिता से दु:ख उत्पन्न होता है। रूपादि आलम्बनवश तृष्णा बार-बार उत्पन्न होती है, जिसे हम रूप-तृष्णा, शब्द-तृष्णा, गंध-तृष्णा, रस-तृष्णा, स्प्रष्टव्य-तृष्णा के रूप में जान सकते हैं।

एक दिन बहुत से आगन्तुक भिक्षुओं ने श्रावस्ती में भिक्षाटन करके राजकीय बन्धनागार में बहुत से चोरों को बँधा हुआ देखा। वे जब गौतम बुद्ध के समीप गये, तब उन्होंने प्रणाम कर पूछा- भन्ते! हम लोगों ने बन्धनागार में बहुत से चोरों को जंजीर आदि से बँधा हुआ देखा। वे ऐसे बँधे थे कि किसी प्रकार भी भाग नहीं सकते हैं। क्या भन्ते! इस बन्धन से भी कोई दृढतर बन्धन है?

भिक्षुओं! धन-धान्य, पुत्र-स्त्री आदि का जो क्लेश बन्धन है, यह उससे सैकड़ों, हजारों गुना दृढतर है कहकर भगवान् ने इस गाथा को कहा-'न तं दल्हं बन्धनमाहु धीरा यदायसं दारुजं बब्बजं च। सारत्तरता मणिकुण्डलेसु पुत्तेसु दारेसु च या अपेक्खा।।'[33]

यह जो लोहे, लकड़ी या रस्सी का बन्धन है, उसे बुद्धिमान लोग दृढ बन्धन नहीं कहते, वस्तुत: मणि, कुण्डल, पुत्र, स्त्री आदि के प्रति इच्छा का होना दृढ बन्धन है।

धम्मपद में तृष्णा का पूर्ण क्षय कर गौतम बुद्ध कहते हैं-

अनेकजातिसंसारं सन्धाविस्सं अनिब्बिसं।
गहकारकं गवेसन्तो दुक्खा जाति पुनप्पुनं।।
गहकारक! दिट्ठोसि पुन गेहं न काहसि।
सब्बा ते फासुका भग्गा गहकूटं विसंखितं।
विसंखारगतं चित्तं तण्हानं खयमज्झगा।।[34]

बिना रुके अनेक जन्मों तक संसार में दौड़ता रहा। (इस काया रूपी) गृह को बनाने वाले (तृष्णा) को खोजते पुन: पुन: दु:खमय जन्म में पड़ता रहा। हे गृहकारक! (तृष्णे) मैंने तुझे देख लिया, अब फिर तू घर नहीं बना सकेगा। तेरी सभी कड़ियाँ भग्न हो गयीं, गृह का शिखर गिर गया। चित्त संस्काररहित हो गया। तृष्णा पूर्ण रूप से क्षय को प्राप्त हो गयी।

एक बार एक देवता ने भगवान से पूछा- मार्ष! (पूजनीय!) आपने इस भवतृष्णा की बाढ़ को कैसे पार किया?

भगवान- आयुष्मन्! मैंने तो बिना रुके एवं बिना कोई विशेष प्रयास किए ही इस बाढ को पार कर लिया।

देवता- मार्ष! आपने बिना रुके एवं बिना कोई विशेष प्रयास किए कैसे इस बाढ को पार कर लिया?

भगवान- क्योंकि यदि मैं कहा रुकता तो डूब जाता; तथा कोई अतिरिक्त प्रयास करता तो बह जाता। अत: मैंने बिना रुके एवं बिना कोई विशेष प्रयास किये उस बाढ़ को पार किया।[35]

बुद्ध के इस कथन के अभिप्राय को समझने के लिए गहराई से भीतर की क्रिया को देखना आवश्यक है। विपश्यना के साधक श्री सत्यनारायण जी गोयन्का इस प्रक्रिया के सम्बन्ध में कहते हैं- आँखों का संवर कल्याणकारी हैं। कानों का संवर, नाक का संवर, जीभ का संवर, काया का संवर, वाणी का संवर, सभी कल्याणकारी है। पर सारे संवरों में अच्छा मन का संवर है और वह भी सम्पूर्ण मानस का संवर, अन्तर्मन की गहराइयों तक का संवर। यह जो भी कुछ भीतर-भीतर क्रोध, मान, माया, लोभ आदि की संवेदनाएँ हो रही हैं, इसकी अनुभूति अचेतन मन को, अर्धचेतन मन को होती ही रहती है और परिणामस्वरूप अन्दर ही अन्दर प्रतिक्रिया भी होती रहती है। इससे चित्त-धारा पर राग और द्वेष पैदा होता रहता है। चेतन मन को इस प्रक्रिया का पता ही नहीं रहता। अत: केवल चेतन चित्त तक का संवर इस पर रोक नहीं लगा सकेगा। ज्यों-ज्यों समता में रहने का अभ्यास बढेगा, चेतन, अर्धचेतन और अचेतन मन के बीच की दीवारें टूटेंगी। जो कुछ भीतर हो रहा है, सब मालूम होने लगेगा और समग्र मानस समता में रहना

सीखेगा, अत: समग्र मानस में संवर होगा। ज्योंही संवर किया यानी रोक लगा दी कि प्रकृति का, कुदरत का विधान, नियम अपने आप काम करने लगता है। संवर किया कि निर्जरा होनी शुरू हो जाएगी। यह गहरा संवर अन्तर्मन की गहरी ग्रन्थियों को काटता है। अत: कहा है-

अनिच्चावत संखारा उप्पादवयधम्मिनो।
उपज्जित्वा निरुज्झन्ति, तेसं वूपसमो सुखो।।

सचमुच सारे संस्कार अनित्य हैं, उत्पन्न होते हैं, नष्ट होते हैं- उत्पाद-व्यय, उत्पाद-व्यय। यही इनका धर्म है। यह ध्रुव धर्म है। यह बदलने वाली प्रक्रिया कभी नहीं रुकती परिवर्तनशीलता ही इसका नित्य स्वभाव है। किसी बात को लेकर क्रोध आया तो बड़ा नन्हा सा क्षण होता है क्रोध का, पलक झपकने जितना। लेकिन क्रोध का संस्कार पैदा करते ही अगले क्षण फिर क्रोध पैदा किया। उससे अगले क्षण फिर क्रोध ही क्रोध के संस्कार इस चित्तधारा को देर तक आगे बढ़ाते चलते हैं। कभी तो घंटों क्रोध चलता रहता है। क्रोध रुका तो कोई और संस्कार बनाना शुरु कर देंगे। वह चलेगा देर तक। फिर कोई और। कभी भय। कभी वासना। कभी कुछ और। यों पुराने संस्कारों के नष्ट होने की बारी ही नहीं आती। क्षण क्षण नया ही संस्कार बनाए जा रहे हैं। यदि हम संवर कर लें यानी रोक लगा दें तो नए संस्कार नहीं बनते। जैसे ही हमने नया संस्कार नहीं बनाया, तो कोई न कोई संस्कार-बीज, जिसका फल हो सकता है, कुछ देर बाद आनेवाला हो, अब जल्दी पककर आयेगा। इसे विपाक का त्वरतीकरण कह सकते हैं। तुरन्त कोई पुराना कर्म-संस्कार चित्त-धारा पर अपना फल लेकर आता ही है। यही उदीरणा है। कोई पुराना कर्म-संस्कार चित्तधारा पर अपना फल लेकर आया और उसके सहारे चित्तधारा आगे बढने लगी। जैसा कर्म था वैसा ही फल आया। हम उसे समता से, प्रज्ञा से देखने लगे तो उसका निरोध हुआ। जितने-जितने पुराने संस्कार क्षीण होते चले जायेंगे, मन में निर्मलता बढ़ती चली जाएगी और द्रष्टा भाव पुष्ट होता चला जाएगा।

इस द्रष्टा भाव से व्यक्ति बिना रुके एवं बिना कोई विशेष प्रयास किए क्रोध, मान, लोभ आदि कषाय रूप संसार सागर को पार कर सकता है।

संदर्भ-

1. धम्मपद-अनुवादक: डॉ. भिक्षु धर्मरक्षित, चौक, वाराणसी, तृतीय संस्करण,1983, मलवग्गो, श्लोक17
2. धम्मपद, तण्हावग्ग, श्लोक 23-26
3. रागो खो, भन्ते, नीघो, दोसो नीघो, मोहो नीघो। ते खीणासवस्स भिक्खुनो पहीना उच्छिन्नमूला तालावत्थुकता अनभावंकता आयतिं अनुप्पादधम्मा। तस्मा खीणासवो भिक्खु 'अनीघो'ति वुच्चति।..... सोतो ति खो, भन्ते, तण्हायेतं अधिवचनं। सा खीणासवस्स भिक्खुनो पहीना उच्छिन्नमूला तालावत्थुकता अनभावंकता आयतिं अनुप्पादधम्मा। तस्मा खीणासवो भिक्खु 'छिन्नसोतो' ति वुच्चति।- संयुत्तनिकाय, सलायतनवग्ग, चित्तसंयुत्त, पठमकाम-भूसुत्तं, पृष्ठ 1484)
4. धम्मपद, यमकवग्ग, श्लोक 1
5. धम्मपद 16.3
6. ये रागरत्तानुपतन्ति सोतं, सयं कतं मक्कटकोव जालं।- धम्मपद, 24.14
7. धम्मपद, यमकवग्ग, श्लोक 13
8. धम्मपद, यमकवग्ग, श्लोक 14
9. संयुत्तनिकायपालि-स्वामी द्वारिकादास षास्त्री, बौद्ध भारती, वाराणसी, सन् 2008 सगाथवग्ग, कोसलसंयुत, दुतियो वग्ग, पठमअपुत्तकसुत, पृष्ठ 147
10. सुत्तनिपात, उरगवग्ग, वसलसुत्त, श्लोक 129, पृष्ठ 26
11. धम्मपद, यमकवग्ग, श्लोक 3
12. धम्मपद, यमकवग्ग, श्लोक 4
13. धम्मपद, यमकवग्ग, श्लोक 5
14. धम्मपद, कोधवग्ग, श्लोक 1 की अट्ठकथा
15. धम्मपद, कोधवग्ग, श्लोक 2
16. धम्मपद, कोधवग्ग, श्लोक 3
17. धम्मपद, ब्राह्मणवग्ग, श्लोक 18
18. मज्झिमनिकाय, उपरिपण्णासकमिता,विभंगवग्ग, चूळ-कम्मविभंगसुत, सूत्र 5 पृष्ठ 1307

19. धम्मपद, नागवग्गो, श्लोक 1 एवं उसकी अट्ठकथा
20. संयुत्तनिकाय, सगाथवग्ग, ब्राह्मणसंयुत्त, अरहन्तवग्गो पठमो, असुरिन्दकसुत्त, पृष्ठ, 265
21. संयुत्तनिकाय, सगाथवग्ग, ब्राह्मणसंयुत्त, अरहन्तवग्गो पठमो, धनंजानीसुत्त, पृष्ठ, 260
22. संयुत्तनिकाय, सगाथवग्ग, ब्राह्मणसंयुत्त, अरहन्तवग्गो पठमो, अक्कोससुत्त, पृष्ठ, 263
23. जो उप्पतिं विनेति कोधं, विसटं सप्पविसं व ओसधेहि। सो भिक्खु जहाति ओरपारं, उरगो जिण्णमिवत्तचं पुराणं।। -सुत्तनिपात, उरगवग्गो, उरगसुत्तं, श्लोक 1
24. मज्झिमनिकाय, उपरिपण्णासक, विभंगवग्ग, चूळ-कम्मविभंगसुत, सूत्र 8, पृ1308-1309
25. संयुतनिकाय, सगाथवग्ग, वंगीससंयुत, पेषलसुत पृष्ठ 301
26. सुत्तनिपात, अट्ठकवग्ग, तुवटकसुत्त, गाथा 151-153
27. पहीनमानस्स अनासवस्स, देवापि तस्स पिहयन्ति तादिसो। धम्मपद,7.5
28. मज्झिमनिकाय, उपरिपण्णासक, देवदहवग्ग, महा-पुण्णमसुत, अहंकारममकारप्पहान, सूत्र 4 पृष्ठ 1104
29. धम्मपद, पण्डितवग्ग, श्लोक 9
30. संयुत्तनिकाय, सलायतनवग्ग,गामणिसंयुत्त, भद्रकसुत्त, पृष्ठ 1527-1529
31. संयुत्तनिकाय, सलायतनवग्ग, चित्तसंयुत्त, संयोजन-सुत्तं, पृष्ठ 1472-1474
32. संयुत्तनिकाय, सलायतनवग्ग, जम्बूखादकसंयुत्त, तण्हापञ्हासुत्त
33. धम्मपद, 24.12 एवं उसकी धम्मपदट्ठ कथा
34. धम्मपद, गाथा 8 और 9
35. संयुक्तनिकाय, सगाथवग्ग, देवतासंयुत्त, नळवग्ग, ओघतरण सुत्त, सूत्र 1
36. आत्म दर्शन- सत्यनारायण गोयन्का, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, ए-77, पहली मंजिल, कनॉट सर्कल, नई दिल्ली-110001, 12वां संस्करण, सन् 2005, पृष्ठ 142-145

-पोस्ट डॉक्टरल फेलो, संस्कृत विभाग,
जयरनारायण व्यास विश्वविद्यालय,
जोधपुर-342003 (राज.)

मंजिल है वीतरागता

सुश्री रक्षिता मेहता (सी.ए., सी.एस., एल.एल.बी.)

न राग हो न द्वेष हो, चित्त में न क्लेश हो,
हो शून्यता विचारों की, बस आत्मा ही शेष हो।

शुभ भाव की हो पूर्णता, पल-पल यही विचारणा,
मंजिल है वीतरागता, दृढ़ता से मन में धारणा।

ग़र सोच को कर आचरित, आगम वचन को पालना,
जीवन जो सुख आश्रित, उसे परम से जोड़ना।

न पुण्य की हो लालसा, न पाप से हो वास्ता,
परास्त करे कर्म सभी, चुने वही एक रास्ता।

मत बैठ समस्या से हार, वीर की यही पुकार,
स्वर्णिम अवसर जो खो दिया, मिले नहीं यह बार-बार।

बढ़ा कदम उस ओर जहाँ, समभाव ही सिरमौर हो,
समकित से जो बांधे रखे, वो साधना की डोर हो।

बनके प्रभु का आईना, आत्म-गुणों को संवारना,
प्रतिबिम्ब नयन से न देख, केवलज्ञान से ही देखना।

लक्ष्य बस एक है, नज़र उसी की ओर है,
मनुष्य भव दुर्लभ मिला, यही मुक्ति की छोर है।

तन से न अब नाता जुड़े, चेतन ही मेरी श्वास बने,
घर-घर जाकर थक चुके, सिद्धशिला अन्तिम वास बने।

-सुपुत्री श्री चन्द्रप्रकाशजी मेहता, शक्तिनगर रोड़ नं. 8, पावटा 'सी' रोड़, जोधपुर-342006 (राज.)

महामोहनीय कर्म : एक पर्यवेक्षण

श्री त्रिलोकचन्द जैन

कर्माधीन प्रत्येक प्राणी इस संसार में दु:ख से संतृप्त है। सभी प्राणियों की इस दु:ख परम्परा का मूल कारण संयोग है, जिसे कर्म विज्ञान के शब्दों में कर्म बंध कहा जाता है। जैसा कि कहा है- **'संजोग मूला जीवेण, पत्ता दुक्ख परम्परा।'**

वैसे तो प्रति समय सभी प्रमादी संसारी जीव 7 या 8 कर्मों का निरंतर बंध कर रहे हैं। लेकिन जैसे आज वैज्ञानिक सर्दी-गर्मी, हवा, वर्षा आदि के तारतम्य को मापने के लिए यंत्रों के रूप में थर्मामीटर, बेरामीटर आदि का उपयोग करते हैं। वैसे ही कर्मशास्त्र के विज्ञ कर्मबंध की तीव्रता-मंदता को मापने के लिए अनेक प्रकार से व्याख्या करते हैं।

(अ) कर्मबंध की तीव्रता-मंदता (तारतम्य) को मापने हेतु प्रथम प्रकार है-(1) स्पृष्ट (2) बद्ध (3) निद्धत और (4) निकाचित।[1]

(1) स्पृष्ट-कर्मबंध-जैसे किसी ने वस्त्र को पिसी हुई हल्दी के ढेर पर रख दिया तो हल्दी के रज-कण उस वस्त्र पर लग जाते हैं, परंतु वस्त्र को झटकने से वे रज-कण झड़ जाते हैं। इसी प्रकार स्पृष्ट कर्मबंध की अवस्था में भावसहित 'मिच्छा मि दुक्कडम्' कहने से वे कर्म झड़ जाते हैं।

(2) बद्ध-कर्मबंध- एक वस्त्र पर तेल लगा होने से वह चिकना है और उसको पिसी हुई हल्दी के ढेर पर रख दिया तो उस पर अधिक मजबूती से हल्दी के कण चिपक जायेंगे। जब तक उस वस्त्र को पानी और साबुन लगाकर न धोया जाए तब तक वह हल्दी का रंग नहीं उतरेगा। इस प्रकार का कर्मबंध बद्ध-कर्मबंध है जो आलोचना-प्रतिक्रमण आदि के द्वारा झड़ जाता है।

(3) निद्धत्त-कर्मबंध- एक वस्त्र ऐसा है जिस पर अलकतरा (ग्रीस) चिपका हुआ है। अलकतरे (ग्रीस) का गाढ़ा लेप साफ करने के लिए साबुन और पानी से काम नहीं चलेगा, उसके लिए उक्त कपड़े को मिट्टी के तेल से धोना पड़ता है तब जाकर वह अलकतरा निकलता है। इसी प्रकार निद्धत्त-कर्मबंध ऐसा है जो पूर्वोक्त आलोचनादि क्रियाओं से दूर नहीं होता, उसके लिए तपस्या, प्रायश्चित्त आदि सुदीर्घ एवं कठिन अनुष्ठान करना पड़ता है।

(4) निकाचित-कर्मबंध- चौथे प्रकार का वस्त्र तेल, अलकतरा (ग्रीस) और धूल के कण आदि से इतना मलिन हो गया है कि साबुन और मिट्टी का तेल लगाने पर भी उसका मैल नहीं छूटता। वह कपड़ा फट जायेगा लेकिन मैल नहीं छूटेगा। यह है निकाचित कर्मबंध जो प्रायश्चित्त, तप आदि से भी प्राय: नहीं छूटता। उसका पूर्ण फल भोगे बिना प्राय: छुटकारा नहीं होता।

श्री विजयलक्ष्मण सूरी ने कर्म फिलोसोफी में इन्हें (1) ढीला बंध (2) इससे जरा मजबूत बंध (3) इससे भी अधिक मजबूत बंध और (4) इन सबसे भी अत्यन्त पक्का बंध जो कभी खुल न सके, आदि के रूप में कहा है।

(ब) कर्मबंध की तीव्रता-मंदता को मापने हेतु द्वितीय प्रकार है-(1) एक स्थानिक (2) द्विस्थानिक (3) त्रिस्थानिक और (4) चतु:स्थानिक।

अशुभ प्रकृतियों के अनुभाग को नीम वगैरह के कड़वे रस की उपमा दी जाती है। इसका स्पष्टीकरण यह है कि जैसे नीम का रस कटुक होता है, वैसे ही अशुभ प्रकृतियों को अशुभ फल देने के कारण उनका रस बुरा समझा जाता है। यद्यपि इस बुरे रस के असंख्य

प्रकार हैं यानी एक-एक के असंख्य प्रकार जानना चाहिये, लेकिन उन सबका समावेश चार स्थानों में हो जाता है। इन चार प्रकारों को क्रमश: एकस्थानिक, द्विस्थानिक, त्रिस्थानिक और चतु:स्थानिक कहा जाता है। अर्थात् एकस्थानिक से तीव्र (1-25%), द्विस्थानिक से तीव्रतर (26-50%), त्रिस्थानिक से तीव्रतम (51-75%) और चतु:स्थानिक से अत्यन्त तीव्र (76-100%) का ग्रहण करना चाहिये। इनको इस तरह समझना चाहिये कि जैसे नीम का तुरंत निकला हुआ रस स्वभाव से ही कटुक होता है जो उसकी एकस्थानिक तीव्र अवस्था है। जब उस रस को अग्नि पर पकाने से सेर का आधा सेर रह जाता है तो वह कटुकतर हो जाता है, यह अवस्था द्विस्थानिक तीव्रतर है। सेर का तिहाई रहने पर कटुकतम हो जाता है, यह त्रिस्थानिक तीव्रतम अवस्था है और जब सेर का पाव भर रह जाता है जो अत्यन्त कटुक है, यह चतु:स्थानिक अत्यन्त तीव्र अवस्था होती है। यह अशुभ प्रकृतियों के तीव्र रस (अनुभाग) की चार अवस्थाओं का दृष्टान्त है।[2]

(स) कर्मबंध की तीव्रता-मंदता को नापने हेतु तृतीय प्रकार है-(1) अनन्तानुबंधी (2) अप्रत्याख्यानी (3) प्रत्याख्यानावरण और (4) संज्वलन।

(1) अनन्तानुबंधी- जो बन्ध अनन्त संसार का अनुबंध कराने वाले हैं उन्हें अनन्तानुबंधी कहते हैं। इस बन्ध के प्रभाव से आत्मा अनन्त काल तक संसार में परिभ्रमण करती है। यह बन्ध सम्यक्त्व का घात करता है और जीवन पर्यन्त बना रहता है और प्राय: नरक गति का बंध करता है।

(2) अप्रत्याख्यानी- जिस बन्ध से आत्मा यत्किंचित् भी त्याग-प्रत्याख्यान नहीं कर सकती, उसे अप्रत्याख्यानी बन्ध कहते हैं। यह बन्ध आत्मा को पापों से विरत नहीं होने देता। इस बन्ध की अवधि अधिक से अधिक एक वर्ष की मानी गई है। इस बन्ध से प्राय: तिर्यंचिगति में गमन होता है।

(3) प्रत्याख्यानावरण- जिसके बन्ध से सर्वविरति रूप प्रत्याख्यान अर्थात् श्रमण-धर्म (महाव्रत) की प्राप्ति नहीं होती वह प्रत्याख्यानावरण बन्ध है। इसकी स्थिति चार मास की है और इसके बन्ध से आत्मा प्राय: मनुष्य गति में जाती है।

(4) संज्वलन- जिस बन्ध से आत्मा को यथाख्यात चारित्र की प्राप्ति न हो, वह संज्वलन बन्ध है। यह केवलज्ञान की उत्पत्ति में बाधक बनता है। इस बन्ध की अधिक से अधिक अवधि पन्द्रह दिन की है और इस बन्ध के वशीभूत हुई आत्मा प्राय: देवगति में जाने योग्य कर्मों को ग्रहण करती है।[3]

कर्म के भेद तथा मोहनीय कर्म-

'तत्त्वार्थवार्तिक' में एक रूपक के द्वारा इस तथ्य को स्पष्ट करते हुए कहा है, 'जिस प्रकार विभिन्न बादलों का जल विभिन्न पात्रों में गिरकर भिन्न-भिन्न रसों में परिणत हो जाता है इसी प्रकार कर्म बन्ध भी आठ मूल-प्रकृति रूपी कर्म प्रकृतियों में परिणत हो जाता है। उनके नाम इस प्रकार हैं-(1) ज्ञानावरणीय (2) दर्शनावरणीय (3) वेदनीय (4) मोहनीय (5) आयुष्य (6) नाम (7) गोत्र और (8) अंतराय।

वस्तुत: मोह कर्म ही 8 कर्म है। क्योंकि इसके नाश होने पर शेष सात कर्म की सत्ता भी अवश्यमेव समाप्त हो जाती है। लेकिन जब विशेष रूप से कथन करते हैं तो मोहनीय कर्म 8 कर्मों का मेरुदण्ड है, जो आठों ही कर्मों को शक्ति प्रदान करता है।

निर्युक्तिकार ने भी आठ प्रकार के कर्मों को संक्षेप में मोह कहा है।[4] निर्युक्ति में मोह के एकार्थक नामों का उल्लेख किया गया है-पाप, वर्ज्य, वैर, पंक, क्षोभ, असाता, शल्य, कर्म, क्लेश, मलिन, माया तथा संपराय।

मोहनीय कर्म एकांत अशुभ होता है। इसका बंध सघन और चिकना होता है। इसका अनुबंध दु:खमय और दीर्घ स्थिति वाला होता है। तीव्र प्रयत्न से इसका क्षय होता है।

सामान्यतया मोहनीय कर्म का बंध छह कारणों से होता है-(1) तीव्र क्रोध करने से (2) तीव्र मान करने से (3) तीव्र माया करने से (4) तीव्र लोभ करने से (5) तीव्र दर्शनीय मोहनीय से (6) तीव्र चारित्र मोहनीय से।

उत्तर-प्रकृतियों की अपेक्षा से दर्शन मोहनीय तथा चारित्र मोहनीय कर्मबंध के कारण पृथक्-पृथक् बताये गये हैं। 'स्थानांग सूत्र' के अनुसार दर्शन मोहनीय कर्म के पाँच कारण बताये हैं[5]-(1) अरिहंत भगवन्तों का अवर्णवाद (निंदा) करने से (2) अरिहंत-प्रज्ञप्त धर्म का अवर्णवाद करने से (3) आचार्य-उपाध्याय का अवर्णवाद करने से (4) श्रमण-श्रमणी, श्रावक-श्राविका रूप चतुर्विध संघ का अवर्णवाद करने से (5) तपस्वी और ब्रह्मचारी का अवर्णवाद करने से मोहनीय कर्म का बंध होता है। क्रोध, मानादि कषाय और हास्यादि नौ कषायों में आसक्त चारित्र आत्मा चारित्र मोहनीय कर्म का बंध करती है। यह सब मोहनीय कर्म के बंध के कारण हैं। जब इन कारणों में तीव्र संक्लेश के साथ अशुभ अध्यवसाय हों तो वे महामोहनीय कर्म के कारण बन जाते हैं।

महामोहनीय कर्म-

मोहनीय कर्म के आगे 'महा' का लगना उसकी भयंकरता को द्योतित करता है। महामोहनीय कर्म का बंध जीव के पतन की निशानी है। उसका गर्त में जाने का कारण है। महामोहनीय कर्म कषाय, आसक्ति, द्वेष आदि विषम भावों की तीव्रता का परिणाम है।

आत्मा को आवृत्त करने वाले पुद्गल महामोहनीय कर्म कहलाते हैं। अध्यवसायों की तीव्रता या क्रूरता के होने से होने वाली प्रवृत्ति से होने वाला बंध महामोहनीय कहलाता है।

परिणामों की कलुषता, मलिनता, दूषितता आदि अत्यन्त तीव्र होती है तो उससे बड़े ही वज्रलेपोपम चिकने कर्म बंधते हैं, जिन्हें सिद्धांत की भाषा में महामोहनीय कहा जाता है। इनका क्षय होना अत्यन्त दुष्कर है।[6]

स्वरूप/लक्षण-

कर्मबंध की डिग्रियों के रूप में तीन प्रकार का विश्लेषण पूर्व में किया गया है। इसमें यह ध्यातव्य है कि महामोहनीय कर्म के स्वरूप में कर्मबन्ध की स्थिति की अपेक्षा न होकर उसके अनुभाग की तीव्रता की अपेक्षा है। निकाचित कर्म को महामोहनीय कर्म की संज्ञा दे सकते हैं क्योंकि यह तीव्र अशुभ अध्यवसायों का परिणाम है।

चतु:स्थानिक अशुभ अनुभाग का बंध भी महामोहनीय कर्म का एक रूप है। क्योंकि स्थिति अन्त:कोटाकोटि सागरोपम के बंध में भी चतु:स्थानिक महामोहनीय कर्म का अनुभाग बंध सकता है तो 70 कोटाकोटि सागरोपम की स्थिति में महामोहनीय कर्म का अनुभाग बंध सकता है।

अनंतानुबंधी कषाय के उदय में तीव्र संक्लेश परिणामों में महामोहनीय कर्म का बंध स्वीकार किया जाता है क्योंकि इसके तीव्र उदय में नरक गति में गमन भी अपेक्षा से निर्दिष्ट है।

वस्तुत: अनन्तानुबंधी कषाय के उदय में चतु:स्थानिक रस बंध के साथ कर्म पुद्गलों का निकाचित अवस्था को प्राप्त होना महामोहनीय कर्म का स्वरूप है।

स्वामी- महामोहनीय कर्मबंध के स्वामी प्रथम गुणस्थानवर्ती अनादि मिथ्यादृष्टि और प्रतिपाती मिथ्यादृष्टि होते हैं। तीव्र अशुभ अध्यवसाय में तीव्र अशुभता प्रथम गुणस्थान में ही हो सकती है। आगम में साधु को महामोहनीय कर्मबंध से बचने की बात कही वह वस्तुत: साधुत्व से नीचे गिरने से बचाने की अपेक्षा है। क्योंकि छठे गुणस्थानवर्ती साधु के लिए अशुभ चतु:स्थानिक कर्मबंध का होना शक्य नहीं है। महामोहनीय कर्म का बंध प्रथम गुणस्थान में ही संभव है।

बंध स्थान- समवायांग सूत्र के 30वें समवाय में तथा दशाश्रुतस्कंध की नवीं दशा में महामोहनीय

कर्मबंध के 30 स्थानों का वर्णन है। प्रश्नव्याकरण सूत्र की वृत्ति तथा उत्तराध्ययन सूत्र की वृत्ति में भी महामोहनीय कर्म बंध के 30 कारण बताये हैं। वे प्राय: समान हैं। समवायांग सूत्र में जो 2, 3, 4, 5वाँ महामोहनीय कर्मबंध का कारण है[7], दशाश्रुत स्कंध में वह क्रमश: 3, 4, 5वाँ तथा दूसरा कारण है। इस किंचित् परिवर्तन के अलावा शेष कारण समान क्रमांक से बताए गये हैं। ये प्रमुख 30 कारण हैं परंतु आसक्ति की तीव्रता से अन्य कारण भी हो सकते हैं।

18 पापों में समावेश–18 पाप की अवधारणा हमें अनेक स्थानों पर जानने को मिलती है। ऐसा लगता है कि प्रारम्भ में प्रथम पाँच पाप की ही गणना होती थी। क्योंकि प्रथम पाँच पापों का पूर्णत: परित्याग करके ही साधु जीवन को तथा अंशत: त्याग करके श्रावक जीवन को आत्मसात् किया जाता था। अगर एक दृष्टि से देखें तो प्रथम पाँच पापों में शेष पापों का समावेश हो सकता है। प्रसंगोचित महामोहनीय कर्मबंध के 30 कारण भी प्रवृत्ति रूप इन प्रथम पाँच पापों में समाविष्ट हो सकते हैं।

(1) प्राणातिपात (हिंसा)– प्राणों का अतिपात अर्थात् घात करने रूप प्रथम पाप में 1, 2, 3, 4, 5, 15, 16, 17 ये निम्नलिखित 8 बंध स्थान समाविष्ट होते हैं।

(1) त्रस प्राणियों को जल में डुबोकर या प्रचण्ड वेग वाली तीव्र जलधारा में डालकर मारता है, वह महामोहनीय कर्म का बंध करता है।

(2) प्राणियों के मुँह, नाक आदि श्वाँस लेने के मार्ग को हाथ आदि से अवरुद्ध कर अव्यक्त शब्द करते हुए मारता है, वह महामोहनीय कर्म बांधता है।

(3) अनेक प्राणियों को एक घर में घेरकर अग्नि के धुंए से उन्हें मारता है, वह महामोहनीय कर्म बंध करता है।

(4) किसी प्राणी के उत्तमांग (शिर) पर शस्त्र का प्रहार कर भेदन करता है, वह महामोहनीय कर्म का बंध करता है।

(5) तीव्र अशुभ परिणामों से किसी प्राणी के सिर को गीले चर्म के अनेक वेष्टनों से वेष्टित करता है, वह महामोहनीय कर्म का बंध करता है।

(6) सर्पिणी जिस प्रकार अपने ही अण्डों को खा जाती है, उसी प्रकार जो पालनकर्ता, सेनापति तथा कलाचार्य या धर्माचार्य को मार डालता है, वह महामोहनीय कर्म का बंध करता है।

(7) राष्ट्रनायक को, निगम के नेता को तथा लोकप्रिय श्रेष्ठी को जो मार डालता है, वह महामोहनीय कर्म का बंध करता है।

(8) अनेकजनों के नेता का तथा समुद्र में द्वीप के समान अनाथजनों के रक्षक का घात करता है, वह महामोहनीय कर्म का बंध करता है।

वैसे देखा जाए तो यह मात्र प्राणों का घात करना ही नहीं है, इसके साथ क्रोध, द्वेष आदि पाप भी जुड़ जाते हैं इसके कारण ही ये महामोहनीय कर्म का स्वरूप ले पाते हैं।

(2) मृषावाद (झूठ बोलना)– महामोहनीय के 30 प्रकार हैं। झूठ बोलने रूप यह पाप महामोहनीय कर्मबंध के 7, 8, 9, 19, 20, 21, 23, 26, 29 और 30 इन निम्नलिखित 10 कारणों को व्याख्यायित करता है।

(1) जो गूढ़ आचरणों से अपने मायाचार को छिपाता है, असत्य बोलता है और सूत्रों के यथार्थ अर्थों को छिपाता है, वह महामोहनीय कर्म का बंध करता है।

(2) जो निर्दोष व्यक्ति पर मिथ्या आक्षेप करता है, अपने दुष्कर्मों का उस पर आरोपण करता है, वह महामोहनीय कर्म का बंध करता है।

(3) भरी सभा में जान-बूझकर मिश्र भाषा बोलता है, वह महामोहनीय कर्म का बंध करता है।

(4) अज्ञानी अनन्त ज्ञान-दर्शन सम्पन्न जिनेन्द्र देव का अवर्णवाद-निन्दा करता है, वह महामोहनीय कर्म का बंध करता है।

(5) जो अनेक भव्य जीवों को न्याय मार्ग से भ्रष्ट करता है और न्यायमार्ग की द्वेषपूर्वक निन्दा करता है, वह महामोहनीय कर्म का बंध करता है।

(6) जिन आचार्य या उपाध्यायों से श्रुत और आचार ग्रहण किया है, उनकी ही जो अवहेलना करता है, वह महामोहनीय कर्म का बंध करता है।

(7) जो बहुश्रुत नहीं होते हुए भी अपने आपको बहुश्रुत, स्वाध्यायी और शास्त्रों के रहस्य का ज्ञाता कहता है, वह महामोहनीय कर्म का बंध करता है।

(8) चतुर्विध संघ में मतभेद पैदा करने के लिए जो कलह के अनेक प्रसंग उपस्थित करता है, वह महामोहनीय कर्म का बंध करता है।

(9) जो व्यक्ति देवों की ऋद्धि, द्युति, यश, वर्ण और बल-वीर्य का अवर्णवाद बोलता है, वह महामोहनीय कर्म का बंध करता है।

(10) जो अज्ञानी जिनेन्द्र देव की पूजा के समान अपनी पूजा का इच्छुक होकर देव, यक्ष और असुरों को नहीं देखता हुआ भी कहता है कि 'मैं इन सबको देखता हूँ' वह महामोहनीय कर्म का बंध करता है।

इन कारणों में केवल मृषावाद पाप की प्रवृत्ति ही नहीं साथ में माया, अभ्याख्यान, पैशुन्य, परपरिवाद, माया मृषावाद आदि पापों की प्रवृत्ति भी जुड़ जाती है। इसीलिए ये महामोहनीय कर्मबंध का स्वरूप ले लेते हैं।

(3) अदत्तादान- चोरी करना तीसरा प्रमुख पाप है। इसमें महामोहनीय कर्म बंध के 6, 13, 14, 22, 24, 25 ये निम्नांकित 6 कारण समाविष्ट होते हैं।

(1) जो किसी प्राणी को धोखा देकर भाले से या डंडे से मारकर हँसता है, वह महामोहनीय कर्म का बंध करता है।

(2) जो जिसका आश्रय पाकर आजीविका कर रहा है और जिसकी सेवा करके समृद्ध हुआ है, उसी के धन का अपहरण करता है, वह महामोहनीय कर्म का बंध करता है।

(3) जिनकी सहायता से सर्वसाधन सम्पन्न बना है, यदि ईर्ष्यायुक्त एवं कलुषितचित्त होकर उन आश्रयदाताओं के लाभ में अंतराय उत्पन्न करता है तो वह महामोहनीय कर्म का बंध करता है।

(4) जो व्यक्ति आचार्य, उपाध्याय की सम्यक् प्रकार से सेवा नहीं करता है तथा उनका आदर-सत्कार नहीं करता है और अभिमान करता है, वह महामोहनीय कर्म का बंध करता है।

(5) जो तपस्वी नहीं होते हुए भी अपने आपको तपस्वी कहता है, वह इस विश्व में सबसे बड़ा चोर है, अत: वह महामोहनीय कर्म का बंध करता है।

(6) जो समर्थ होते हुए भी रोगी की सेवा का महान् कार्य नहीं करता है अपितु 'मेरी इसने सेवा नहीं की है, अत: मैं भी उसकी सेवा क्यों करूँ' इस प्रकार कहता है। ऐसा व्यक्ति महामोहनीय कर्म का बंध करता है।

मात्र सामान्य चोरी के भाव के कारण ऐसा तीव्र बंध नहीं होता। जब इसके साथ द्वेष, मान, मिथ्यादर्शन शल्य आदि पापों का समावेश होता है तो ही महामोहनीय कर्मबंध का रूप प्राप्त होता है।

(4) अब्रह्म सेवन- अब्रह्म का सेवन करने रूप पाप में 11, 12, 28 वाँ ये अग्रांकित 3 कारण समाविष्ट होते हैं।

(1) जो बालब्रह्मचारी नहीं होते हुए भी अपने आपको बालब्रह्मचारी कहता है और स्त्रियों का सेवन करता है, वह महामोहनीय कर्म का बंध करता है।

(2) जो ब्रह्मचारी नहीं होते हुए भी-'मैं ब्रह्मचारी हूँ' इस प्रकार कहता है, वह मानो गायों के बीच गधे के समान बेसुरा बकता है और अपनी आत्मा का अहित करने वाला वह मूर्ख मायायुक्त झूठ बोलकर स्त्रियों में आसक्त रहता है, वह

महामोहनीय कर्म का बंध करता है।

(3) जो मानुषिक और दैवीय भोगों की अतृप्ति से उनकी बार-बार अभिलाषा करता है, वह महामोहनीय कर्म का बंध करता है।

मैथुन पाप के साथ रति-अरति आदि पापों का मिश्रण होने से यह कर्मबंध महामोहनीय का स्वरूप प्राप्त करता है।

(5) परिग्रह- 'मुच्छा परिग्गहो वुत्तो' अर्थात् मूर्च्छा ही परिग्रह है। इस पाप में 10, 18, 27वाँ ये निम्नलिखित 3 महामोहनीय कर्म बंध के कारण रखे जा सकते हैं।

(1) जो कूटनीतिज्ञ मंत्री किसी बहाने से राजा को राज्य से बाहर भेजकर राज्य-लक्ष्मी का उपभोग करता है, वह महामोहनीय कर्म का बंध करता है।

(2) जो पापों से विरत दीक्षार्थी को और तपस्वी साधु को धर्म से भ्रष्ट कर परिग्रह में धकेलता है, वह महामोहनीय कर्म का बंध करता है।

(3) जो श्लाघा या मित्रगण के लिए अधार्मिक योग करके वशीकरणादि का बार-बार प्रयोग करता है, वह महामोहनीय कर्म का बंध करता है।

इस मूर्च्छा परिग्रह पाप के साथ जब लोभ रूपी पाप भी जुड़ जाता है तब यह महामोहनीय कर्म का रूप लेता है।

जैन वाङ्मय में महामोहनीय कर्मबंध के उदाहरण-

(1) उपरिचरवसु[8]- इतिहास में आख्यान मिलता है कि हरिवंश की परंपरा के उपरिचरवसु ने अपने साथ सहपाठी रहे गुरुपुत्र पर्वत के प्रति राग भाव के कारण राज सभा में 'अज' शब्द का सही अर्थ जानते हुए भी गलत अर्थ किया। जिससे यज्ञों में हिंसा का महाभयंकर प्रतिपादन हुआ। लोगों में अच्छा दिखने के लिए 'मिश्रभाषा' का प्रयोग करने रूप 9वें कारण से महामोहनीय कर्म का बंध करके दुर्गति का अधिकारी बना।

(2) जमदग्नि पुत्र परशुराम[9]-मातृ-हत्या, नृप-हत्या एवं सात बार इस पृथ्वी को क्षत्रिय विहीन करने वाले परशुराम ने बड़ी मात्रा में मनुष्य जाति का घात किया। तलवार आदि शास्त्र से मस्तक आदि काटकर मारने से वह दुर्गति का अधिकारी बना। महामोहनीय कर्मबंध के 15वें व 17वें कारण की प्रवृत्ति करके नरकगामी बना।

(3) ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती[10]- ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती पूर्वभव में साधुपने में निदान के कारण चक्रवर्ती बना। चक्रवर्ती बनने पर पूर्व के 5 भवों के साथी चित्तमुनि द्वारा अनेक प्रकार से समझाने पर भी ब्रह्मदत्त अपने चक्रवर्ती संबंधी भोगों में आसक्त होने से उन्हें छोड़ने में समर्थ न हो सका। मनुष्य संबंधी भोगों में तीव्र आसक्त होने से महामोहनीय कर्मबंध के 28वें कारण से नरकगामी बना।

(4) सम्भूम चक्रवर्ती-चक्रवर्ती छह खण्ड का अधिपति होता है। इससे ज्यादा का स्वामित्व उसे प्राप्त नहीं होता। परंतु सम्भूम चक्रवर्ती तीव्र आसक्ति एवं महत्त्वाकांक्षा के कारण सातवें खण्ड को साधने गया। इसके फलस्वरूप महामोहनीय कर्म के 19वें, 20वें कारण से वह दुर्गति का अधिकारी बना।

(5) तन्दुल मत्स्य-चावल के दाने के बराबर की अवगाहना वाला तन्दुल मत्स्य मगरमच्छ की भौंह पर बैठा-बैठा केवल अनेक मछलियों को मारने की भावना से ही दुर्गति गामी हुआ। महामोहनीय कर्म के बंध के प्रथम कारण का सेवन करने से उसने अपना पतन कर लिया।

जिज्ञासाएँ/समाधान-

जिज्ञासा- 25वाँ स्थान वैयावृत्त्य नहीं करने से संबंधित होने पर महामोहनीय कर्मबंध में कैसे लिया जाए? क्योंकि इसमें न तो क्रूर परिणाम है और न ही हिंसाचरण?

समाधान- महामोहनीय कर्म के बंध का मापदण्ड मात्र हिंसात्मक प्रवृत्ति नहीं है। जब आत्म गुणों की जबरदस्त हानि हो तो उस समय भी जीव

महामोहनीय कर्म का बंध कर सकता है। समर्थ होते हुए भी रोगी की सेवा नहीं करना, सेवारूपी इस महान् कार्य का अपमान ही नहीं अपितु आत्म गुण अनुकम्पा की महान् हानि भी है। जब जीव के अन्तर से अनुकम्पा समाप्त हो जाती है तब ही वह सेवा को भूलकर अपने अनन्तानुबंधी मान को पोषित करता है और महामोहनीय कर्म का बंध करता है।

जिज्ञासा– 27वाँ स्थान मित्र बनाने के लिए अधार्मिक योग अर्थात् वशीकरण आदि का प्रयोग करना है। इसमें भी हिंसादि का प्रंसग नहीं होने से महामोहनीय कर्मबंध कैसे?

समाधान– जीव अपने व्यवहार से मित्र आदि का संग्रह करे तो कर्म के विशेष बंध का कारण नहीं होता। परन्तु अपने अहंपोषण तथा दूसरों पर अधिकार जमाने रूप दुर्गुणों को अपना कर वशीकरण मंत्र आदि का दुरुपयोग करता है तो महामोहनीय कर्म ही बनता है।

जिज्ञासा– 18वाँ स्थान दीक्षार्थी, संयमी को धर्म से भ्रष्ट करना है। इससे महामोहनीय कर्मबंध का संबंध किस प्रकार हो सकता है?

समाधान– दीक्षार्थी, संयमी आत्म धर्म को अपनाकर सभी जीवों के लिए हितकारी प्रवृत्ति करने वाले होते हैं। सूक्ष्म से सूक्ष्म जीव की पीड़ा को जानकर समस्त छह काय जीवों के अभयदाता बनते हैं। उन छह काय के जीवों के अभयदाता को धर्म से पतित करने पर भविष्य में जितनी भी हिंसा उनके द्वारा होगी, उसके निमित्त रूप में होने से महामोहनीय कर्मबंध करने वाला हो जाता है।

जिज्ञासा– त्रस की विराधना से संबंधित कितने महामोहनीय कर्मबंध के स्थान हैं?

समाधान– वर्णित 30 महामोहनीय कर्मबंध के स्थानों में 1 से 6, 8, 10, 13 से 17, 19, 20, 25 से 29 तक के 20 स्थान त्रस विराधना से संबंधित कहे जा सकते हैं। वस्तुत: सभी स्थानों में कहीं न कहीं हिंसा का आचरण तो है ही चाहे वह आत्मगुणों की हिंसा से ही संबंधित हो। त्रस जीवों की विराधना के इन 30 स्थानों के अलावा भी अनेक महामोहनीय कर्मबंध के स्थान संभव हैं।

जिज्ञासा– सभा में भाषण देते हुए किन-किन महामोहनीय कर्मबंध के स्थानों से बचने की आवश्यकता होती है?

समाधान– सभा में भाषण देते हुए 7, 9, 19, 20, 23, 26 इन 6 स्थानों से बचने की अति आवश्यकता रहती है। क्योंकि सभा में दिया गया भाषण अनेक श्रोताओं के लिए आचरणीय बन सकता है। यदि भाषण में कुछ भी उक्त स्थानों से संबंधित प्रवृत्ति होती है और उसके पीछे दुर्भावना रहती है, तो महामोहनीय कर्मबंध की आशंका बन जाती है।

उपसंहार–

हिंसा, निर्दयता, क्रूरता, कठोरता, पाशविकता का जब अन्त:करण में उभार होता है तब व्यक्ति दूषित से दूषित, हीन से हीन कर्म करता हुआ नहीं सकुचाता। उस समय उसके परिणामों की धारा, लेश्याएँ अशुभ से अशुभतर हो जाती हैं। आत्मप्रशंसा, यशस्विता, कीर्तिकांक्षा जब सीमा पार करने लगती है तब व्यक्ति विविध प्रकार के माया एवं प्रवंचनापूर्ण व्यवहारों द्वारा अपने आपको, जैसा कि वह नहीं है, दिखलाने का जघन्य पाप करता है।

अभिमान या दंभ भी एक ऐसा भयानक रोग है, जो आत्म साधना में घोर विघ्न उपस्थित करता है।

इस प्रकार घोर हिंसाप्रवण, क्रूर, नितांत स्वार्थपूरित, अहंमन्यता और दंभयुक्त परिणामों से मलिनचेता पुरुष नीच से नीच कर्म करता हुआ भी नहीं सकुचाता।

सारांश यह है कि इन तीस महामोहनीय कर्मबंध के स्थानों में कषाय की तीव्रता के साथ जीव की हिंसकवृत्ति, विश्वासघात, कृतघ्नता, परनिन्दा, विपरीत प्ररूपणा, आशातना, भोगवती बुद्धि, कामवासना आदि दुर्गुणों का प्राबल्य बताया गया है।

विशेष बात तो यह है कि महामोहनीय कर्म जो कि आत्मा को विशेष भारी करने वाले हैं, उनका भी नाश संभव है। जीव की ताकत अपरिमित है। वह विशेष पुरुषार्थ द्वारा क्रूर परिणामों में बंधे निकाचित कर्मों को भी समाप्त करने का साम्यर्थ्य रखता है। अंतर में पश्चात्ताप की ज्वाला जले, वो भी विशिष्ट क्रियानुष्ठान के साथ तो इनका खात्मा संभव है। गुरुदेव के शब्दों में– ''भूल करने के लिए कोई समय अच्छा नहीं है और भूल का सुधार करने के लिए कोई समय बुरा नहीं है।'' कषाय की तीव्रता से यदि पूर्व में महामोहनीय कर्म का बंध भी हो गया तो वह भी या तो काल के परिपाक से उदय होकर निर्जरित होगा या विशिष्ट पुरुषार्थ द्वारा अपवर्तन कर निर्जरित होगा। अन्त में शास्त्र के वचनों से ही इसका समापन करता हूँ।

एवं अभिसमागम्म, सूरा दढपरक्कमा।
सव्वमोहविणिमुक्का, जाइमरणमतिच्छिया।।[11]

जो दृढ़ पराक्रमी, शूरवीर इन सभी स्थानों को जानकर उन मोहबन्ध के कारणों का त्याग कर देता है, वह जन्म–मरण का अतिक्रमण करता है, अर्थात् संसार से मुक्त हो जाता है।

संदर्भ सूची–

1. साध्वी युगलनिधि-कृपा, कर्म संहिता, प्रथम आवृत्ति-2006, मैत्री चेरिटेबल फाउण्डेशन, नईदिल्ली, पृष्ठ 146-147
2. श्री मिश्रीमलजी म.सा., कर्मग्रन्थ भाग-5, तृतीय आवृत्ति-2015, श्री मरुधरकेसरी साहित्य प्रकाशन समिति, जोधपुर-ब्यावर, पृष्ठ 181
3. साध्वी युगलनिधि-कृपा, कर्म संहिता, प्रथम आवृत्ति-2006, मैत्री चेरिटेबल फाउण्डेशन, नईदिल्ली, पृष्ठ 204-205
4. आचार्य महाप्रज्ञ, आचार्य महाश्रमण, दसाओ, प्रथम आवृत्ति-2014, जैन विश्व भारती, लाडनूँ, पृष्ठ 155
5. युवाचार्य श्री मधुकरमुनिजी म.सा., स्थानांगसूत्र, द्वितीय आवृत्ति-2016, श्री आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर
6. नेमीचंद बांठिया-पारसमल चण्डालिया, त्रीणि छेदसूत्राणि, द्वितीय आवृत्ति-2007, श्री अ. भा. सुधर्म जैन संस्कृति रक्षक संघ, जोधपुर, पृष्ठ 106
7. युवाचार्य श्री मधुकरमुनिजी म.सा., समवायांगसूत्र, द्वितीय आवृत्ति-2016, श्री आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर
8. आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा., जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग-1, चतुर्थ आवृत्ति-1999, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर, पृष्ठ 318
9. वही, पृष्ठ 290-297
10. वही, पृष्ठ 438
11. युवाचार्य श्री मधुकरमुनिजी म.सा., त्रीणि छेदसूत्राणि, द्वितीय आवृत्ति-2016, श्री आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर, पृष्ठ 76, 79

-37/67, रजत पथ, मानसरोवर, जयपुर-302020 (राज.)

विवाह का अनुकरणीय उदाहरण

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के उद्घोष को ध्यान में रखते हुए चेन्नई में रात्रिभोजन, जमीकन्द आदि का निषेध रखकर विवाह आदि समारोह आयोजित किए जा रहे हैं। उसी कड़ी में 03 जुलाई 2017 को श्री बस्तीमलजी चोरडिया के सुपौत्र एवं श्री श्रेणिककुमारजी चोरडिया के सुपुत्र चि. कुणाल के शुभविवाह का प्रारम्भ 29 जून को सामूहिक सामायिक के साथ हुआ। विवाह के सभी कार्यक्रमों में 6 दिन जमीकंद, बरक, फूल आदि का प्रयोग नहीं हुआ। दोनों पक्षों की ओर से सभी भोज दिन में ही दिए गए। चेन्नई के स्थानीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ द्वारा दोनों पक्षों को सम्मानित किया गया। वधू पक्ष श्री चैनराजजी एवं श्री सुभाषचन्द जी पगारिया, तिनातुर, चेन्नई था। विवाह में 31 व्यंजनों से अधिक नहीं रखे गए। चेन्नई में इस प्रकार के विवाहों को निरन्तर प्रोत्साहित किया जा रहा है।**-सम्पादक**

आत्मशुद्धि का साधन है 'क्षमा'

श्री राजीव माथुर (नेपालिया)

'पर्युषण पर्व' आत्म-शुद्धि का पर्व है। यह सत्य, अहिंसा और प्रेम का प्रतीक है एवं इसका एक आध्यात्मिक महत्त्व भी है। इस पर्व के आठ दिनों में धर्मनिष्ठ श्रावक एवं श्राविकाएँ धर्म-स्थान में विराजित साधु-साध्वियों की सन्निधि में आकर संयमित, त्यागमय जीवन व्यतीत करते हैं। इस पर्व में जप, तप, साधना, आराधना, उपासना, सामायिक, प्रतिक्रमण आदि की साधना की जाती है। यह पर्व जैन एकता का प्रतीक है। जैन समाज इसे बड़ा ही महत्त्व देता है। इस पर्व में श्रावक-श्राविकाएँ जागृत होकर साधना में लीन हो जाते हैं। यह पर्व न सिर्फ जैनियों के लिए अपितु समस्त मानव जाति के लिए मंगलकारी, आत्म-कल्याणकारी, विश्व-बंधुत्व के भाव बढ़ाने वाला, ज्ञान-आचरण की प्रेरणा देने वाला पर्व है।

यह पर्व विषय और कषाय के दलदल में दबी हुई चेतना को जागृत कर उसे साधना पथ में आगे बढ़ाने का अपूर्व अवसर है। अन्तर में लीन होकर आत्मा को परमात्मा बनाने की प्रक्रिया इन दिनों में की जाती है। महापुरुषों के साधनामय जीवन के प्रसंग सुनकर साधना में कदम आगे बढ़ाने की प्रेरणा मिलती है। मैत्री भाव से अपने मन को सुगंधित बनाकर मन में पड़ी द्वेष की दुर्गंध को दूर करना है, क्योंकि यह द्वेष न केवल मन को अपितु हमारे सारे अस्तित्व को दुर्गंधमय बना देता है। मैत्रीभाव इसी दुर्गंध को दूर करके अमृत का वर्षण करता है।

पर्युषण का विशेष दिन है-'संवत्सरी'। क्योंकि इस दिन प्रत्येक व्यक्ति वैर भाव को भूलकर, एक-दूसरे से क्षमायाचना कर अपने में ताजगी एवं नवीनता का अनुभव करते हैं। जो सिर्फ वाणी से ही नहीं अपितु मन की गहराई से मैत्री के भाव प्रकट कर परस्पर क्षमा करते हैं, वे पर्युषण पर्व को सार्थक बनाते हैं। पर्युषण के पूर्व के दिनों में की गई तप-आराधना की परिणति क्षमा भाव में होती है, तभी तप की सार्थकता है, उपयोगिता है।

मानव बचपन से बुढ़ापे तक कई गलतियाँ करता है। उन गलतियों को गलती के रूप में स्वीकार कर, उनको न करने का प्रण लेकर आगे बढ़ता है तो बहुत उन्नति करता है। इसी परिप्रेक्ष्य में वह दूसरों को भी अपने सदृश समझे तो दूसरों की गलतियों को भी सहजता से क्षमा करने का सामर्थ्य उसमें विकसित हो जाता है। वह यह सोचकर सदैव प्रसन्न रहता है कि ये भी अपनी गलतियों को एक दिन सुधार लेंगे। अतः क्षमा का मानव जीवन में बहुत बड़ा महत्त्व है। यदि कोई इंसान गलती करे और उसके लिए वह माफी मांग ले तो सामने वाले का गुस्सा काफी हद तक दूर हो जाता है। जिस तरह क्षमा मांगना इंसान के जीवन का एक अच्छा गुण है, उसी तरह किसी को क्षमा करना भी उसके व्यक्तित्व में चार चाँद लगाने का कार्य करता है। क्षमा प्रेम का पोषक है। प्रतिक्रमण करते समय भी कहा जाता है कि- 'मैं सभी जीवों को क्षमा करता हूँ। सभी जीव मुझे क्षमा करें।' हमें दूसरों के अलावा अपने आपको भी माफ करना जरूरी है। क्योंकि हमसे भी अक्सर गलतियाँ हो जाती हैं। स्वयं द्वारा कृत गलतियों से भी हम कभी-कभी अपराध और आत्मग्लानि के बोझ से कुण्ठित हो जाते हैं। इसलिए उस गलती को ना दोहराने का प्रण लेते हुए स्वयं को भी माफ कर देना चाहिए।

कोई क्षमा करेगा या नहीं ऐसे विचारों को अपने दिल से निकालकर जो व्यक्ति अपने शत्रु या प्रतिद्वंद्वी के समक्ष स्वयं उपस्थित होकर सरल हृदय से क्षमा मांग लेता है, वही विनम्र और क्षमाशील कहलाता है। क्योंकि हमारा मन दूसरे के दोषों एवं भूलों को शीघ्र भूलने को तैयार नहीं होता। इसलिए वाणी द्वारा हुए घावों को भरने के लिये एवं टूटे हुए दिलों को जोड़ने के लिए सिर्फ एक ही उपाय है, और वह है-'क्षमा'।

-मुंशी हाउस, क्षेत्रपाली चबुतरा,
जुनी धान मण्डी, जोधपुर-342001 (राज.)

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. श्वेता जैन

योगसार संग्रह- *तीर्थंकर*- श्री गुरुदासजी, ***सम्पादक एवं अनुवादक***-डॉ. शुद्धात्मप्रकाश जैन, ***प्रकाशक*** - सोमैया पब्लिकेशन, 172, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय बिल्डिंग, तीसरा माला, एम.एम.जी.एस. मार्ग, दादर (पूर्व), मुम्बई-400014 (महा.), ***पृष्ठ***-44, ***मूल्य***- 80 रुपये मात्र, सन् 2017

'ध्यानाभ्यासोऽपवर्गदः' ध्यान का अभ्यास मोक्ष का प्रदायक है, अतः मुमुक्षुओं को ध्यान साधना के लिए प्रयत्न करना चाहिए। शुद्ध आत्मा को जानने वाले अन्तरात्मा और प्रमादरहित योगी ध्यान की वायु से कर्मों को नष्ट करते हैं। संसार से भयभीत और मोक्ष की आशा रखने वाले धीर प्राणियों को ध्यान की सिद्धि के लिए गृहवास का त्याग करना चाहिए। लेखक ने सुख-दुःख को परिभाषित करते हुए कहा है-

"न दुखं न सुखं किंचित्संसारे परमार्थतः।
वासनावासितो जन्तुर्दुखं सौख्यं च मन्यते।।"

संसार में परमार्थतः न सुख है और न दुःख है, किन्तु वासना से ग्रस्त जीव संसार में दुःख और सुख मानता है। दुःखी व्यक्ति सुखी को देखकर अपने को और अधिक दुःखी मानता है और सुखी व्यक्ति दुःखी व्यक्ति को देखकर अपने को और अधिक सुखी मानता है, इस प्रकार ये दोनों (सुख-दुःख) ही संकल्प से उत्पन्न हैं।

इन विचारों से परिपूर्ण 158 अनुष्टुप् छन्दों में निबद्ध इस लघु ग्रंथ में ध्याता, ध्यान, ध्येय और ध्यान का फल चार प्रकरणों में समाहित है। स्थान-स्थान पर जप मंत्रों की आराधना के प्रसंग और विधि का वर्णन उपलब्ध है। आर्त्त-रौद्र ध्यान, कर्मध्यान, शुक्लध्यान, पिण्डस्थ, पदस्थ, रूपस्थ और रूपातीत ध्यान, द्वादश अनुप्रेक्षाएँ, ध्यान फल आदि के संक्षिप्त वर्णन हैं। सम्पादक एवं अनुवादक श्री जैन ने सन्मतितर्क, ज्ञानार्णव, द्रव्यसंग्रह, ध्यान शतक, तत्त्वार्थ सूत्र से योगसार संग्रह की तुलना करते हुए महत्त्वपूर्ण टिप्पणियाँ की हैं। इस ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद उपलब्ध करावकर आपने हिन्दी जगत् में सराहनीय कार्य किया है।

जैन लोक का पारदर्शी मन- डॉ. महेन्द्र भानावत, ***प्रकाशक*** - रिसर्च फाण्डेशन फॉर जैनोलॉजी, सुगन हाउस, 18, रामनुजा अय्यर स्ट्रीट, साहुकारपेट, चेन्नई-600079 (तमिलनाडु), फोन नं. 044-25298082, 25296567, ***पृष्ठ***-260, ***मूल्य***- 150 रुपये मात्र, सन् 2017

यह पुस्तक मेवाड़ और उसके आस-पास के परिवेश की जैन लोक संस्कृति का दस्तावेज है। लोक की अनेक परिभाषाओं का अंकन कर डॉ. भानावत ने समग्रता से लोक के स्वरूप को उकेरने का प्रयास किया है। वे बताते हैं कि लोक वह है जो दिखावे से दूर अपनी सहज और परिपाटीगत प्रवृत्तियों की पगडंडी पर निर्बाध चलता है। वह आस्था और विश्वास की डोर से आबद्ध होता है। उसके आचार-विचार के सम्पादन के मूल में सामुदायिक मंगल की वह भावना निहित होती है जो आभिजात्य अथवा संस्कृत समाज में केवल अपने परिवार तक ही सीमित रहती है।

21 अध्यायों में लेखक ने अपने अनुभवों से योजित लोक जीवन में रची बसी जैन परम्पराओं को, पर्वों को और संत-जीवन को अपनी अंकनी का विषय बनाया है। जैन लोककला, देशी जैन संगीत, स्वप्न, तपस्वी जीवन, मृत्यु-पूर्व मंगल-मरण की दर्शना, कथा कहानियों में जैनत्व परिदर्शन, कठपुतलियों में महावीर युगीन चेतना, जैनेतर जातियों में जैनत्व की प्रभावना सम्बन्धी समीक्षात्मक विचारों से परिपूर्ण लेखों का निबन्धन भी किया गया है। 'बाल दीक्षा : बुराई नहीं' शीर्षक के अन्तर्गत कहा गया है कि बाल-दीक्षा सार्थक जीवन की सफल परिणति है। 8 से 11 वर्ष की उम्र में दीक्षा लेने वाले जीवन में अधिक सफल, अधिक प्रतिभावान तथा आदर्शवान रहे हैं। जैसे- आचार्य हस्तीमलजी, आचार्य तुलसीजी, आचार्य देवेन्द्रमुनिजी, आचार्य महाप्रज्ञजी, शंकराचार्यजी, स्वामी नारायण,

हेमचन्द्राचार्य आदि। बाल-दीक्षा की परम्परा न केवल जैनों में, अपितु बौद्धों, ईसाइयों, वैष्णवों रामस्नेहियों तथा अन्य धर्म संघों एवं सम्प्रदायों में भी देखने को मिलती है। अन्त में लेखक ने जैन दिवाकर चौथमलजी, आचार्य हस्तीमलजी, आचार्य महाप्रज्ञजी, आचार्य गणेशीलालजी, आचार्य नानालालजी से सम्बद्ध अनुभवों को स्वतंत्र अध्यायों में व्यक्त किया है।

कषाय

डॉ. रमेश 'मयंक'

संसार की समस्याओं का मूल- कर्म
कर्मों का मूल- कषाय
जो-मानव को
पतन के गर्त में गिराता
जीवन में पाप-संताप बढ़ाता
क्रोध-प्रीति नाशक बन जाता
मान-विनय को नष्ट करवाता
कपट से मित्रता का नाश
लोभ-बुद्धि में विकृतियाँ लाता।

कषाय मुक्ति ही है
जीवन में उपयोगी
अन्यथा
बना रहता है व्यक्ति दुर्योगी।

मत मानो अल्प
ऋण, घाव, आग और कषायों को
क्रोध पर नियंत्रण
मानव को बनाता सम्पन्न
किन्तु-
जब क्रोध हावी हो जाता
जीवन विपत्तियों से युक्त हो जाता।

कषाय से बचना
अपरिमित ऊर्जा का संचयन करना,
सहिष्णु, विवेकवान, क्षमाशील कहलाना
सर्वप्रिय-दूरदर्शी बन जाना
पारिवारिक क्लेश, सामाजिक विग्रह से
बच जाना।
साधना, उपासना, तपस्या का
प्रत्येक पल कषायों को कम करता है
क्षमाशील पतन के गर्त में नहीं गिरता है
आओ- कषायों का करें शमन
संयम, तप साधना में लगाएं मन।

-बी-8, मीरा नगर, चित्तौड़गढ़-312001 (राज.)

क्षमा : जीवन का अमृत

श्री अभय कुमार जैन

1. जीवन में एक बात हमेशा याद रखें, यदि हमारे कारण किसी को गुस्सा आ जाये तो सॉरी कहना ना भूलें। जरा भी देर न लगायें, तुरन्त सॉरी कह दें, सॉरी शब्द बड़ा पॉवरफुल है। सामने वाले के टेम्परेचर को एक ही क्षण में 50 प्रतिशत कर देगा। जीवन में दो शब्द 'धन्यवाद', 'कृपया माफ करें' हमेशा इस्तेमाल करें। शुक्रिया (धन्यवाद) देते ही वह कृतज्ञ हो जायेगा। सॉरी कहने से क्रोध के वातावरण में तत्काल नमी का संचार हो जायेगा।
2. हमारा दिमाग तिजोरी है कचरा पेटी नहीं, इसलिए दूसरों की तुच्छ बातों का संग्रह नहीं करना चाहिए। हृदय को विशाल बनाकर दूसरों की बुरी बातों को भूल जाना ही उत्तम क्षमा है। मनुष्य को सुखी जीवन का सूत्र देते हुए बर्ट्रेण्ड रसेल ने कहा- ''वही मनुष्य सुखी है जो अन्य पुरुषों के साथ अपने सम्बन्धों को न तो अचानक तोड़ देता है और न उनमें विषैलापन उत्पन्न होने देता है।''
3. क्षमादान करना महापुरुषों का प्रमुख लक्षण है। मनीषियों का कथन है कि जो लोग न क्षमा मांगना जानते हैं और न क्षमा करना, वे अपने लिए इस धरती पर नरक की सृष्टि कर लेते हैं। अंग्रेजी के कवि अलक्जेंडर पोप ने कहा है- 'गलती करना मानवीय कार्य है और क्षमा करना ईश्वरीय। मानव की महानता क्षमा करने में है।

-'तृप्ति', बंदा रोड़, भवानी मण्डी, जिला-झालावाड़ (राज.)

युवक-परिषद्

ग्रीष्मकालीन धार्मिक शिविर-2017 : एक विवरण

श्री नमन मेहता

पूज्यप्रवर आचार्यदेव 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पण्डित रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. की शुभपावन सम्प्रेरणा से सन् 2010 में आचार्य श्री हस्ती जन्म शताब्दी वर्ष से प्रारम्भ हुई शिविर शृंखला अपने 8 वर्षों की यात्रा के साथ प्रगति की ओर अग्रसर है। शिविर के माध्यम से जिनशासन की उन कलियों को खिलाने का मौका मिलता है जो आगे चलकर ज्ञान-ध्यान-क्रियापथ का पुष्प खिलायेगी । ये शिविरार्थी ही इन शिविरों के माध्यम से सीखकर ज्ञानदाता, अभयदाता, सुपात्रदाता के व्यवहार को आचरण में परिपूर्ण करेंगे । इन शिविरों से शिविरार्थी भी सीखते हैं, हम भी सीखते हैं, कुछ शिविरार्थी हमको सिखा जाते हैं और शायद कुछ हम इनको। ये शिविर शिविरार्थियों के लिये शिक्षण यात्रा होती है तो हमारे लिये अनुभव यात्रा ।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के तत्त्वावधान में 13 से 28 मई तक लगे इन शिविरों की गंगा से राजस्थान और महाराष्ट्र की धरा के कई अंचल लाभान्वित हुए। इस बार भी प्रतिवर्ष की भाँति मारवाड़, पल्लीवाल, पोरवाल, मध्य राजस्थान, खानदेश का उत्साह चरम पर था। सभी स्थानों पर शिविरार्थियों के आंकड़े इस प्रकार हैं-

महाराष्ट्र खानदेश- महाराष्ट्र के शिविर-स्थल एवं शिविरार्थियों की संख्या- 1.जलगाँव दादावाड़ी (60), 2. जलगाँव जैन भवन (80), 3. जलगाँव सागर भवन (115), 4. जलगाँव स्वाध्याय भवन (100), 5. जलगाँव जीवराज भवन (80), 6. भुसावल (80), 7. जामनेर (80), 8. फत्तेपुर (50), 9. बोदवड़ (80), 10. कजगाँव (60), 11. भड़गाँव (60), 12. पाचोरा (60)।

पोरवाल संभाग- पोरवाल संभाग के शिविर-स्थल एवं शिविरार्थियों की संख्या-1. सवाईमाधोपुर शहर (140), 2. सवाईमाधोपुर, आ. मण्डल (70), 3. सवाईमाधोपुर, आलनपुर (30), 4. सवाईमाधोपुर, मण्डी रोड (97), 5. सवाईमाधोपुर, बजरिया (120), 6. सवाईमाधोपुर,आदर्श नगर(30), 7. कुश्तला (52), 8. चौथ का बरवाड़ा (85), 9. अलीगढ़-रामपुरा (75), 10. उखलाना (200), 11. जैनपुरी (100), 12. दूनी (80), 13. देई (101), 14. सुमेरगंजमण्डी (55), 15. कोटा - रामपुरा (75), 16. कोटा - महावीर नगर (90)।

पल्लीवाल संभाग-पल्लीवाल संभाग के शिविर-स्थल एवं शिविरार्थियों की संख्या- 1. गंगापुरसिटी (95), 2. हिण्डौन सिटी (143), 3. महुआ (46), 4. मण्डावर (55), 5. गढ़ी सवाईराम (35), 6. बिचगाँव (30), 7. हरसाना (62), 8. सैन्थली (25), 9. खोह (24), 10. खैरली (150), 11. नदबई (32), 12. भरतपुर-बासनगेट (67), 13. अलवर (37)।

मध्य राजस्थान संभाग- मध्य राजस्थान के शिविर-स्थल एवं शिविरार्थियों की संख्या- 1. किशनगढ़ शहर (35), 2. मदनगंज (120), 3. वैशाली नगर, अजमेर (107), 4. महावीर नगर, अजमेर (80)।

मारवाड़ संभाग- मारवाड़ संभाग के शिविर-स्थल एवं शिविरार्थियों की संख्या- 1. पाली (180), 2. बाड़मेर (150), 3. नागौर (105), 4. पीपाड़ सिटी (105), 5. भोपालगढ़ (51), 6. गोटन (42), 7. मेड़ता सिटी (45)।

अन्य क्षेत्र- अन्य क्षेत्रों के अन्तर्गत-1. जयपुर में 12 केन्द्रों पर, 2. जोधपुर में 10 केन्द्रों पर, 3. चैन्नई में 3 केन्द्रों पर शिविर लगे।

शिविरों में कुछ नयापन लाने का भाव रहता है और परिवर्तन होना भी चाहिये, परिवर्तन प्रगति का द्योतक है । पूर्व वर्ष में जो परिवर्तन किये गये, उनको उसी भाँति रखते हुए इस बार विशेष रूप से यात्रा कार्यक्रमों को व्यवस्थित एवं परिवर्तित किया गया। यात्रा कार्यक्रम में अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के ऊर्जावान कार्यकर्त्ताओं एवं प्रमुखजनों का अभूतपूर्व सहयोग प्राप्त हुआ।

इस वर्ष की निरीक्षण यात्रा कार्यक्रम में 16 से18 मई, 2017 को युवारत्न श्री राजकुमारजी गोलेच्छा, पाली-राष्ट्रीय अध्यक्ष, युवक परिषद् द्वारा जयपुर, कुशतला, अलीगढ़ रामपुरा, चौथ का बरवाड़ा, उखलाना, जैनपुरी,मदनगंज, जोधपुर, बाड़मेर, गोटन आदि क्षेत्रों का निरीक्षण किया गया। 16-17 मई, 2017 को युवारत्न श्री राजेन्द्रजी लूँकड़, ईरोड़- राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष, युवक परिषद् जयपुर, सवाईमाधोपुर के 5 केन्द्रों का निरीक्षण किया गया। 15 से 19 मई, 2017 को युवारत्न श्री राजेन्द्र जी दुधेड़िया, बैगलोर-राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, युवक परिषद् जयपुर द्वारा पल्लीवाल क्षेत्र, मेड़ता, गोटन एवं जोधपुर सहित चार केन्द्रों का निरीक्षण किया गया। 17-18 मई, 2017 को युवारत्न श्री निपुणजी डागा, मुम्बई-राष्ट्रीय सचिव, निर्व्यसनता कार्यक्रम पाली, पीपाड़सिटी, भोपालगढ़ का निरीक्षण किया गया। 23-26 मई, 2017 को युवारत्न श्री दिनेशजी भंसाली, बैंगलोर द्वारा सवाई माधोपुर (2 सत्र), मदनगंज, जोधपुर, पीपाड़, भोपालगढ़ आदि का निरीक्षण किया गया। आदरणीय श्री ओमप्रकाशजी बांठिया, बालोतरा, संयोजक-स्वाध्याय संघ द्वारा बाड़मेर का निरीक्षण किया गया।

18-19 मई, एवं 24-27 मई, 2017 को युवारत्न श्री मनीषजी लोढ़ा, जोधपुर-महासचिव, युवक परिषद् द्वारा पीपाड़सिटी, भोपालगढ़, गोटन, महाराष्ट्र खानदेश अंचल क्षेत्रों का निरीक्षण किया गया। 15-18 मई एवं 24-27 मई, 2017 को युवारत्न श्री नमनजी मेहता, पीपाड़ सिटी- राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, धार्मिक एवं नैतिक शिक्षण शिविर द्वारा पल्लीवाल क्षेत्र, मेड़तासिटी, गोटन, महाराष्ट्र खानदेश अंचल आदि क्षेत्रों का निरीक्षण किया गया।

युवारत्न श्री अनिलजी बोथरा, जलगाँव, क्षेत्रीय प्रधान, महाराष्ट्र क्षेत्र द्वारा महाराष्ट्र खानदेश अंचल क्षेत्रों का निरीक्षण किया गया। युवारत्न श्री पदमजी गोटेवाला (क्षेत्रीय प्रधान पोरवाल क्षेत्र) सवाई-माधोपुर द्वारा पोरवाल संभाग का निरीक्षण किया गया।

युवारत्न श्री मनीषजी जैन (क्षेत्रीय प्रधान पल्लीवाल क्षेत्र), खेरली द्वारा पल्लीवाल संभाग का निरीक्षण किया गया। युवारत्न श्री परेश जी मुथा (क्षेत्रीय प्रधान मारवाड क्षेत्र), पीपाड़ सिटी द्वारा भोपालगढ का निरीक्षण किया गया।

उपर्युक्त सभी प्रबुद्धजनों एवं युवा साथियों ने इन शिविरों में निरीक्षण करने के साथ ही शिविरार्थियों में नैतिक संस्कारों का बीजारोपण किया। इस भयंकर ग्रीष्मऋतु में भी आप सभी ने दिवस भर यात्रा कर शिविरों को संभाला, शिविरार्थियों को उद्बोधन प्रदान कर उनमें माता-पिता, गुरु का आदर करना, जल के अपव्यय को रोकना, सीखे गये ज्ञान का मूल्याकंन करना आदि गहन विषयों को उनके अन्त:स्थल पर सरलतापूर्वक अंकित किया। आप सभी ने भीषण गर्मी को सहन करते हुए संघ सेवा को प्राथमिकता प्रदान की, यह विशेष रूप से अनुकरणीय है। साधुवाद के पात्र वे शिविरार्थी भी हैं जो तेज धूप में भी निरीक्षण यात्रा के दौरान कारणवशात् अगर समय परिवर्तन भी किया गया तो भी समयपूर्वक आये । इस बार विशेष रूप से यह प्रयास रहा कि शिविरों के मूल समय में कोई विशेष परिवर्तन न किया जाए और इस बात का मुख्यता से ध्यान भी रखा गया, फिर भी कुछ शिविर स्थानों का समय परिवर्तन करना आवश्यक रहा तो किया भी गया । आशा है कि आगामी वर्षो में इसमें भी पूरा सुधार हो ही जायेगा ।

उपर्युक्त शिविरस्थलों पर यात्रा कार्यक्रम के दौरान उत्साह का वातावरण मिला। प्रत्येक जगह गर्मजोशी भरा स्वागत किया गया तो प्यारे-प्यारे

शिविरार्थियों का प्रेम भी मिला, भाषण-उद्बोधन-सम्बोधन आदि से दिशानिर्देशन का अवसर मिला तो प्रश्नों की पृच्छा पर शिविरार्थियों के निडरतापूर्ण बेबाक उत्तर भी मिले। कुल मिलाकर शिविर स्थलों के प्रत्येक विभाग में कार्य बड़ी खूबी से हुए, सभी स्थलों पर प्रमोदजन्य वातावरण रहा।

पिछले वर्ष की तरह इस वर्ष भी बालिकाओं में ड्रेस के वितरण से गणवेश की एकरूपता दिखी। साथ ही बालक वर्ग हेतु चौलपट्टा-दुपट्टी की व्यवस्था थी, जो श्वेत गणवेश के साथ ही समभाव की साधना सामायिक को सहकार प्रदान करती है। बैग-आसन-कक्षावार पुस्तक से उनकी धार्मिक सामग्री पूरी होती है तो साथ ही अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् का परिचय कराती कॉपी और पेन भी उन्हें सहायक सामग्री के रूप में दिए गए।

प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी प्रतियोगिता में प्रत्येक केन्द्र का विशेष उत्साह रहा, पोस्टर प्रतियोगिता पिछले कई वर्षों से इन शिविरों की शान रही है और कई शिविरार्थियों के रचनात्मक मन की प्रतिभा को ये खोलती हैं, उभारकर सामने लाती हैं। रचनात्मकता का जो नजारा इनमें दिखता है वह अपने आप में अवर्णनीय है। महाराष्ट्र क्षेत्र का पोस्टर प्रतियोगिता में उल्लेख करना आवश्यक होगा क्योंकि इन शिविरार्थियों ने अपनी रचनाओं में जो पुरुषार्थ किया, उसकी छटा झलककर बाहर आई तो द्वितीय प्रतियोगिता रही विज्ञापन की। विज्ञापन प्रतियोगिता इस वर्ष की नवीन प्रतियोगिता रही जिसका उद्देश्य वाक्य एवं दृश्य संरचना का विकास रहा और सभी स्थलों पर इस नई प्रतियोगिता का स्वागत हुआ और उत्साह भी दिखा, तो तृतीय प्रतियोगिता रही ठाणेणं - ध्यान प्रतियोगिता । जिसका उद्देश्य 'ठाणेणं' की क्रिया को साधना रहा, अर्थात् काया को स्थिर करना, काया से स्थिर बनने का प्रयत्न करना, आसन को साधना था। प्रत्येक शिविर स्थल पर यह प्रतियोगिता बहुत शांतिपूर्ण वातावरण स्थापित करने वाली रही तथा शांति-मौन-एकाग्रता को स्थापित करने वाली नवीन प्रतियोगिता रही। कोई अन्य अतिरिक्त प्रतियोगिताएँ भी कराना चाहे तो उन्हें भाषण, भजन, धार्मिक फैंसी ड्रेस, एकाग्रता आदि प्रतियोगिता के विकल्प भी प्रस्तुत किये गए।

कालांश आदि का वर्गीकरण पूर्ववत् रहा, सभी शिक्षकों ने स्व-पुरुषार्थ से अपना श्रेष्ठतम देने का निश्चित्त रूप से प्रयास किया, जिससे कि शिविरार्थियों में ज्ञानवृद्धि हो सके, इनका यह कार्य निश्चित रूप से अनुमोदनीय सेवाकार्य है क्योंकि 15 दिवस तक अपने सभी निजी कार्य को एकतरफ कर संघ-सेवा को सर्वोपरि स्थान दिया। इस बार भी प्रत्येक स्थल को सूचित करते हुए निवेदन किया गया था कि पिछले वर्ष की भाँति इस वर्ष भी शिविरार्थियों को नियम कराये जायें ताकि उनमें आध्यात्मिक क्रियाओं का विकास हो और विश्वास बढ़े। प्रारम्भ में ही ऐसी आदत का विकास हो और तपोमय जीवन का आधार बने। प्रत्येक स्थल पर आग्रह किया गया कि प्रतिदिन किसी भी धर्मकथा, सम्भाषण, एक्टिविटी आदि को प्रार्थना सभा के कार्यक्रम में सम्मिलित किया जाये एवं सभी का उत्साह व साथ इसमें भी भरपूर प्राप्त हुआ है।

शिविर का सबसे महत्वपूर्ण कार्य है अध्ययन-पठन परन्तु इस अध्ययन-पठन की समीक्षा का नाम है 'परीक्षा'। 26 मई, 2017 शुक्रवार को सभी जगह परीक्षा का आयोजन किया गया, जिसमें लिखित परीक्षा दे सकने वाले सभी शिविरार्थियों ने भाग लिया और आगामी 16 जुलाई 2017, रविवार को होने वाली आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की परीक्षा में बैठने हेतु फार्म भरवाये गये। 28 मई, 2017 को शिविरों का समापन आगामी वर्ष में भी वैसा ही उत्साह बनाये रखने के संकल्प के साथ हुआ।

शिविर को आयोजित करने वाला प्रत्येक संघ और स्थल व वहाँ के सभी कर्मठ कार्यकर्त्ता धन्यवाद के पात्र हैं जो 15 ही दिवस पूर्ण जोश एवं जज्बे के साथ शिविर को संचालित करते हैं। प्रतिदिन की प्रभावना, अल्पाहार आदि से इन शिविरार्थियों का उत्साह बनाये रखते हैं। प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी अ. भा. श्री जैन

रत्न युवक परिषद् एवं अ.भा. श्री जैन रत्न संस्कार केन्द्र द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर कक्षावार एवं प्रतियोगितावार गुणवत्तायुक्त उपहार प्रेषित किये गये। इस वर्ष का उपहार क्रम निम्नानुसार रहा –

1. प्रथम से पंचम कक्षा– प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय कक्षावार प्रत्येक केन्द्र पर।
2. ध्यान प्रतियोगिता– प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय प्रत्येक केन्द्र पर।
3. विज्ञापन प्रतियोगिता– प्रथम एवं द्वितीय पुरस्कार प्रत्येक केन्द्र पर । प्रत्येक स्थान के लिए तीन–तीन पुरस्कार। कुल छह पुरस्कार प्रत्येक केन्द्र पर।
4. पोस्टर प्रतियोगिता– प्रथम एवं द्वितीय पुरस्कार प्रत्येक केन्द्र पर । प्रत्येक स्थान के लिए चार–चार पुरस्कार। कुल आठ पुरस्कार प्रत्येक केन्द्र पर।
5. सांत्वना पुरस्कार– सभी निश्चित उपस्थितिपूर्ण शिविरार्थियों को।
6. शिक्षक सेवा अनुमोदना पुरस्कार– सभी शिक्षक जनों को।

उपहार तो केवल मात्र एक प्रोत्साहन रूप है और ये शिविरार्थियों एवं शिक्षकों के पुरुषार्थ के समक्ष सदैव अल्प है और अल्प ही रहेगा ।

इस शिविर के सुचारू आयोजन में स्थानीय युवक परिषद् की शाखाओं के पदाधिकारीगण, वहाँ के श्रावक संघ, श्राविका मण्डल के पदाधिकारीगण एवं स्थानीय दानदाताओं के सहयोग से इन शिविरों का संचालन हो पाता है। केन्द्रीय कार्यालय द्वारा दिशानिर्देश एवं पुरस्कार सामग्री तो भेज दी जाती है पर स्थानीय स्तर पर प्रयास कर शिविर के लिये स्थल की व्यवस्था, शिविरार्थियों को प्रेरणा कर शिविर में बुलाना एवं उनके लिये प्रतिदिन पारितोषिक की व्यवस्था करना आदि सभी कार्यों में स्थानीय कार्यकर्त्ताओं की भूमिका अहम है। उन सभी का अन्तरात्मा की गहराइयों से धन्यवाद, साधुवाद। आप सभी का पूर्ववत् सहयोग आगामी कार्यक्रमों में इसी भाँति श्रेष्ठ रूप में मिलता रहेगा, यही शुभभावना है।

इस पूरी शिविर यात्रा में संपर्क से लेकर निरीक्षण, पृष्ठभूमि के निर्धारण में मेरे सर्वसहयोगी अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के महासचिव युवारत्न श्री मनीषजी लोढ़ा का जो सहयोग प्राप्त हुआ वह अपने आप में मेरे लिये अवर्णनीय है और साथ ही विभाग संयोजक श्री गौतमजी चौरडिया, जयपुर ने समय–समय पर संभालकर, दिशानिर्देशित कर, जयपुर से लेकर पोरवाल क्षेत्र को संभालने में जो अनमोल भूमिका निभाई, वह मेरे लिये एक संबल रूप रही। सचिव भाई श्री निखिलजी बाघमार, चैन्नई और सह संयोजक श्री शीतलजी जैन, गंगापुर सिटी का भी कदम–कदम पर सहयोग अभूतपूर्व रहा, साथ ही पोरवाल क्षेत्रीय प्रधान श्री पदमजी गोटेवाला, स.माधोपुर, पल्लीवाल क्षेत्रीय प्रधान श्री मनीषजी जैन, खेरली; महाराष्ट्र क्षेत्रीय प्रधान श्री अनिलजी बोथरा, जलगाँव एवं मारवाड़ क्षेत्रीय प्रधान श्री परेशजी मुथा, पीपाड़ शहर का जो सहयोग प्राप्त हुआ है, वह भी विशेष रूप से उल्लेखनीय है। सर्वोपरि आभारी हूँ इस सम्पूर्ण शिविर के लिये ऊर्जा प्रदान करने वाले राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजकुमारजी गोलेच्छा, पाली का जिनके मार्गदर्शन के बिना शिविर संचालन की कल्पना कर पाना भी असंभव प्रतीत होता है।

आभारी हूँ पूर्ण शिविर के सहयोग में अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र एवं इसके संयोजक श्री हर्षवर्धनजी ललवाणी–जोधपुर और सचिव श्री राजेश जी भण्डारी–जोधपुर का, जिन्होंने कंधे से कंधा मिलाकर शिविरों के संचालन में अपना योगदान प्रदान किया। साथ ही परीक्षादि कार्य में सहयोग हेतु अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड एवं श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर का विशेष–रूपेण आभारी हूँ। श्री मनोज जी मेहता, श्री कमलेश जी मेहता, श्री आशीष जी का जो कि प्रत्येक कार्य में प्रति समय तुरन्त तत्पर रहे।

–उपाध्यक्ष, धार्मिक शिक्षण एवं शिविर, अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर (राज.)

समाचार विविधा

चातुर्मास पाकर आचार्य हीरा का जन-मन है उल्लसित
भोपालगढ़ में तप-त्याग धर्म के पुष्प हो रहे विकसित

जन-जन के कल्याणकारी, आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, ज्ञान सुधाकर, गुणरत्नाकर, सामायिक-शीलव्रत-रात्रिभोजन-त्याग- व्यसन-मुक्ति के प्रबल प्रेरक, जिनशासन गौरव, रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर **परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी, सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.** आदि ठाणा 9 का भोपालगढ़ में चातुर्मासार्थ प्रवेश के पूर्व समीपस्थ ग्रामों में विचरण विहार धर्मप्रेरणा के साथ प्रभावकारी रहा।

नाडसर प्रवास में 29 जून को भोपालगढ़ संघ शीघ्र पधारने की विनति के भाव लिए पूज्य गुरुदेव की पावन सेवा में उपस्थित हुआ। 30 जून को व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा., महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा आदि ठाणा 8 का पूज्य भगवन्त की सेवा में नाडसर पधारना हुआ। श्री पन्नालालजी, श्री महेन्द्रजी, श्री किशोरजी, श्री रमेशजी लोढ़ा ने प्रवासकाल में सेवा सन्निधि का लाभ लिया तथा परिवारजनों ने तेले, पचौले व अठाई की तपस्या का अर्घ्य पूज्य गुरुदेव के चरणों में अर्पित किया। 15 दिवसीय प्रवास समय में 13 शीलव्रत के खंध, एक अठाई, एक पचौला, नौ तेले व बेले, आयम्बिल, एकाशन एवं उपवास की अच्छी संख्या में आराधना हुई।

परमाराध्य पूज्य आचार्य भगवन्त 02 जुलाई को नाडसर से विहार कर रातियों की ढ़ाणी में पधारे। सायं प्रतिक्रमण समय अच्छी बरसात आने का सुयोग बना। वहाँ रात्रि साधना कर 03 जुलाई को पूज्यश्री का असूचित प्रवेश क्रियोद्धारक भूमि बडलू में हुआ। समीपस्थ नाडसर, पीपाड़सिटी, जोधपुर, बारनी, गोटन, मेड़तासिटी, धनारीकलां, अरटियाकलां, हीरादेसर, कुड़ी, पाली आदि क्षत्रों से श्रद्धालु भाई-बहिनों का आगमन दर्शन की भावना से हुआ, उन्हें सहज ही मंगल प्रवेश का सुलाभ मिल गया।

जयघोष के स्वर प्रातःकालीन प्रथम दुघड़िया में गुंजायमान हो रहे थे। पूज्य आचार्य भगवन्त के पीछे संतवृन्द के पावन श्री चरण सामायिक-स्वाध्याय भवन की ओर बढ़ रहे थे। लगभग 7 बजे श्री जैन रत्न उच्च माध्यमिक विद्यालय को पदरज से पावन कर पूज्य गुरुदेव का मंगलमय पावन पदार्पण स्थानक भवन में हुआ। बालिका-मण्डल गणवेश में जयनिनाद के स्वर उल्लास, उत्साह, उमंग के साथ उच्चारित कर श्रद्धा भक्तियुक्त भावों को अभिव्यक्त कर रहा था।

पूज्य आचार्य भगवन्त एवं संत-मुनिराज के विराजने के साथ भावों की अभिव्यक्ति का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। श्री नेमीचन्दजी कर्णावट ने संचालन करते हुए कहा कि श्री कृष्ण के द्वारिका आने पर, राम के अयोध्या आने पर, भगवान आदिनाथ के विनीता नगरी में पधारने पर जो खुशी हुई वैसी ही खुशी का वातावरण आचार्य भगवन्त के पधारने से इस क्रियोद्धारक भूमि में सर्वत्र व्याप्त है।

श्री निखिलजी लुणावत, श्री सुमतिजी मेहता-पीपाड़सिटी, श्री महावीरजी बोथरा, बालिका मण्डल, श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना (निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष), श्री सोहनलालजी बोथरा, श्री तरुणजी बोहरा (राष्ट्रीय मंत्री), महिला-मण्डल, बहिन अंजूजी सकलेचा, श्रीमती सुशीलाजी बोहरा (राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष), श्री पुनवानजी

ओस्तवाल-मंत्री, श्री हस्तीमलजी डोसी-मेड़तासिटी, श्री परेशजी मुथा-पीपाड़, श्री हंसराजजी चौपड़ा-गोटन, श्री सुभाषचन्दजी हुण्डीवाल-जोधपुर, श्री प्रकाशचन्दजी लोढ़ा-नाडसर, श्रीमती बीनाजी मेहता-राष्ट्रीय महासचिव-श्राविका मण्डल, श्री नरेन्द्रजी, श्री राजकुमारजी गोलेच्छा-(राष्ट्रीय अध्यक्ष-युवक परिषद्), लघु बालिका मोनिका-गोटन, श्री प्रकाशजी सालेचा- (राष्ट्रीय सहमंत्री) इन सभी ने पूज्य आचार्य भगवन्त के चातुर्मासार्थ पधारने पर हर्षमय भावों की अभिव्यक्ति की। कार्यक्रम के मध्य में व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. आदि ठाणा 8 का मंगल प्रवेश हुआ।

महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा. ने फरमाया- ''भोपालगढ़ में प्रवेश तो है ही, भगवान के हृदय में प्रवेश है। ज्ञान-दर्शन-चारित्र में प्रवेश है। अयोग्य आत्माओं को योग्य बनाने के लिये, अपात्र को पात्र बनाने के लिये, अवगुणों को दूर भगाने के लिये यह प्रवेश है।''

श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. ने फरमाया-''03 जुलाई को तीन नामों से जानी जाने वाली नगरी भोपालगढ़, बडलू, रत्नसंघ की क्रियोद्धारक भूमि में त्रिरत्न की साधना में रत रहने हेतु मंगल प्रवेश हो गया है। महापुरुषों की छत्र-छाया में रहकर आत्मप्रदेशों को जागृत करने का संकल्प लें।''

महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने फरमाया- ''क्रियोद्धारक भूमि ज्ञान क्रियानिष्ठ संघ शिरोमणि को पाकर प्रमोद का अनुभव कर रही है। 17 साल बाद 17 संत-सतियों का योग मिल रहा है। सन् 2000 से चल रही विनति इस वर्ष साकार हुई। दीक्षा वाले क्षेत्र, जन्मभूमि वाले क्षेत्र, चातुर्मास वाले क्षेत्र कई मिल जायेंगे पर क्रियोद्धारक भूमि का क्षेत्र मात्र बडलू ही है। पूर्वजों ने इस धरा की दीप्ति को अक्षुण्ण रखा है। आप भी द्रव्य एवं भाव से सन्निधि का लाभ लें।''

पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने फरमाया- ''धर्मस्थान में आकर धर्माराधन, भक्ति एवं तपाराधना करने की बात सुनी। पर मैं यह कहना चाहूँगा कि अपनी आत्मा की आवाज पर कितना अमल किया? आँखें बंद कर इस आत्मा से पूछिए- ''तू यहाँ क्यों आई? आगे बढ़ाने के लिये संयम की, ज्ञान की, तप की बात हम कह सकते हैं, इसके पीछे स्वार्थ हो सकता है। आप अपनी आत्मा से पूछिए- प्रवेश पर मुझे क्या करना है? 'किं मे कडं, किं च मे किच्च सेसं।' अर्थात् मैंने क्या-क्या कर लिया है और मुझे क्या-क्या करना शेष है? आत्मा का कोई स्वार्थ नहीं, आपको सम्यक् समाधान मिल जाएगा तथा अपनी आत्मा से पूछ लोगे तो फिर किसी से पूछने की आवश्यकता नहीं रहेगी। आचार्य भगवन्त (पूज्य आचार्य श्री हस्ती) फरमाते- आत्मा और तदनुकूल वृत्ति ही उपादेय और हितकर है।''

भगवन्त के चरणों में मेरा पहला चातुर्मास भोपालगढ़ में हुआ। मैं जितना याद नहीं करता, उससे ज्यादा ज्ञानेन्द्रजी याद करते हैं। महापुरुषों का सान्निध्य हम दोनों को मिला।

आप सब प्रसन्न रखने की कला में दक्ष हैं। किससे क्या कहना, इसमें आप निपुण हैं। पर यह दक्षता जीवन निर्माण की कला नहीं। निवासी भाई-बहिन यही बहाना बनायेंगे- ''अन्नदाता! संसारी आदमी हैं- घर का, परिवार का, राज का, समाज का काम करना पड़ता है।'' लेकिन निमाज वालों को कभी कहना नहीं पड़ा। प्रार्थना, प्रवचन, वाचनी, तपाराधना में यथाशक्य लाभ लिया। आपको भी अपने आपको जगाना है। जीओगे तब तक संसार के काम तो करने पड़ते हैं, पर मैं इस अवसर का किस रूप में लाभ उठाऊँ? ऐसा चिंतन भी रहना ही चाहिये। आप अपनी आत्मा की आवाज सुनकर ज्ञान में, दर्शन में, चारित्र में, तप की आराधना में आगे बढ़ेंगे, उसमें कोई कमी नहीं रख, निर्जरा के भागी बनेंगे। इस युग में भी एक भवतारी बनेंगे। ऐसा सामर्थ्य आत्मा में रहा हुआ है, पर प्रकटीकरण

पुरुषार्थ से ही संभव है। संघ की, गाँव की, नगरी की दीप्ति बढ़ाने में सहयोग करें। बहिनों! आपके ज्ञान बढ़ाने के लिये महासती श्री ज्ञानलताजी, भाग्य जगाने के लिये सती भाग्यप्रभाजी मिले हैं, बहिनें वहाँ लाभ लें। समय का ध्यान रखते हुए भाई-बहिन धर्म स्थान में रहकर साधना करें। क्रियोद्धारक भूमि में क्रिया की बात कहनी पड़े, आश्चर्य की बात है। विनति मान कर आया हूँ- आप भी साधना करें, मुझे भी साधना करने में सहयोग करें... इसी मंगल भावना के साथ.....।''

भाई श्री कमलकिशोरजी कांकरिया की माताश्री सायरकंवरजी चातुर्मास का लाभ लेने की भावना से भोपालगढ़ पधारी, पर आयुष्य बल के कारण उनका संथारे के साथ 01 जुलाई को भोपालगढ़ में प्रयाण हो गया। कमलकिशोरजी कांकरिया ने सुविज्ञता का परिचय देते हुए 03 जुलाई को उठावणा कर पूज्य गुरुदेव के पावन मुखारविन्द से मांगलिक श्रवण की। परिवारजन धर्मध्यान का बराबर लाभ ले रहे हैं।

दोपहर समय 2 से 3 बजे के मध्य प्रश्नव्याकरण सूत्र की वाचनी पूज्य आचार्य भगवन्त के पावन श्रीमुख से प्रारम्भ हुई। प्रार्थना-प्रवचनादि कार्यक्रम प्रवेश समय से अनवरत प्रवाहमान हैं।

08 जुलाई को चातुर्मासी चौमासी का शुभारम्भ धर्मचक्र की आराधना से हुआ। इसी दिन से 24 तीर्थंकर व 20 बोल की आराधना प्रारम्भ हुई। इस चौबीस दिवसीय साधना-आराधना में 56 भाई-बहिन साधनारत हैं। **महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा.** सम्बन्धित तीर्थंकर प्रभु के अतिशयों की महिमा पर ओजस्वी-प्रभावशाली शैली में व्याख्यान फरमा रही हैं। प्रातःकालीन प्रार्थना व तीर्थंकर की स्तुति **श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.**, व्याख्यान **श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा., महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.** एवं मांगलिक फरमाने की कृपा **पूज्य आचार्य भगवन्त** कर रहे हैं। चौमासी पर्व पर अनेक स्थानों से आए श्रद्धालु गुरुभक्तों तथा पीपाड़, गोटन व निमाज संघ के भाई-बहिनों ने पावन चरण सन्निधि का लाभ लेते हुए संवर व पौषध की आराधना की।

09 जुलाई को देई संघ, नांदिया संघ ने दर्शनों का लाभ लिया। पूज्य गुरुदेव ने युवक परिषद् के सदस्यों को चातुर्मास अवधि तक के लिये जमीकंद व रात्रिभोजन त्याग के नियम कराए। महिला-मण्डल व बालिका-मण्डल को महासती मण्डल द्वारा तप-त्याग की प्रेरणा की गई। **पूज्य श्री** ने दोपहर 3 बजे बाद मंगल उद्बोधन में श्रावक-श्राविकाओं के मध्य फरमाया-''माँ-बाप ही जब धर्मस्थान में नहीं आते, तब युवा पीढ़ी कैसे संस्कारित हो? पालीताणा गुजरात में अक्षयतृतीया पर 3500 पारणे हुए, वहाँ 10 साल का बच्चा भी एकान्तर तप कर रहा है। माता-पिता सहकार कर रहे हैं। गुजरातियों में खाने-पीने के नियम हैं। उन्हीं के कारण प्लेन में जैन भोजन की व्यवस्था है। बच्चे विद्यालय में निर्दोष पानी की बोतल साथ लेकर जाते हैं। यहाँ 50 साल का आदमी कह रहा है कि आज तक उपवास नहीं किया। नवकार मंत्र की माला नहीं फेरता। बच्चे को बिगड़े वहाँ भेजते हो, सुधार हो ऐसी जगह नहीं भिजवाते। फिर अच्छा कैसे बनेगा? धर्मी कैसे बनेगा? धार्मिक जानकारी कहाँ से आयेगी? आचार्य हेमचन्द्रजी हर विषय पर सांगोपांग बोलते, 350 करोड़ श्लोक की रचनाएँ कीं। आपकी संतान भी ऐसी प्रतिभावान, संस्कारवान बने, ऐसी मंगल भावना है।''

12 जुलाई को शासन सेवा समिति के संयोजक श्री रतनलाल सी. बाफना, राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पी. शिखरमलजी सुराना ने दर्शनों के साथ सेवा-सन्निधि का लाभ लिया। 14 जुलाई को भोपालगढ़ संघ के भाई-बहिनों को सावचेत करते हुए पूज्यप्रवर ने कहा कि मनुष्य गति ऐसी है जहाँ हर रोग का इलाज किया जा सकता है। घर में कम से कम हिंसा हो, ऐसा विवेक हो। आज घरों में पानी का उपयोग अनर्थ रूप में बहुतायत से हो रहा है। इस अनर्थ हिंसा से बचो। नागौर की सुराणा बाईजी परात में बैठकर एक लोटे पानी से बदन को शीतल कर परात में आये पानी

से कपड़ों की शुद्धि कर लेती। बचे पानी से आँगन साफ करने का विवेक रखती। ऐसा विवेक हर घर में हो। आप क्रियोद्धारक भूमि से हैं। जितना पाप से बच सको, बचने का लक्ष्य रखेंगे तो सुनना, सुनाना सार्थक होगा।

16 जुलाई को चौथ का बरवाड़ा वाले श्री उम्मेदमलजी जैन के स्वर्गवास पर मानसरोवर जयपुर से श्री इन्द्रमलजी, सुरेन्द्रकुमारजी, नरेन्द्रकुमारजी आदि समस्त परिवारजनों ने पूज्य आचार्य भगवन्त की सेवा में आकर मांगलिक श्रवण की। 18 जुलाई को श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. के पचोले की तपस्या का पारणा स्वास्थ्य समाधि के साथ हुआ। 19 जुलाई से भाई-बहिनों की पचरंगी की साधना प्रारम्भ हुई। सोजत रोड संघ ने दर्शनों का लाभ लिया। महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने 21 जुलाई को श्री सागरमलजी म.सा. के 59 दिवसीय अद्वितीय संथारे के साथ समाधिमरण पर, 22 जुलाई को क्रियावान भाग्यवान सरलमना महासती श्री छोगाजी म.सा. के निर्मल संयम प्रधान संयमी जीवन पर, 23 जुलाई को कुशल शिल्पकार, योग्य शिष्य, योग्य गुरु आचार्यप्रवर श्री शोभाचन्द्र जी की पुण्य तिथि पर उन महापुरुष के जीवन का सांगोपांग वर्णन करते हुए 'गुरु हस्ती उन्हीं की कृति' थी आदि भावों से अवगत कराया। 24 जुलाई को श्रमण संघ के आचार्यप्रवर श्री आनन्दऋषिजी म.सा. के साथ हमारे संघ से जो परस्पर सौहार्दमय सम्बन्ध रहे उनसे साक्षात्कार करवाया।

25 जुलाई को महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. के एकान्तर तप के अनन्तर 6 दिवसीय तपस्या का पारणा स्वास्थ्य समाधि के साथ हुआ। बीजापुर चातुर्मास में आपश्री ने एकान्तर तप की आराधना करते हुए मासखमण तप की साधना सेवा कार्य के साथ की। उसके बाद आपने मन ही मन संकल्प लिया कि उपवास से लेकर पन्द्रह तक के उपवास की लड़ी की आराधना करूँ। आप हर वर्ष इस लड़ी को पूर्ण करने की भावना से मध्य वाले सभी उपवासों की लड़ी करते आ रहे हैं। मात्र छह के उपवास की लड़ी शेष थी जो आचार्य भगवन्त की कृपा से इस वर्ष स्वास्थ्य समाधि के साथ पूर्ण हो गई है। अप्रकट रूप से की गई तपस्या अनुमोदनीय हैं।

भोपालगढ़ में एकाशन, आयम्बिल, नींवी, उपवास, तेले की लड़ी चौमासी पर्व से बराबर चल रही है। पचोले, अठाई, नौ व पन्द्रह की तपस्या के अतिरिक्त धर्मचक्र की साधना व भाइयों-बहिनों की संयुक्त रूप से 3 पचरंगी की आराधना हो चुकी है। दर्शनार्थ पधारने वालों का क्रम अनवरत बना हुआ है। संघ आतिथ्य सेवा में तत्पर है। -*जगदीश जैन*

उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के चातुर्मास की सौरभ से जोधपुर नगरी हुई सुवासित

उपाध्यायप्रवर पण्डितरत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा., तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 7 का चातुर्मास हेमसिंहजी का कटला, महामंदिर, जोधपुर के स्थानक भवन में 2 जुलाई को हुए मंगल प्रवेश के साथ ही नवीनतम उच्चाइयों को छूते हुए गतिमान है। धर्माराधना एवं तप-त्याग का चातुर्मास के प्रारम्भ से ही अनूठा ठाट लगा हुआ है। नित्यप्रति प्रभातवेला से श्रावक-श्राविका कर्मग्रन्थ के स्वाध्याय से दिनचर्या का प्रारम्भ करते हुए धर्माराधना एवं ज्ञान ध्यान सीखने में संलग्न हैं। श्रद्धेय प्रमोदमुनिजी म.सा. के तात्त्विक एवं आगमिक प्रवचनों को सुनकर श्रावक-श्राविका भाव विभोर हो जाते हैं। जीवन को सुधारने एवं आगे बढ़ाने के नये-नये सूत्र श्रवण करने को मिलते हैं। श्रद्धेय श्री लोकचन्द्रजी म.सा. के द्वारा सम्यक् दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक् चारित्र एवं सम्यक् तप को आधार बनाकर दुःख मुक्त बनने की सत्प्रेरणा की जा रही है। श्रद्धेय श्री दर्शनमुनिजी म.सा. मधुर भजनों से तपस्या की पूरजोर प्रेरणा कर रहे हैं तथा प्रेरक प्रसंगों से लाभान्वित कर रहे हैं। श्रद्धेय श्री मोहनमुनिजी म.सा. तप एवं स्वाध्याय में संलग्न रहते हैं। श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा. एवं श्रद्धेय श्री अभयमुनिजी म.सा. ज्ञान-ध्यान एवं सेवा

में तत्पर हैं। पूज्य उपाध्यायप्रवर महती कृपा करके प्रवचन सभा में मंगलपाठ हेतु पधारते हैं। प्रवचन सभा में उपस्थित जनसमूह को देखकर पर्युषण जैसा माहौल प्रतीत होता है। तपस्या की लड़ी में उपवास, आयंबिल, नींवी एवं एकाशन निरन्तर हो रहे हैं। बड़ी तपस्याओं में मासक्षपण तप चल रहा है तथा 21,12,11,9 एवं लगभग 40 अठाइयाँ हो चुकी हैं। सबसे बड़ी विशेषता यह है कि बड़ी तपस्याएँ गुप्त रूप से चल रही हैं। आगामी 11 से 13 अगस्त को युवा पीढ़ी के मार्गदर्शन हेतु यू-टर्न शिविर जैन स्कूल महामंदिर में आयोजित किया जा रहा है। प्रवचन सभा का कुशल संचालन युवक परिषद् के सचिव श्री गजेन्द्र चौपड़ा द्वारा किया जा रहा है। प्रत्येक रविवार को प्रातःकाल शुद्ध सामायिक आराधना एवं ध्यान साधना का कार्यक्रम चल रहा है। महासतियाँजी प्रवचन सभा में पधारती हैं। 28 जुलाई से प्रारम्भ हुए ध्यान शिविर में 30 साधक भाग ले रहे हैं। संघ अत्यन्त उत्साह के साथ अतिथिसेवा में सन्नद्ध है। *-कनकराज कुम्भट, संयोजक*

भीलवाड़ा में मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. का चातुर्मास बना आकर्षण का केन्द्र

मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 3 का शांति भवन में चातुर्मास हेतु अत्यन्त उत्साह एवं जयघोषों के साथ मंगल प्रवेश हुआ। तप-त्याग के साथ मुनि-मण्डल के प्रभावशाली प्रवचन हो रहे हैं। शहर में स्थानकवासी परम्परा के नौ चातुर्मास होते हुए भी प्रवचन में बहुत अच्छी उपस्थिति रहती है। प्रत्येक रविवार को प्रातः 7 से 8 बजे तक सामायिक के साथ युवकों की कक्षा होती है, जिसमें देव, गुरु एवं धर्म का मर्म समझाया जा रहा है। यहाँ तेले, अठाई एवं गुप्त तपस्याएँ चल रही हैं। श्रीमती कमलाजी धर्मपत्नी श्री महावीरसिंहजी चौधरी-कांचीपुरम्, श्रीमती कोमलजी धर्मपत्नी श्री जितेन्द्रजी सालेचा एवं पुत्रवधू श्री रिखबचन्दजी सालेचा मासक्षपण तप की ओर बढ़ रही हैं।

08 जुलाई को 'दो कदम लक्ष्य की ओर' कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 300 श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। मुख्य वक्ता श्री तरुणजी बोहरा, राष्ट्रीय मंत्री, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर ने अपने उद्बोधन में लक्ष्य प्राप्ति हेतु सम्यक् पुरुषार्थ करने पर बल दिया। उन्होंने 'धर्म को जाने या मानें', 'हम कितने प्रतिशत जैन हैं?', 'रोटी, कपड़ा मकान और.....?' तथा 'सिद्धान्त वही सोच नई' आदि विषयों पर प्रभावशाली प्रकाश डाला।

12-13 अगस्त को एक शिविर का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के कार्याध्यक्ष श्री राजेन्द्र जी लुंकड़-ईरोड़ द्वारा 'स्मार्ट गर्ल' विषय पर प्रशिक्षण प्रदान किया जायेगा। निकटवर्ती ग्राम-नगरों के श्रावक-श्राविकाओं का आवागमन बना हुआ है। संघ अतिथि सेवा में तत्पर है।

-नवरतनमल सूरिया-मंत्री / दीपक बोथरा

सेवाभावी श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. का पाली चातुर्मास बना धर्माराधन में उत्साह का स्रोत

सेवाभावी श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 3 का जोधपुर से रोहट फरसते हुए 23 जून 2017 को पाली हाउसिंग बोर्ड पदार्पण हुआ। महावीर भवन, समता भवन, अनुभव स्मारक होते हुए विधि नगर पधारे। यहाँ से 02 जुलाई को सामायिक-स्वाध्याय भवन, सुराणा मार्केट में चातुर्मास हेतु मंगल प्रवेश हुआ। प्रवेश के समय विहार में श्रावक-श्राविकाओं का उत्साह छलक रहा था। सभी भाई-बहिन नंगे पैर चलते हुए मुख-वस्त्रिका धारण किए हुए थे। प्रवेश के अनन्तर श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने चातुर्मास को सफल बनाने हेतु

प्रेरणा की। उत्तराध्ययन सूत्र का 29 वां अध्ययन सीखने पर विशेष बल दिया। अभी प्रातः 9.15 बजे से श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. विभिन्न दृष्टान्तों के साथ मधुर एवं प्रभावी वाणी में व्याख्यान फरमाते हैं। सेवाभावी श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. श्रावक के 21 गुणों के विवेचन के साथ नेमिनाथ चरित्र पर व्याख्यान फरमा रहे हैं। व्याख्यान हॉल खचाखच भर जाता है। दोपहर में 12 से 1 बजे तक नवकार मंत्र का जाप श्रावकों द्वारा निरन्तर हो रहा है। दोपहर पश्चात् 2 से 3 बजे तक समवायांग सूत्र की वाचनी चल रही है तथा 3 से 4 बजे तक ज्ञान-ध्यान हेतु ज्ञानशाला का कार्यक्रम रहता है। प्रत्येक मंगलवार को श्राविका मण्डल की कक्षाएँ लग रही हैं। यहाँ 12 शीलव्रत प्रत्याख्यान होने के साथ 6 से अधिक अठाई, 21 तेले, 16 सिद्धितप, 2 पचरंगी आदि की आराधना हो चुकी है। प्रतिदिन उपवास, आयंबिल, नींवी, एकाशन, दया-व्रत, संवर आदि के प्रत्याख्यान हो रहे हैं। *-चैनराज मेहता-मंत्री*

महासती-मण्डलों का चातुर्मासार्थ मंगल-प्रवेश एवं धर्माराधन की बढ़ती छटा

जयपुर- साध्वीप्रमुखा महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 11 का बरडिया कॉलोनी से रामनिवास बाग, चौड़ा रास्ता होते हुए महावीर भवन, बारह गणगौर का रास्ता में 03 जुलाई 2017 को श्रावक-श्राविकाओं द्वारा कृत मंगल जयघोष के साथ चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश हुआ। लाल भवन में 07 जुलाई से नियमित प्रवचन चल रहे हैं। 08 जुलाई से तेले की लड़ी तथा श्री जैन रत्न युवक परिषद् (पश्चिम शाखा) द्वारा उपवास की लड़ी प्रारम्भ हुई। 19 से 23 जुलाई तक पचरंगी का तथा चातुमार्स प्रारम्भ से 24 तीर्थंकरों की आराधना का कार्यक्रम रखा गया। पर्याप्त संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। श्री नौरतनमलजी लूंकड़ ने प्रथम दिन से ही अपने 27 वें मासक्षपण की तपस्या प्रारम्भ की। महासती श्री दिव्यप्रभाजी आगम के आधार पर सारगर्भित प्रवचन फरमा रहे हैं। 21 जुलाई को श्री सागरमल जी म.सा. की पुण्यतिथि दया, संवर एवं एकाशन के साथ मनाई गई। दर्शनार्थियों का आवागमन हो रहा है।

-सुरेशचन्द कोठारी

घोड़ों का चौक, जोधपुर- विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5 का चातुर्मासिक मंगल प्रवेश 02 जुलाई 2017 को प्रातः लगभग 11:00 बजे सामायिक स्वाध्याय भवन, घोड़ों का चौक में मंगल जयघोषों के साथ हुआ। घोडों का चौक क्षेत्र के श्रावक-श्राविकाएँ महासती मण्डल के पदार्पण से श्रद्धाभक्ति से सराबोर हो गए। प्रतिदिन प्रवचन, ज्ञानार्जन, धर्मचर्चा में अबाल-वृद्ध सभी लाभान्वित हो रहे हैं। प्रवचन में महासती मण्डल द्वारा पूज्य आचार्यप्रवर श्री शोभाचन्द्र जी म.सा. के जीवन चरित्र को विस्तृत रूप से प्रस्तुत किया जा रहा है। चातुर्मास प्रारम्भ से ही यहाँ तपस्या भी अच्छी संख्या में हो रही है। श्रीमती प्रियाजी चौपड़ा धर्मपत्नी श्री अमितजी चौपड़ा ने आठ की तपस्या, श्रीमती लाडकंवरजी गुन्देचा धर्मपत्नी श्री सुभाषजी गुन्देचा तथा श्री पारसमल जी गिडिया ने सात की तपस्या के प्रत्याख्यान महासतियाँ जी से यहाँ ग्रहण किये गये। इसके अलावा कई गुप्त तपस्याएँ भी चल रही हैं। एकासन, उपवास, आयम्बिल तथा नीवी की लड़ी निरन्तर गतिमान है। इसके अतिरिक्त अभी तक पचरंगी का आयोजन, अष्ट सम्पदा की साधना, श्राविका मण्डल द्वारा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता भी आयोजित हुई है। युवा बंधुओं द्वारा प्रातःकालीन सामायिक एवं प्रार्थना का कार्यक्रम निरन्तर चल रहा है। यहाँ के कार्यकर्ता समर्पित भाव से दर्शनार्थी श्रद्धालुओं की आतिथ्य सेवा का लाभ प्राप्त कर रहे हैं। *-राजीव मेहता, संयोजक, चातुर्मास समिति*

हिण्डौनसिटी- व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा., महासती श्री विमलावती जी म.सा. आदि ठाणा का चातुर्मासिक मंगल प्रवेश 02 जुलाई को जयघोष के साथ हुआ। हिण्डौन शहर के सभी श्रद्धालुओं के चेहरों पर प्रमोद एवं उत्साह का संचार हो रहा था। प्रवेश के अवसर पर अनेक ग्राम-नगरों से गुरुभक्तों का आगमन हुआ। चातुर्मास

प्रारम्भ से ही तेला, उपवास, एकाशन, आयंबिल एवं नींवी की लड़ी चल रही है। गुरुपूर्णिमा के दिन 1008 एवं 108 वन्दना का कार्यक्रम रहा। पचरंगी, सामूहिक एकाशन, संवर आदि की साधना सम्पन्न हो रही है। तेला एवं अठाई तप हुए हैं। 21 से 23 जुलाई तक लगभग 80 श्रावक-श्राविकाओं ने एकाशन का तेला किया तथा प्रतिदिन पाँच सामायिक की साधना की। प्रत्येक रविवार को 8 से 9 बजे तक नवकार मंत्र का जाप, 9 से 10.30 बजे तक प्रवचन एवं 10.30 बजे से प्रतियोगिता सम्पन्न होती है। प्रतियोगिता में 40 से 50 श्रावक-श्राविका भाग लेते हैं।

- निर्मलकुमार जैन, मंत्री

जबलपुर- व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा., महासती श्री मुदितप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 6 का चातुमासार्थ मंगल प्रवेश जैन स्थानक भवन (सेठ निहालचन्द कॉम्पलेक्स गोरखपुर-जबलपुर में) में 03 जुलाई 2017 को हुआ। इसके पूर्व आप 2016 का जलगांव चातुर्मास सम्पन्न कर अमरावती, वर्धा, हींगणघाट, नागपुर, पारसीवनी, ख्वासा, सीवनी, छपारा, लखनादौन, घूमा, बरगी होते हुए 700 कि.मी. की पदयात्रा कर 15 जून 2017 को आपश्री जबलपुर के दयोदय तीर्थ क्षेत्र में पधारीं। यहाँ से शंखेश्वर पार्श्वनाथ मंदिर, अग्रवाल कॉलोनी दिगम्बर जैन मंदिर, नेपियर टाउन श्वेताम्बर जैन मंदिर पधारीं। यहाँ से रामपुर होते हुए 22 जून को बागमार परिवार के निवास स्थान गोरखपुर एवं नर्मदा रोड पधारे। जबलपुर के श्रावक-श्राविकाओं द्वारा विचरण-विहार में सेवा का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया गया। महाराष्ट्र एवं मध्यप्रदेश की सीमा नागपुर ख्वासा बार्डर में प्रवेश होते ही संस्कारधानी जबलपुर संघ के सदस्यों ने सक्रियता दिखाई एवं विहार में पूरी सेवा दी। सिवनी जिले के घूमा ग्राम में महासती अंजनाजी एवं महासती सिन्धुजी के स्वास्थ्य में प्रतिकूलता हुई। जबलपुर के श्रावक श्री राजेश जी बागमार एवं श्री सुभाषचन्दजी ओस्तवाल (गोटन) तथा सभी श्रावक-श्राविकाओं ने समर्पित भाव से श्रमणोचित औषोपचार में सराहनीय सेवाएँ प्रदान कीं। विहार सेवा में श्री तपस्वीलालजी बागमार, श्री बाबूलालजी बागमार, श्री मदनलालजी बागमार, श्री निर्मलजी बागमार सहित बागमार परिवार, चौपड़ा परिवार, रांका परिवार, बोथरा परिवार, अलीजार परिवार, सुराना परिवार, गादिया परिवार, टाटिया परिवार, पगारिया परिवार ने भी उपस्थित होकर महासतीवृन्द के दर्शन-वंदन का मार्ग में लाभ लिया।

08 जुलाई से प्रारम्भ चातुर्मास में प्रातः 7 से 8 बजे तक **'जैन धर्म का क्या कहना'** कक्षा में महासती मुदितप्रभाजी द्वारा उद्बोधन दिया जा रहा है, जिसमें लगभग 60-70 युवक-युवतियाँ ज्ञानार्जन कर रहे हैं। प्रातः 9 बजे से प्रवचन तथा दोपहर में 1.30 बजे से भगवती सूत्र के थोकड़े एवं छेद सूत्रों का वाचन होता है। 3 से 4 बजे तक महासती श्री सिन्धुप्रभाजी म.सा. श्राविकाओं को थोकड़ों का ज्ञान करा रही हैं। उपयोग का थोकड़ा होने के बाद 50 बोलों की बंधी चल रही है। अनेक भाई-बहिन प्रतिक्रमण भी सीख रहे हैं। प्रवचन में कच्छी गुजराती, तेरापंथी एवं मूर्तिपूजक समाज के लोगों के साथ अजैन लोगों की भी अच्छी उपस्थिति रहती है। प्रतिदिन 250 पुरुष एवं 300 महिलाएँ प्रवचन का लाभ ले रहे हैं। निकटवर्ती क्षेत्रों के लोग भी लाभ ले रहे हैं। श्रुत आराधना में कुछ बहिनें सुखविपाक सूत्र एवं नन्दी सूत्र कण्ठस्थ कर रही हैं। तप आराधना में तेले की लड़ी चल रही है। श्री बाबूलालजी बागमार के नौ, श्रीमती मधुजी बागमार के दस, श्रीमती मंजूजी बागमार के ग्यारह, श्रीमती भारतीजी गादिया एवं श्रीमती इन्दिराजी बागमार तथा श्रीमती सीमाजी बागमार के नौ की तपस्या हुई है। बहनों एवं भाइयों में एकाशन तप बराबर चल रहे हैं। 19 से 23 जुलाई तक 500 एकाशन तप हुए। 'परिवार का मुखिया कैसा हो?', 'माता-पिता कैसे हों', 'सास-बहू कैसी हो?', 'भाई-भाई का प्रेम कैसा हो?' आदि विषयों पर प्रवचन हुए हैं। प्रवचन से ग्यारह वर्षों से रहा दो भाइयों का मनमुटाव दूर हुआ एवं प्रेम की गंगा बही। 13 से 15 अगस्त तक 14 वर्ष एवं इससे अधिक उम्र की अविवाहित किशोरियों एवं युवतियों के लिए एक संस्कार शिविर का आयोजन किया जा रहा है। यहाँ तेले,

एकाशन, उपवास, अठाई आदि तपस्याएँ सम्पन्न हुई हैं। -*मदनलाल बागमार, अध्यक्ष*

नेहरूपार्क,जोधपुर- व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा 5 का चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश 03 जुलाई 2017 को जयघोषों के साथ सोत्साह सम्पन्न हुआ। चातुर्मास प्रारम्भ से निरन्तर उपवास, आयंबिल, एकाशन एवं तेले की लड़ी चल रही है। एक पचरंगी का आयोजन हो चुका है। श्रीमती सुनीता अरुणजी मेहता, श्रीमती मधु डॉ. धर्मचन्दजी जैन के अठाई की एवं श्री लाडकंवर सुभाषजी गुंदेचा के नौ की तपस्या पूर्ण हुई है। दशवैकालिक सूत्र की वाचनी व्याख्यात्री महासतीजी द्वारा प्रभावशाली शैली में फरमाई जा रही है। जिसमें आगम रसिक श्रावक-श्राविकाएँ लाभ उठा रहे हैं। -*अरुण मेहता, संयोजक*

काचीगुड़ा (हैदराबाद) - सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 7 का पूनमचन्द गाँधी जैन स्थानक भवन में चातुर्मास चल रहा है। श्री विदेहाश्रजी म.सा. के 21 जुलाई को 8 उपवास थे। चातुर्मास प्रारम्भ से ही यहाँ पर एकाशन, बियासन, आयंबिल, उपवास, तेला या अठाई की लड़ी चल रही है। यहाँ दस अठाई एवं एक बारह की तपस्या सम्पन्न हो चुकी है तथा नियमित प्रत्याख्यान चल रहे हैं। प्रातःकाल युवकों के लिए आयोजित 'एक कदम मोक्ष की ओर' कक्षा में 300 से 350 युवक-युवतियाँ भाग ले रहे हैं। श्रावकों के 21 गुणों पर आधारित 21 दिवसीय आराधना में 37 लोगों ने भाग लिया तथा प्रवचन में भी 300 से 350 श्रोता उपस्थित रहते हैं। बैंगलोर, चांगोटोला, मांडल, शिरपुर आदि स्थानों से दर्शनार्थियों का आवागमन हुआ है। तेलगु भाषी दिनेश वामन ने प्रवचन सुनकर आजीवन मांसाहार का त्याग किया है। -*गौतमचन्द गुगलिया*

भायंदर (मुम्बई)- व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. आदि ठाणा 6 का महावीर अपार्टमेंट, भाजी गली, स्टेशन रोड़, भायंदर (वेस्ट) में चातुर्मास उत्साहपूर्वक चल रहा है। यहाँ प्रायः गुजराती सम्प्रदाय के ही चातुर्मास होते हैं। 38 वर्षों में प्रथम चातुर्मास राजस्थानी सम्प्रदाय का हुआ है। जो बिना माइक एवं बिना पंखें के पूर्ण सादगी एवं बिना आडम्बर के चल रहा है। गुजराती एवं मारवाड़ी समाज के सदस्य पूर्ण उत्साह से धर्मसाधना कर रहे हैं। प्रार्थना प्रवचन एवं वाचनी के अतिरिक्त दोपहर के पश्चात् प्रतिक्रमण, 25 बोल, आगम एवं थोकड़ों के सीखने का क्रम चल रहा है। प्रत्येक शुक्रवार को 2 से 4 बजे तक महिला शिविर का आयोजन होता है, जिसमें जैनागम और स्तोक वारिधि कक्षाओं की तैयारी कराई जाती है। भिन्न-भिन्न विषयों पर प्रतियोगिताओं का आयोजन भी होता है। रविवार को प्रवचन प्रातः 9.30 बजे से 11.30 बजे तक रहता है। 21 से 23 जुलाई को श्री सागरमलजी म.सा. तथा आचार्य श्री शोभाचन्द्रजी म.सा. का पुण्य स्मृति दिवस तप-त्यागपूर्वक मनाया गया। सामूहिक रूप से उपवास एवं एकाशन के 65 तेले सम्पन्न हुए। चातुर्मास के प्रारम्भ से अठाई, तेला, उपवास, आयंबिल, नींवी, एकाशन, बियासन की लड़ी चल रही है। दो बहिनों के ग्यारह की तपस्या पूर्ण हो गई है। एक भाई ने 16 की तपस्या की है। लगभग 21 तेले सम्पन्न हुए हैं। अन्य छोटी-बड़ी तपस्याएँ भी निरन्तर चल रही हैं। नवदीक्षिता महासती श्री आराधनाश्रीजी के 25 जुलाई को 26 दिवसीय तपस्या चल रही थी। आगे मासक्षपण की संभावना है। सायंकाल प्रतिक्रमण में बहनों की 50-60 के लगभग उपस्थिति रहती है। उसके पश्चात् 9.45 बजे तक धर्मचर्चा चलती है। -*रतनराज भण्डारी, 093226-41172*

8-10 सितम्बर 2017 को राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी का आयोजन

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर के द्वारा 8-10 सितम्बर 2017 को सप्तम राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी का आयोजन महामन्दिर, जोधपुर एवं भोपालगढ़ संघों के संयुक्त तत्त्वावधान में किया जा रहा है। 8 सितम्बर को उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा., तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. की सन्निधि में जोधपुर में तथा 9-10 सितम्बर को पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. के सान्निध्य में देश के विभिन्न विद्वान् ''जैन परम्परा में ध्यान'' विषयक संगोष्ठी के विभिन्न पक्षों पर अपने शोधालेख प्रस्तुत करेंगे। -*डॉ. धर्मचन्द जैन, संयोजक*

भोपालगढ़ में संघ व संघीय संस्थाओं की वार्षिक आमसभा, गुणी अभिनन्दन, वार्षिक अधिवेशन तथा कार्यकारिणी सभाओं का आयोजन 15-16-17 सितम्बर 2017 को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर द्वारा प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी गुणी-अभिनन्दन एवं विशिष्ट सेवाभावी कार्यकर्ताओं का सम्मान-समारोह, संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं के वार्षिक अधिवेशन, कार्यकारिणी सभाएँ तथा वार्षिक साधारण सभा का आयोजन शुक्रवार, शनिवार एवं रविवार, दिनांक 15-16 एवं 17 सितम्बर 2017 को क्रियोद्धारक भूमि भोपालगढ़, जिला-जोधपुर (राज.) में किया जा रहा है, जिसमें सभी संघ सदस्य सादर आमंत्रित हैं-

श्राविका मण्डल का वार्षिक अधिवेशन तथा कार्यकारिणी बैठक 15 सितम्बर को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल का वार्षिक अधिवेशन, शुक्रवार, 15 सितम्बर 2017 को भोपालगढ़ (जिला-जोधपुर) में दोपहर 12.30 बजे आयोजित किया जायेगा। कार्यकारिणी बैठक इसी दिन सायं 7.30 बजे रखी गई है। श्राविका मण्डल की सभी शाखाओं तथा सदस्याओं से निवेदन है कि इस कार्यक्रम में अवश्य भाग लें तथा अपनी सहभागिता प्रदान करें तथा संघहित में अपने महत्त्वपूर्ण सुझाव 30 अगस्त 2017 तक भिजवाने का श्रम करावें। स्थानीय शाखाओं की ओर से आप क्या कार्यक्रम प्रस्तुत करना चाहती हैं। कृपया शीघ्र अपने नाम भिजवाने के साथ-साथ 7 दिवस तक लगातार विहार-सेवा देने वालों के नाम और महत्त्वपूर्ण सुझाव शीघ्र भिजवाने का श्रम करावें।- बीना मेहता, महासचिव, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), मो. 97727-93625

युवक परिषद् का वार्षिक अधिवेशन 16 सितम्बर को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् का वार्षिक अधिवेशन शनिवार, **16 सितम्बर, 2017** को भोपालगढ़ में दोपहर 12.30 बजे आयोजित किया जा रहा है। युवक परिषद् की सभी शाखाओं तथा सदस्यों से अनुरोध है कि वे अधिवेशन में अवश्य भाग लें। संघहित में अपने महत्त्वपूर्ण सुझाव भी हमें भिजवाने का श्रम करावें, ताकि आपके सुझावों पर चिन्तर कर उन्हें क्रियान्वित करने का प्रयास किया जा सके। -*मनीष लोढ़ा, महासचिव*

श्रावक संघ की कार्यकारिणी बैठक 16 सितम्बर को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की कार्यकारिणी बैठक शनिवार, 16 सितम्बर 2017 को सायं 8 बजे रखी गई है। सभी कार्यकारिणी सदस्य सादर आमंत्रित हैं।

संघ एवं संघीय संस्थाओं की संयुक्त वार्षिक आमसभा 17 सितम्बर को

संघ एवं संघ की सभी सहयोगी संस्थाओं की वार्षिक साधारण सभा रविवार, 17 सितम्बर 2017 को अपराह्न 3.00 बजे क्रियोद्धारक भूमि भोपालगढ़, जिला-जोधपुर में रखी गई है, जिसमें सभी संघ-सदस्यों की उपस्थिति सादर प्रार्थित है। वार्षिक साधारण सभा में विचारणीय बिन्दु इस प्रकार हैं-

1. गत बैठक की कार्यवाही का पठन
2. संचालन समिति/कार्यकारिणी की बैठक में लिए गये निर्णयों की जानकारी/अनुमोदन।
3. संघ व संघ की सभी सहयोगी संस्थाओं के वार्षिक प्रतिवेदन एवं सदस्यों से प्राप्त सुझावों पर विचार।
4. संघ व संघ की कार्यकारिणियों द्वारा स्वीकृत वर्ष 2016-2017 के वास्तविक आय-व्यय एवं वर्ष 2017-

2018 के प्रस्तावित बजट का अनुमोदन।

5. अंकेक्षक की नियुक्ति।
6. संघ की सहयोगी संस्थाओं के अध्यक्ष/संयोजक द्वारा अभिव्यक्ति।
7. राष्ट्रीय संघाध्यक्ष महोदय द्वारा अभिव्यक्ति।
8. अन्य विषय अध्यक्ष महोदय की आज्ञा से।

नोट– भोपालगढ़ पधारने पर आपको जिनशासन गौरव परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 9 एवं व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा 8 के दर्शन–वन्दन, प्रवचन–श्रवण का लाभ भी प्राप्त होगा।

संघ के सभी सदस्यों से अनुरोध है कि संघहित में अपने लिखित सुझाव संघ के प्रधान कार्यालय को 25 अगस्त 2017 तक भेजने की कृपा करें। संघहित के उपयोगी सुझावों पर यथोचित विचार एवं निर्णय करने का प्रयास रहेगा। संघ–सदस्यों को साधारण सभा में भाग लेने हेतु आप अपने क्षेत्र में भी अवश्य सूचना करें।

–पूरणराज अबाणी, महामंत्री

गुणी-अभिनन्दन समारोह में संघ द्वारा प्रदेय सम्मान

(समारोह 17 सितम्बर, दोपहर 12.30 बजे से)

1. **आचार्य हस्ती–स्मृति सम्मान**
2. **युवा प्रतिभा– शोध साधना–सेवा–सम्मान (45 वर्ष की आयु तक)–**
   1. **प्रशासनिक चयन**– राज्यस्तरीय व केन्द्रीय प्रशासनिक सेवा, न्यायाधिपति आदि विशिष्ट पदों पर चयन।
   2. **प्रोफेशनल विशिष्ट**– डॉक्टर, इंजीनियर, चार्टर्ड एकाउण्टेण्ट, कम्पनी सचिव व अन्य प्रोफेशनल कोर्स में योग्यता सूची में स्थान पाने पर।
   3. **शोध**– वैज्ञानिक खोज (अहिंसा व जैन सिद्धान्तों को पुष्ट करने वाली)
   4. **संघ–सेवा**– चतुर्विध संघ सेवा, विशेष धार्मिक अध्ययन, धार्मिक लेखन इत्यादि।
3. **विशिष्ट स्वाध्यायी सम्मान** (एक श्राविका, एक युवा, एक वरिष्ठ स्वाध्यायी)– कम से कम 10 वर्ष स्वाध्याय संघ, जोधपुर से स्वाध्यायी (पर्युषण पर्वाराधन) के रूप में सक्रिय सेवा।
4. **गुणी–अभिनन्दन–**
   1. **तपस्या**– कम से कम पाँच वर्ष तक एकान्तर, दीर्घ तपस्या, दीर्घ संवर–साधना या अन्य विशिष्ट तप।
   2. **अन्य**– सेवा, साधना, संघ उन्नयन में योगदान, चतुर्विध संघ–सेवा, विद्वान्।
5. **न्यायमूर्ति श्री श्रीकृष्णमल लोढ़ा स्मृति युवा शिक्षा प्रतिभा सम्मान**
6. **डॉ. बिमला भण्डारी जैन रत्न शोध सम्मान**

डॉ. बिमला भण्डारी जैन रत्न शोध सम्मान हेतु चयन

डॉ. बिमला भंडारी जैन रत्न शोध सम्मान–2017 की चयन समिति की बैठक 19 जुलाई 2017 को सम्पन्न हुई। बैठक में इस वर्ष प्राप्त प्रविष्टियों की जांच कर वर्ष 2017 में सम्मान हेतु अग्रांकित शोधार्थियों का चयन किया गया है– 1. डॉ. धीरेन्द्र कुमार जलवानी–जोधपुर, 2. डॉ. सुधा भंडारी–उदयपुर, 3. डॉ. ममता जैन–उदयपुर, 4. डॉ. संगीता खारीवाल–बैंगलुरू। इन सभी चयनित शोधार्थियों को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक

संघ द्वारा 17 सितम्बर 2017 को भोपालगढ़ में आयोजित गुणी अभिनन्दन समारोह में सम्मानित किया जायेगा।

-कैलाशमल भंडारी

संघ-सेवा सोपान में सहयोग दीजिए

संघ-सेवा, कर्म-निर्जरा का कारण है। इसलिए प्रत्येक सदस्य का कर्त्तव्य है कि वह तन-मन-धन और समर्पित भाव से संघ-सेवा में उत्तरोत्तर प्रगति करे। संघ अपनी सहयोगी संस्थाओं और शाखाओं के माध्यम से प्रत्येक संघ सदस्य तक पहुँचने के उद्देश्य के साथ ही ज्ञान-दर्शन-चारित्र में अभिवृद्धि, स्वधर्मी-वात्सल्य, लघुता भाव एवं संघ-संगठन के कार्य में निरन्तर गतिशील है। प्रत्येक परिवार संघ के विकास और उद्देश्यों की पूर्ति में तन-मन-धन से यथाशक्ति योगदान करे, इस पुनीत लक्ष्य में संघ ने संघ-सेवा सोपान योजना प्रारम्भ की है। संघ-सेवा सोपान योजना के अन्तर्गत संघ के कार्यों में चहुँमुखी विकास हेतु आर्थिक सहयोग प्रदान करने के लिए दीर्घकालीन योजना का प्रारूप रखा गया है। आप संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं द्वारा संचालित प्रवृत्तियों के कुशल संचालन के लिए संघ द्वारा प्रस्तावित विभिन्न श्रेणियों का अवलोकन कर संघ के सहयोगी बनने का लक्ष्य रखें। दानदाताओं के नाम संघ की मुख पत्रिका 'जिनवाणी' एवं बुलेटिन 'रत्नम्' में प्रकाशित किये जायेंगे। आपका सहयोग संघ का आधार है। आपके सहयोग, सुझाव एवं मार्गदर्शन से संघ चहुँमुखी विकास एवं प्रगति करेगा, ऐसा विनम्र विश्वास है। *-बसंत जैन, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष, अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ*

श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल के पदाधिकारियों का प्रवास सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की महासचिव श्रीमती बीनाजी मेहता-जोधपुर, सचिव श्रीमती अरूणाजी कर्नावट-जयपुर द्वारा 24 जुलाई, 2017 को व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 7 के हिण्डौनशहर में दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन-श्रवण का लाभ प्राप्त कर श्राविका मण्डल के पदाधिकारियों के साथ बैठक आयोजित की गई। हिण्डौनशहर से बौंली ग्राम में श्रावक-श्राविकाओं से सम्पर्क स्थापित किया गया तथा हिण्डौनशहर के श्री राजेशजी जैन के सहयोग से रसीदपुर ग्राम की शाखा में आई शिथिलता को दूर करने का प्रयास किया गया। हिण्डौनशहर, बौंली व रसीदपुर में श्रावक-श्राविकाओं से सम्पर्क साधकर बच्चों को संस्कारित करने हेतु बच्चों को संस्कार पाठशाला में भेजने की प्रेरणा की गई और संघ के प्रति श्रद्धा समर्पण एवं सामायिक, प्रतिक्रमण, धोवन पानी के लिए विशेष प्रेरणा कर आत्मीयता बढ़ाने का प्रयास किया गया। साप्ताहिक सामायिक सामूहिक रूप से स्थानक में करने एवं धोवन पानी का उपयोग करने के साथ स्वाध्यायी बनने की प्रेरणा की गई। *-पूर्णिमा लोढ़ा-अध्यक्ष*

बनें आगम अध्येता प्रतियोगियों हेतु आवश्यक सूचना

''बनें आगम अध्येता'' योजना के अन्तर्गत उत्तराध्ययन सूत्र भाग-1 से 3 का संयुक्त परिणाम सभी प्रतिभागियों के मोबाइल व केन्द्राधीक्षक को भेजा गया है। आवश्यक सूत्र परीक्षा का परिणाम भी केन्द्राधीक्षकों व प्रतिभागियों के मोबाइल नं. पर शीघ्र ही भेजा जा रहा है। प्रतिभागियों की पारितोषिक राशि प्रतिभागी के बैंक खाते में ही प्रेषित की जाएगी। अतः प्रतियोगिता के प्रत्येक प्रतिभागी अपना नाम, स्थान का उल्लेख करने के साथ निम्न जानकारी वॉट्सअप नं. 94131-32362 पर अथवा **shravikamandal@yahoo.com** भिजवाने का श्रम करावें-**Name of Account Holder, Bank Account Number, Name of Bank, Branch, IFSC Code, Mobile Number.**

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर के पुस्तक-प्रकाशन में प्राप्त सौजन्य

श्रद्धानिष्ठ, संघ सेवी सुश्राविका श्रीमती सरोजाबाई जी मूथा धर्मपत्नी संघ सेवी सुश्रावक स्व. श्रीमान् सुगनचंदजी

मूथा-बैंगलौर (मरुधरा में बलून्दा) का विगत 12 वर्षों से अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की पुस्तकों के प्रकाशन में महत्त्वपूर्ण सौजन्य प्राप्त हो रहा है, इसके लिए शिक्षण बोर्ड उनके प्रति हार्दिक आभार ज्ञापित करता है। मार्च-2016 से मई-2017 की अवधि में कक्षा द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पंचम, षष्ठ, दसवीं, थोकड़ा तृतीय और थोकड़ा पंचम की 8700 प्रतियों के प्रकाशन में 152057 रुपये की सहयोग राशि प्राप्त हुई।

-धर्मचन्द जैन, रजिस्ट्रार

'श्री कुशल जैन छात्रावास' जोधपुर में प्रवेश प्रारम्भ

सूर्यनगरी जोधपुर में श्री कुशल जैन छात्रावास का सफल संचालन विगत कई वर्षों से किया जा रहा है, जिसमें सैकण्डरी, हायर सैकण्डरी एवं कॉलेज स्तर के छात्र-छात्राओं के ठहरने एवं भोजन की उत्तम व्यवस्था है। छात्रावास में प्रवेश लेने वाले छात्र को 2500 रुपये मात्र में आवास-निवास एवं भोजन की व्यवस्था प्रदान की जाती है। प्रवेश के इच्छुक छात्र निम्नांकित पदाधिकारियों से सम्पर्क कर सकते हैं:- 1. मूलचन्द बाफना, ट्रस्टी-9461549178, 2. भागचन्द कांकरिया, ट्रस्टी-9829027379, 3. सुगनचन्द छाजेड़, संयोजक-75684-21744, **छात्रावास का पता-** श्री कुशल जैन छात्रावास, प्लॉट नं. 30, प्रथम पोलो, पावटा, जोधपुर-342006 (राज.), फोन नं. 0291-2546713

आचार्य हस्ती करुणा अवार्डस् हेतु आवेदन आमंत्रित

अहिंसा, करुणा, पशु कल्याण, पारिस्थितिकीय (इकोलोजी), पर्यावरण संरक्षण, पशु क्रूरता निवारण एवं शाकाहार के प्रचार/प्रसार में विशेष कार्य करने वाला व्यक्ति/संस्थान इन अवार्डस् के लिए निम्नांकित श्रेणियों में आवेदन (प्रमाणित तथ्यों सहित) 31 अक्टूबर 2017 तक कर सकता है-

1. **'आचार्य हस्ती करुणा रत्न अवार्ड'** (100000/-) विश्व के समस्त प्राणियों की भावनाओं का सम्मान करते हुए, करुणा भाव के प्रचार-प्रसार के लिए अपनी समर्पित सेवाएँ देने वाले व्यक्ति हेतु।
2. **'आचार्य हस्ती करुणा इंस्टिट्यूशन अवार्ड'** (50000/-) जीव-जंतुओं के संरक्षण अथवा मानवीय जीवन मूल्यों के प्रचार-प्रसार में समाज को विशेष सेवाएँ देने वाले संस्थान हेतु।
3. **'आचार्य हस्ती करुणा सेवा अवार्ड'** (25000/-) जिसने करुणा के क्षेत्र में अतिविशिष्ट सेवाएँ दी हों एवं करुणा क्लबों के कार्यों के प्रोत्साहन में अपना विशेष सहयोग देने वाले व्यक्ति हेतु।
4. **'आचार्य हस्ती करुणा विद्यालय अवार्ड'** (25000/-) विधिवत् गठित करुणा क्लब के माध्यम से विद्यार्थियों में प्राणिमात्र के प्रति प्रेम, अहिंसा, दया, आपसी सौहार्द, पशु कल्याण, पर्यावरण चेतना, नैतिकता आदि मानवीय मूल्यों की स्थापना हेतु विद्यालय को।
5. **'आचार्य हस्ती करुणा शिक्षक अवार्ड'** (25000/-) करुणा क्लब गठित विद्यालय में अहिंसा एवं करुणा के क्षेत्र में विशिष्ट सेवाएँ देने वाले शिक्षक हेतु।
6. **'आचार्य हस्ती करुणा युवा अवार्ड'** (25000/-) करुणा के क्षेत्र में विशिष्ट कार्य करने वाले युवा (21 से 40 वर्षीय) हेतु।
7. **'आचार्य हस्ती करुणा लेखक अवार्ड'** (25000/-) अपनी सशक्त लेखनी से करुणा के क्षेत्र में विशिष्ट कार्य करने पर।
8. **'आचार्य हस्ती करुणा वक्ता अवार्ड'** (25000/-) अपनी वाक्-पटुता से समाज/विद्यार्थियों में करुणा

भाव प्रसारित करने में अभूतपूर्व सहयोग करने पर।

9. **'आचार्य हस्ती करुणा नियोजक अवार्ड'** (25000/-) उस नियोजक-व्यक्ति विशेष हेतु जो अपने संस्थान/व्यवसाय की सफलता के साथ-साथ करुणा विषयक गतिविधियों से जुड़ने में भी विश्वास रखता हो एवं अधीनस्थ कर्मचारी भी समाजोपयोगी गतिविधियों में हिस्सा लेने के लिए प्रोत्साहित हों।
10. **'आचार्य हस्ती करुणा कर्मचारी अवार्ड'** (25000/-) अपने मालिक व अपने साथियों के बीच सामंजस्य रखने वाला एवं करुणा विषयक गतिविधियों से जुड़े कर्मचारी हेतु।
11. **'आचार्य हस्ती करुणा फिल्म अवार्ड'** (100000/-) 'करुणा' फिल्म बनाने के इच्छुक विद्यार्थी को प्रोत्साहन हेतु।

विशेषः- आचार्य हस्ती करुणा सेवा, विद्यालय एवं शिक्षक के अवार्ड्स की पात्रता के लिए करुणा अन्तरराष्ट्रीय संस्थान से सीधे जुड़े होना आवश्यक है। समस्त आचार्य हस्ती करुणा अवार्ड्स **'सुराणा एण्ड सुराणा इण्टरनेशनल अटॉर्नीज चेरीटेबल ट्रस्ट'** के सौजन्य से मय प्रशस्ति पत्र के प्रदान किए जायेंगे। आवेदनकर्ता पूर्ण पता अंग्रेजी भाषा में स्पष्ट शब्दों में निम्नानुसार लिखें- Application for 'NOMINATION FOR AHK AWARDS' लिखते हुए निम्नांकित पते से प्राप्त करें-'Awards Secretariat, International law Centre, 61-63, Dr. Radhakrishnan Salai, Mylapore, Chennai-600004, Email: karunaawards@gmail.com अथवा 'Acharya Hasti Karuna .....Award', Karuna International, "Munoth Centre", IIFloor, #343, Triplicane High Road, Chennai-600005 (T.N.)' Ph. 044-2859 1714/1724, Email-info@karuna international.org-*कैलाशमल दुगड़, अध्यक्ष-आचार्य हस्ती करुणा अवार्ड्स् चयन समिति-098410-08585*

'अहिंसात्मक चिकित्सा सेवा सम्मान' हेतु प्रविष्टियाँ आमन्त्रित

आचार्य हस्ती अहिंसा शोध संस्थान, जोधपुर द्वारा स्वावलम्बी अहिंसात्मक चिकित्सा पद्धतियों के द्वारा उपचार, प्रशिक्षण, सेमीनार, प्रचार-प्रसार एवं शोध के क्षेत्र में सेवा देने वाले चयनित व्यक्तियों को भव्य समारोह में सम्मानित किया जायेगा। इनकी श्रेणियाँ इस प्रकार हैं- **1. उत्कृष्ट सेवा सम्मान (एक)** राशि 51000/ रुपये, 2. **विशिष्ट सेवा सम्मान (दो)** राशि 11000/- रुपये प्रत्येक, **3. दक्ष सेवा सम्मान (तीस)** राशि 5000/- रुपये प्रत्येक। उपर्युक्त सम्मान हेतु आपसे सविनय अनुरोध है कि अपने कार्यों की विस्तृत जानकारी के साथ अपनी प्रविष्टि **30 सितम्बर 2017** तक डाक द्वारा निम्न पते पर प्रेषित करने का कष्ट करावें। **सम्पर्क सूत्रः-** डॉ. चंचलमल चोरडिया, प्रबन्धक न्यासी, आचार्य हस्ती अहिंसा शोध संस्थान, चोरडिया भवन, गोल बिल्डिंग रोड, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर-342003 (राज.) , फोन : 0291-2621454, 94141-34606 (मोबाइल)।

-चंचलमल चोरडिया

जैन समाज के छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति

श्वेताम्बर जैन समाज के जरूरतमन्द परिवारों के मेधावी, होनहार, प्रतिभावान छात्र-छात्राएँ, जिन्होंने 8 वीं एवं इससे उच्च कक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की है तथा जिनके परिवार की मासिक आय 15000/- रुपये से अधिक नहीं है, छात्रवृत्ति हेतु आवेदन कर सकते हैं:-

1. छात्र-छात्रा का एक फोटो।
2. इस वर्ष की प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण कक्षा की मार्कशीट की एक प्रतिलिपि साथ भेजें। इण्टरनेट पर आया गुण-पत्र (अंकतालिका, मार्कशीट) भी स्वीकार है।

3. दो लिफाफों पर अपना पूरा नाम, पूरा पता, तहसील, जिला, राज्य एवं पिनकोड, मोबाइल/फोन नं. लिखें, आवेदन-पत्र में भी लिखें, लिफाफे पर लिखना काफी (पर्याप्त) नहीं है।
4. दोनों लिफाफों में दस-दस रुपये रोकड़ी (कैश) रखें।
5. आवेदन-पत्र में आपके परिवार की आय की जानकारी (तफसील) विस्तार से खुलासा करें। आप व्यापारी हैं तो किस चीज का व्यापार करते हैं। अगर आप नौकरी करते हैं तो महीने का वेतन (पगार) कितना है?
6. आप अपना मोबाइल, फोन नं. एवं पिनकोड सुन्दर अंकों में अंग्रेजी में लिखें।

नोटः- यह योजना आर्थिक रूप से कमजोर लोगों के लिये है, कृपया सम्पन्न लोग आवेदन नहीं करें।

सम्पर्क सूत्र- श्री लाभचन्द जी कोठारी, सन्तोक तारा जैन चेरिटेबल ट्रस्ट, डी-120, कृष्णा मार्ग, यूनिवर्सिटी रोड, बापूनगर, जयपुर-302015-06, मोबाइल नं. 93140-03637

विधवाओं एवं जरूरतमंदों को आर्थिक सहयोग

1. श्वेताम्बर ओसवाल जैन समाज की आर्थिक रूप से कमजोर, निःसन्तान, बेसहारा, वृद्ध, अशक्त, विधवा महिलाएँ एवं पुरुष जो स्वयं नहीं कमा सकते और परिवार में कोई कमाने वाला नहीं है, किराणे के लिये आर्थिक सहयोग प्राप्त करने हेतु आवेदन कर सकते हैं।
2. आर्थिक रूप से कमजोर, परित्यक्ता (पति द्वारा छोड़ी), तलाकशुदा एवं युवा विधवा बहनें जिनके 10 साल से छोटे बच्चे हैं, वे भी आवेदन कर सकती हैं।
3. परिवार को पालने वाली पुरुषार्थी बहनें जो घर से बाहर कामकाज, मेहनत, मजदूरी करती हैं, वे भी आवेदन कर सकती हैं।
4. आवेदन के लिये अर्जीपत्र भेजें, जिसमें आपकी आर्थिक और पारिवारिक स्थिति की जानकारी हो। अभी आपके रोटी, कपड़ा, मकान की व्यवस्था कैसे हो रही है?

आवेदन इस प्रकार करें:-

1. आपका एक फोटो।
2. दो लिफाफों पर आपका नाम, मकान मालिक का नाम, पूरा पता, तहसील, जिला, राज्य, आपकी जगह का पोस्ट का पिनकोड, मोबाइल नं./फोन नं. लिखें, आवेदन-पत्र में भी पूरा पता, मोबाइल नं. अवश्य लिखें। सिर्फ लिफाफों पर लिखना पर्याप्त नहीं है।
3. दोनों लिफाफों में 10-10 रुपया रोकड़ी (कैश) रखें।
4. वर्तमान में सहयोग राशि किराणे के लिये ही है। मेडिकल, चिकित्सा, विकलांग भत्ता, लोन, उधार आदि के आवेदन स्वीकार्य नहीं है।
5. किराणे के लिये सहयोग राशि का चेक किराणा स्टोर के नाम से बनेगा, अर्जीदार के नाम से नहीं बनेगा।

सहयोग हेतु आवेदन करें- श्री लाभचन्द जी कोठारी 'एम.ए.', गोठी चेरिटेबल ट्रस्ट, डी-120, कृष्णा मार्ग, यूनिवर्सिटी रोड, बापूनगर, जयपुर-302015-06, मो. नं. 93140-03536

बालकों में प्रतिरोधात्मक शक्ति हेतु स्वर्णप्राशन का प्रयोग

काश्यप संहिता में कहा गया है-''स्वर्णप्राशनं हि एतत् मेधाग्निबलवर्धनम्'' अर्थात् स्वर्णप्राशन से मेधा शक्ति, पाचन शक्ति एवं रोगप्रतिरोधात्मक क्षमता बढ़ती है। इस संहिता वाक्य का क्रियात्मक रूप देते हुए डॉ.

सर्वपल्ली राधाकृष्णन् राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय, जोधपुर के द्वारा बालकों को शुद्ध स्वर्ण, घृत, मधु तथा अन्य महत्त्वपूर्ण औषधियों के मिश्रण को पुण्य नक्षत्र में चटाया जाता है। यह एक प्रकार की आयुर्वेदिक इम्यूनाइजेशन विधि है। आयुर्वेद विश्वविद्यालय के इस महत्त्वपूर्ण कार्य में सहयोग करते हुए आचार्य हस्ती अहिंसा शोध संस्थान, जोधपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में सामायिक-स्वाध्याय भवन, नेहरुपार्क में बच्चों को स्वर्णप्राशन कराया जाता है। इस स्वर्णप्राशन का माधुरी व्यास (फर्स्ट 'सी' रोड़, सरदारपुरा, जोधपुर (राज.), मोबाइल : 87643-01272) की बालिका रिद्धिमा व्यास को बहुत लाभ हुआ। जिसकी लिखित प्रतिक्रिया हमें प्राप्त हुई, वह इस प्रकार है- ''मेरी बच्ची रिद्धिमा व्यास बचपन से टॉन्सिल्स से पीड़ित थी। लेकिन जब से मैंने बच्ची को स्वर्णप्राशन दवाई पिलाई तब से बच्ची की यह बीमारी खत्म हो गई। पहले मेरी बच्ची को हर 15 दिन में 103, 104 डिग्री बुखार होता था, लेकिन इस दवाई के बाद बुखार नहीं आता है और मेरी बच्ची की लम्बाई में भी फर्क पड़ा। 01 मई 2017 को मैंने इस केम्प के बारे में समाचार-पत्र में पढ़ा तो मैं बहुत हर्षित हुई वरना यह दवाई पिलाने हमको करीब 30 किलोमीटर दूर मण्डोर से आगे आयुर्वेदिक विश्वविद्यालय जाना पड़ता था।''

-नवरतन डागा, संयुक्त प्रबन्धक न्यासी, आचार्य हस्ती अहिंसा शोध संस्थान

दिल्ली में ग्रीष्मकालीन प्राकृत अध्ययन शाला सम्पन्न

बी.एल. इन्स्टीट्यट ऑफ इण्डोलॉजी, दिल्ली के द्वारा 4 से 25 जून 2017 तक ग्रीष्मकालीन प्राकृत अध्ययनशाला का आयोजन किया गया, जिसमें उच्च पाठ्यक्रम के अन्तर्गत 9 प्रतिभागियों ने तथा प्रारम्भिक पाठ्यक्रम में 19 प्रतिभागियों ने अध्ययन किया। 04 जून को उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि प्रो. दीप्ति एस. त्रिपाठी ने कहा कि भारतीय संस्कृति का सर्वांगीण अध्ययन प्राकृत भाषा के ज्ञान के अभाव में सम्भव नहीं है। अध्ययनशाला में प्राकृत के सामान्य नियमों तथा आचार्य हेमचन्द्र के प्राकृत व्याकरण के चुने हुए सूत्रों का अध्ययन कराने के साथ विभिन्न प्राकृत भाषाओं में रचित ग्रंथों के अंशों का भी अध्ययन कराया जाता है। अध्ययनशाला में सभी प्रदेशों के प्रतिभागी होते हैं। 25 जून को समापन समारोह के मुख्य अतिथि प्रो. रमाकान्त शुक्ल ने कहा कि प्राकृत भाषा सीखने की कोई उम्र नहीं होती। अध्ययनशाला के दौरान प्रो. जितेन्द्र बी. शाह-अहमदाबाद, प्रो. अनूपा पाण्डे-दिल्ली, प्रो. मारुतिनन्दन प्रसाद तिवारी-वाराणसी, प्रो. गयाचरण त्रिपाठी-दिल्ली के विशेष व्याख्यान हुए। प्रो. जगतराम भट्टाचार्य-शांति निकेतन, प्रो. अशोककुमार सिंह-दिल्ली, डॉ. सुमतकुमार जैन-जयपुर आदि ने अध्यापन कार्य किया। *-निदेशक*

संक्षिप्त समाचार

चेन्नई- श्री जैन रत्न युवक परिषद्, चेन्नई के तत्त्वावधान में आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर के पाठ्यक्रम पर आधारित परीक्षा का आयोजन 16 जुलाई 2017 को तमिलनाडु के 45 केन्द्रों पर व्यवस्थित रूप से सम्पन्न हुआ। इसमें 460 परीक्षार्थियों ने भाग लिया। युवक परिषद् के कार्यकर्त्ताओं ने परीक्षा केन्द्रों पर जाकर परीक्षा सम्पन्न कराने में मदद की तथा नकल रोकने हेतु पाँच टीमों का गठन किया, जिन्होंने परीक्षा केन्द्रों पर जाकर आकस्मिक निरीक्षण किया। *-मांगीलाल चोरडिया, शाखा सचिव*

बैंगलुरु- जीतो बैंगलुरु द्वारा तीन विहार धामों का निर्माण कराया जाना है। प्रथम विहार धाम का भूमि पूजन तुमकुर से बैंगलुरू की ओर 15 किलोमीटर पर नन्दिहल्ली ग्राम में सम्पन्न हुआ। जीतो के चेयरमेन पारस जैन, विहार धाम के संयोजक राजेश मुथा, सहसंयोजक प्रवीण भण्डारी ने विक्रम गुरुजी एवं जसवन्त गुरुजी के सान्निध्य में विधिवत् पुष्प

नक्षत्र में पूजा की। -*सज्जनराज मेहता*

पूना- भारत सरकार के डाक विभाग की ओर से 29 जून 2017 को श्रीमद् राजचन्द्र पर 5 रुपये का स्मारक डाक टिकिट श्रमणसंघीय सलाहकार श्री दिनेशमुनिजी के सान्निध्य में जारी किया गया। जिसका लोकार्पण पूना शहर के कात्रज स्थित आनन्द दरबार में सम्पन्न हुआ। इस वर्ष श्रीमद् राजचन्द्रजी की 150 वीं जन्म जयन्ती है।

देशनोक (राज.)- आचार्य श्री रामलालजी महाराज के आज्ञानुवर्ती शासनदीपक तपस्वीराज श्री अशोकमुनिजी महाराज के 71 वां मासक्षपण तप पूर्णता की ओर चल रहा है। वे अब तक 70 मासक्षपण पूर्ण कर चुके हैं। सम्पूर्ण जैन समाज में सम्भवतः यह सर्वाधिक मासक्षपण तप का कीर्तिमान है। -*महेश नाहटा*

बधाई

अजय लोढ़ा

निकिता जैन

सुधीर जैन

विपुल मेहता

विनीत बरडिया

सागर बागमार

अंकित जैन

चिराग खिवसरा

शुभम जैन

कोमल चोपड़ा

जोधपुर- श्री अजय लोढ़ा सुपुत्र श्रीमती लताजी-कमलजी लोढ़ा, सुपौत्र श्रीमती विमला-गोविन्दमलजी लोढ़ा ने सी.ए.(C.A.), सी.एस. (C.S.) एवं आई.सी.डब्ल्यू.ए. (ICWA) में सफलता प्राप्त कर तीनों प्रोफेशनल डिग्रियाँ प्राप्त कीं। -*कमल लोढ़ा*

जमशेदपुर-सुश्री निकिता जैन सुपुत्री श्रीमती वन्दना-मनीषजी जैन, सुपौत्री श्रीमती मोहिनी-डॉ. जीवराजजी जैन ने 12 वीं कक्षा की परीक्षा में 97 प्रतिशत अंक प्राप्त कर अपने शहर में द्वितीय स्थान पर रहीं। NEET में अच्छा स्थान प्राप्त करने से उनको एम.बी.बी.एस. हेतु सरकारी स्टेनली मेडिकल कॉलेज, चेन्नई में दाखिला मिला है। -*डॉ. जीवराज जैन*

जोधपुर- श्री सुधीर जैन सुपुत्र श्रीमती सुशीला-गणपतराजजी बच्छावत एवं सुपौत्र स्व. श्री लूणकरणजी बच्छावत ने प्रथम प्रयास में सी.ए. (C.A.) की परीक्षा उत्तीर्ण की है। आपको सामायिक, प्रतिक्रमण, 25 बोल कण्ठस्थ हैं तथा प्रतिवर्ष पर्युषण में स्वाध्यायी के रूप में सेवाएँ भी देते हैं।

चेन्नई- श्री विपुल मेहता सुपुत्र श्रीमती सुनीता-महेशजी मेहता ने सी.ए. (C.A.) की परीक्षा उच्च अंकों में उत्तीर्ण की। आप व्याख्यात्री महासती श्री शान्तिप्रभाजी म.सा. के सांसारिक भतीजे हैं।

किशनगढ़- श्री विनीत बरडिया सुपुत्र श्रीमती सुमन-निर्मलजी बरडिया ने सी.ए. (C.A.) की परीक्षा प्रथम प्रयास में उत्तीर्ण की।

बालोतरा- श्री सागर बागमार सुपुत्र श्री जवेरीलालजी बागमार (पाटोदी) का 26 वर्ष की उम्र में संघ लोक सेवा आयोग (यू.पी.एस.सी.) द्वारा आयोजित सिविल सेवा परीक्षा में 186 वीं रेंक पर चयन हुआ है। आप हुक्म संघ

(आचार्य नानेश) में दीक्षित साध्वी श्री विवेकश्रीजी म.सा. के सांसारिक भतीजे हैं। आप सरल हृदय एवं धार्मिक प्रवृत्ति के हैं। -*सोहन श्रीश्रीमाल*

जयपुर- श्री अंकितकुमार जैन सुपुत्र श्रीमती हेमलता-घनश्यामजी जैन (लाल भवन), सुपौत्र स्व. श्री रामप्रहलाद जी जैन (सुमेरगंजमण्डी वाले) ने सी.ए. की परीक्षा अच्छे अंकों से उत्तीर्ण की।

जोधपुर- श्री चिराग खिंवसरा सुपुत्र श्रीमती शोभा-अशोकजी खिंवसरा एवं सुपौत्र स्व. श्री जौहरीमलजी खिंवसरा ने सी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की है।

अलीगढ़ (टोंक)- श्री शुभम् जैन सुपुत्र श्री चान्दमलजी जैन को जयपुर में आयोजित सेवा संस्थान के राज्य स्तरीय सम्मान समारोह में स्मृति चिह्न व प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। आपने उच्च माध्यमिक राजस्थान बोर्ड से कला संकाय में 88 प्रतिशत अंक प्राप्त किए।

जोधपुर- सुश्री कोमल चौपड़ा (M.B.B.S., M.D., Anesthesia) सुपुत्री श्रीमती ललीता-श्री राजाबाबू जी चौपड़ा एवं सुपौत्री स्व. श्रीमती सज्जनकंवर-श्री हीरालालजी चौपड़ा का वरिष्ठ चिकित्सक के पद पर AIIMS, Jodhpur के निश्चेतना विभाग (एनेस्थीसिया डिपार्टमेंट) में चयन हुआ है। आप सामाजिक क्षेत्र के साथ-साथ धार्मिक क्षेत्र में भी होनहार छात्रा हैं। युवक परिषद, जोधपुर द्वारा आयोजित शिविरों में भी आप हमेशा वरीयता सूची में रहीं। जोधपुर में रहते हुए आप हमेशा संत-सतियों के दर्शन-वंदन का लाभ लेती हैं। आपके पूज्य पिताजी संघ सेवा में सक्रिय रूप से अपना सहयोग प्रदान कर रहे हैं।

श्रद्धाञ्जलि

सूरत- आचार्य श्री रामलालजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी साध्वी श्री धन्यश्रीजी म.सा. का संथारापूर्वक 69 वर्ष की अवस्था में देवलोकगमन हो गया। वे सरलता, सहजता, सहनशीलता की प्रतिमूर्ति थीं। खिरकिया में 28 जनवरी 2007 को आपने आचार्यश्री के मुखारबिंद से अपनी सुपुत्री डॉ. शशि छाजेड़ (वर्तमान में साध्वी श्री प्रणतप्रज्ञाजी म.सा.) के साथ जैन भागवती दीक्षा ग्रहण की थी। विगत 5 वर्षों से कैंसर की वजह से सूरत में विराजमान थीं।

-महेश नाहटा

नागौर- धर्मप्रेमी सुश्रावक श्री उगमचन्दजी सुराणा सुपुत्र स्व. श्री मंगलचन्दजी सुराणा का 17 जुलाई, 2017 को देहावसान हो गया। आपकी रत्नसंघ के संत-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा व भक्ति थी। आपका जीवन सरलता, मधुरता, उदारता, सेवाभावना आदि सद्गुणों से युक्त था। आपने अपने जीवन में अनेक त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण कर रखे थे। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय करने वाले चिन्तनशील श्रावक थे। आपका परिवार संघ-सेवा, समाज-सेवा में सदैव अग्रणी रहा है। रत्नसंघ द्वारा संचालित सभी गतिविधियों में संघ को सक्रिय योगदान प्राप्त होता रहता है। वर्ष 2010 में व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. आदि ठाणा के चातुर्मास में आपने सपरिवार लाभ लिया तथा वर्तमान में व्याख्यात्री महासती श्री प्रतिष्ठाप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा के चातुर्मास में आपके पश्चात् सम्पूर्ण परिवारजन धर्म-ध्यान का लाभ ले रहे हैं।

चेन्नई- धर्मशीला, तपशीला सुश्राविका श्रीमती सायरदेवीजी कांकरिया धर्मपत्नी श्री मदनलालजी कांकरिया (भोपालगढ़ निवासी) का 76 वर्ष की वय में 01 जुलाई, 2017 को संथारे के साथ समाधिमरण भोपालगढ़ में हो गया। आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के भोपालगढ़ चातुर्मास में धर्मध्यान का लाभ लेने पधारी थीं। आपकी धर्मध्यान में गहरी रुचि थी। पिछले 55 वर्ष से

रात्रिचौविहार-त्याग करती थीं। 3-4 बार एकान्तर तप एवं 5 अठाई तप किए। व्याख्यात्री महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा. के संसारपक्ष में आप चाचीजी एवं महासती श्री प्रभावतीजी म.सा. की छोटी बहिन थीं। महासती श्री सरलेशप्रभाजी एवं महासती श्री विनयप्रभाजी म.सा. की संसार पक्ष की मौसीजी थीं। आपके सुपुत्र श्री कमलकिशोरजी कांकरिया रत्नसंघ के उत्साही एवं धर्मनिष्ठ सक्रिय कार्यकर्त्ता हैं।

जयपुर- वरिष्ठ सुश्रावक श्री उम्मेदमलजी जैन (चौथ का बरवाड़ा वाले) का 89 वर्ष की आयु में 2 जुलाई 2017 को स्वर्गगमन हो गया। आप आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा., आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के अनन्य भक्त थे। आप नित्य 11 सामायिक एवं प्रत्येक पर्युषण में अठाई तप करते थे। आप चौथ का बरवाड़ा संघ के अध्यक्ष भी रहे। आपने सभी संत-सतियों में अपनी अलग से पहचान बना रखी थी। आपके इन्द्रकुमारजी, सुरेन्द्रजी, नरेन्द्रजी आदि छहों ही पुत्रों का संघ सेवा में योगदान रहता है।

जोधपुर- श्रीमती अकलकंवरजी सामसुखा धर्मपत्नी श्री गुमानमलजी सामसुखा का 08 जुलाई 2017 को 80 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। आप उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के प्रति अटूट श्रद्धा रखते थे और शासन प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. की प्रेरणा से नियमित रात्रिभोजन-त्याग, जमीकन्द-त्याग, नवकारसी, पौरषी, व्रत नियम में अति दृढ़ थी।

जोधपुर- धर्मपरायणा सुश्राविका श्रीमती उषाजी भंसाली धर्मपत्नी श्री चन्दनराजजी भंसाली (पुत्रवधू स्व. श्रीमती उगमकंवरजी-स्व. श्री जसवन्तराजजी भंसाली) का 68 वर्ष की वय में 17 जुलाई 2017 को स्वर्गगमन हो गया। आप सरलहृदया, मिलनसार एवं स्नेहयुक्ता थीं। आपका परिवार रत्नसंघ के प्रति समर्पित परिवार है। सुपुत्रियाँ श्रीमती मंजुलाजी चोरिडया, अंजूजी शाह एवं रंजूजी सिंघवी ने मातृ सेवा का लाभ लेकर उनकी अन्तिम आराधना में भरपूर सहयोग किया।

जोधपुर- सुश्रावक श्री शरबतचन्दजी अबानी 18 जुलाई 2017 को स्वर्गस्थ हो गए। संघनिष्ठ, कर्त्तव्यनिष्ठ विविध गुणों से युक्त सुश्रावकजी का जीवन संघ व समाज के प्रति समर्पित रहा। उनका जीवन सरलता, उदारता, सेवाभावना आदि सद्गुणों से युक्त था। आपका सम्पूर्ण परिवार समाज-सेवा, स्वधर्मी वात्सल्य सेवा में निष्ठापूर्वक जुड़ा हुआ है। संघ-सेवा एवं आतिथ्य सत्कार में भी अबानी परिवार सदैव समर्पित रहा है।

जोधपुर- श्रद्धानिष्ठ सुश्राविका श्रीमती मीमकंवरजी सर्राफ धर्मसहायिका श्री सोमचन्दजी सर्राफ का 1 जुलाई 2017 को चौविहार संथारापूर्वक स्वर्गवास हो गया। आपका जीवन, सहज, सरल और सादगी से परिपूर्ण था। आपके दो पुत्र व तीन पुत्रियाँ हैं। आपकी सुपुत्री श्रीमती रतनजी चोरडिया वरिष्ठ स्वाध्यायी होने के साथ संघसेवा में पूर्ण रूप से समर्पित हैं।

बालोतरा- श्री तखतमलजी गोठी सुपुत्र श्री मिश्रीमलजी गोठी (पायला) का 29 जून, 2017 को 78 वर्ष की उम्र में परलोकगमन हो गया। आप प्रतिदिन 7-8 सामायिक करते थे। आपने 25 वर्ष पूर्व शीलव्रत अंगीकार किया था। आप शान्त, सरल स्वभाव के थे। आपके बड़े पुत्र श्री कान्तिलालजी गोठी ओसवाल समाज, बालोतरा के मंत्री हैं। आपका पूरा परिवार धार्मिक संस्कारों से जुड़ा हुआ है।

-श्री सोहनलाल श्रीश्रीमाल

जयपुर- संतसेवी श्री विनयजी जैन सुपुत्र श्री भागचन्दजी जैन का 12 जुलाई 2017 को स्वर्गवास हो गया। आप प्रतिदिन सामायिक-प्रतिक्रमण करते थे। आप नित्यानन्द नगर में संत-सती मण्डल के विराजने पर पूर्ण सेवा भाव से

सेवाभक्ति करते थे। संत-सती मण्डल को गोचरी करने में सहयोग प्रदान कर कर्म-निर्जरा का लाभ प्राप्त करते थे। आपके जीवन पर संत-मुनिराजों एवं सती वर्ग का विशेष प्रभाव रहा।

देई- सुश्राविका श्रीमती कल्याणीदेवीजी जैन धर्मसहायिका श्री निहालचन्दजी जैन का 85 वर्ष की अवस्था में 05 जुलाई 2017 को स्वर्गारोहण हो गया। आप धर्मनिष्ठ सुश्राविका थीं तथा देव, गुरु, धर्म के प्रति पूर्ण समर्पित थीं।

-रामपाल गोयल, मंत्री

चेन्नई- समाजसेवी, सुश्रावक श्री धरमचन्दजी नाहर (कोसाणा वाले) का 82 वर्ष की आयु में 18 मई 2017 को स्वर्गवास हो गया। आप रत्नसंघ के संत-सतीवृन्द के प्रति श्रद्धाशील थे। आप बीस वर्षों से शीलव्रत का पालन कर रहे थे।

कोलार (कर्नाटक)- सुश्रावक श्री विजयराजजी धारीवाल सुपुत्र श्री रघुनाथमलजी धारीवाल का 07 जुलाई, 2017 को 77 वर्ष की उम्र में सागारी संथारा सहित परलोकगमन हो गया। आपने कोलार जैन श्री संघ के अध्यक्ष पद का दायित्व बखूबी निभाया। आप संत-सतियों के गोचरी पानी और विहार सेवा में सदा तत्पर रहते थे।

अरसीकेरे (कर्नाटक)- सुश्रावक श्री रोशनलालजी चौपड़ा सुपुत्र स्व. श्री शान्तिलालजी चौपड़ा का 37 वर्ष की अल्प अवस्था में 14 जुलाई 2017 को देवलोकगमन हो गया। आप अरसीकेरे श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ के अध्यक्ष थे। आपका जीवन सहज, सरल, सादगीमय एवं सेवाभावी था। आपकी संघ-सेवा एवं समाज-सेवा अनुकरणीय थी।

चेन्नई- धर्मपरायणा सुश्राविका श्रीमती प्रेमलताजी सुराणा धर्मपत्नी श्री तेजराजजी सुराणा एवं पुत्रवधू श्री हेमराजजी सुराणा (कुचेरा निवासी) का 16 जुलाई, 2017 को प्रयाण हो गया। आपकी जैन समाज के सभी साधु-साध्वियाँ की सेवा में विशेष रुचि थी। आपकी युवाचार्य मधुकर मुनिजी के प्रति विशेष श्रद्धा थी। *-पारसमल सुराणा*

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी-परिवार तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

जिनवाणी की महत्ता प्रकट की न जाय

सभी मनुष्य आज दुखःमय, चिन्ताग्रस्त जीवन जी रहे हैं। ऐसे जीवन का प्रमुख कारण है कि मनुष्य के पास वर्तमान की चकाचौंध में अपनी समस्याओं को सुलझाने के लिए सम्यक् विचार और चिन्तन नहीं है। सम्यग् विचार और चिन्तन की अभिवृद्धि के लिए आवश्यकता होती है तीन बातों की - 1. आध्यात्मिक पुस्तकों का स्वाध्याय, 2. प्रवचन श्रवण, 3. सत्संगति।

हमारे पास प्रतिदिन तीनों कार्य करने की रुचि है और उक्त कार्य निरन्तरता के साथ कर रहे हैं तो निश्चित ही हमारा जीवन सम्यक् विचार एवं चिन्तन के साथ आनन्ददायक हो जायेगा। लेकिन...? ऐसा हम नहीं कर पा रहे। वर्तमान जीवन शैली इतनी परिवर्तित हो चुकी है कि स्वयं को समय ही नहीं दे पा रहे हैं और समय देने की भावना भी मन में आती है तो हम विचार करते हैं कि इतनी सारी पुस्तकें हैं किसका स्वाध्याय करें? मेरे अनुभव से कहना चाहता हूँ कि आज के समय में आगमिक ज्ञान का स्वाध्याय, प्रवचन का श्रवण, सत्संगति से हमारे संस्कार कैसे बढ़ें तो उसके लिए एक पुस्तक का स्वाध्याय हमारे लिए लाभदायक हो सकता है, वह पुस्तक है 'जिनवाणी' पत्रिका।

यह ऐसी मासिक पत्रिका है जिसका निरन्तर स्वाध्याय हमारे विचारों, चिन्तन आदि को सम्यक् बना सकता है। जिनवाणी पत्रिका में वह आकर्षण शक्ति है कि यह जिस मनुष्य के हाथ में एकबार खुल जाती है तो अन्तिम पृष्ठ के पूरे होने पर ही बंद होती है। *-श्री मनीष जैन 'उज्ज्वल'*, "GHT", No.5, Car Street, **Poonamallee,** Chennai-600056 (TN)

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

1000/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन (अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक

क्रम संख्या 15826 से 15827 तक 2 सदस्य बने।

'जिनवाणी' मासिक पत्रिका हेतु साभार प्राप्त

11000/- श्री चम्पालालजी, विजयराजजी, ज्ञानचन्दजी, किशोरचन्दजी छाजेड़, शोरापुर, श्रीमती लक्ष्मीबाईजी-ज्ञानचन्दजी छाजेड़ के सुपुत्र चि. अरूण कुमारजी का सौ.कां. रोशनी के संग शुभ विवाह सुसम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम।

11000/- श्री शंकरलालजी, फूलचन्दजी तातेड, राजनांदगाँव की ओर से सप्रेम।

11000/- श्री यशवन्तराजजी, ललित कुमारजी, भरत कुमारजी, दिनेश कुमारजी सांखला, बैंगलोर, चि. जितेशजी सुपुत्र श्रीमती तारादेवीजी-भरत कुमारजी, सुपौत्र श्रीमती प्रकाशबाई-यशवन्तराजजी सांखला संग सौ.कां. पूजा जी सुपुत्री श्रीमती सरलाजी- हेमन्तराजजी लोढ़ा-चामराजपेठ का शुभविवाह 08 मई 2017 को सुसम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम।

10000/- श्री मिलापचन्दजी डागा, बूंदी की ओर से सप्रेम।

7000/- श्री गौतमचन्दजी, प्रवीणजी, मनोज कुमारजी, शैलेशजी, सिद्धार्थजी संकलेचा, कुम्भकोणम्-चेन्नई, श्री प्रवीण कुमारजी सुपुत्र एवं श्रीमती सुशीलाजी-गौतमचन्दजी संकलेचा के 9 दिवसीय तपस्या के प्रत्याख्यान भोपालगढ़ में ग्रहण करने के उपलक्ष्य में सप्रेम।

5100/- श्री इन्द्रमलजी, सुरेन्द्रजी, नरेन्द्रजी, धनराजजी, राजेन्द्रजी, कमलेशजी जैन, मानसरोवर-जयपुर, पूज्य सुश्रावक श्री उम्मेदमलजी जैन (चौथ का बरवाड़ा वाले) का 02 जुलाई 2017 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

5100/- श्री श्रीपालचन्दजी मेहता, जोधपुर, सहयोगार्थ।

3100/- श्री सुभाषजी, कुशलराजजी कोठारी, चेन्नई, स्व. श्री शान्तिलालजी कोठारी (चावण्डिया वाले) की प्रथम पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में।

2500/- श्री सम्पतराजजी, राजकंवरजी भण्डारी, ट्रिपलीकेन, चेन्नई, अपनी दौहित्री प्रियंका सुपुत्री श्री किशोरचन्दजी-संगीताजी विनायकिया, ताम्बरम, चेन्नई के शुभविवाह में मायरा के उपलक्ष्य में।

2500/- श्री बस्तीमलजी, श्रेणिककुमारजी, राजेशजी, सुरेशचन्दजी, संजयकुमारजी चोरडिया-चेन्नई, चि. कुणाल का शुभविवाह सौ. कां. ममता सुपुत्री श्री सुभाषचन्दजी एवं सुपौत्री श्री चैनराजजी पगारिया (कोठारी) तिन्नानुर, चेन्नई के संग 03 जुलाई 2017 को सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

2100/- श्री प्रेमबाबूजी जैन (एण्डवा वाले), बजरिया-सवाईमाधोपुर, चि. सौरभजी संग सौ.कां. प्रज्ञाजी जैन (सुपुत्री श्री गौतमचन्दजी जैन, आदर्शनगर-सवाईमाधोपुर) का शुभविवाह 04 जून 2017 को सुसम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम।

2100/- श्रीमती निर्मलादेवीजी-गौतमचन्दजी ओस्तवाल (भोपालगढ़ वाले), बैंगलोर, सुपुत्री सौ.कां. नेहाजी संग चि. मनीषजी सुपुत्र श्रीमती सुशीलाबाईजी-महिपाल कुमारजी बाफणा (चण्डावल वाले) का शुभविवाह 30 जून 2017 को सुसम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम।

2100/- श्री कमलेशजी सर्राफ, जोधपुर, पूज्य माताश्री श्रीमती मीमकंवरजी धर्मपत्नी स्व. श्री सोमचन्दजी सर्राफ के संथारापूर्वक स्वर्गगमन पर उनकी पुण्य स्मृति में।

2100/- श्री डुंगरमलजी बालचन्दजी भुरट, जलगांव (महा.), सहयोगार्थ।

2000/- श्री प्रकाशमलजी, सुनील कुमारजी, हर्षजी बोथरा (भोपालगढ़ वाले), चेन्नई, भोपालगढ़ चातुर्मास प्राप्त होने के उपलक्ष्य में।

2000/- श्रीमती सुशीलादेवीजी जैन, नीमच सिटी, श्री शान्तिलालजी छाजेड़ नीमच वालों के 27 फरवरी, 2017 को स्वर्गगमन पर उनकी पुण्य स्मृति में।

1101/- श्री बद्रीलालजी, विनोद कुमारजी, जय कुमारजी, विमलकुमारजी जैन (सिंगोर वाले),सवाईमाधोपुर, स्व. श्रीमती मूलीदेवीजी जैन का 14 जून 2017 को देवलोकगमन हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

1101/- श्री पदमचन्दजी जैन, उनियारा-टोंक, मातृ श्री की पुण्य स्मृति में।

1101/- श्री [illegible]प्रह्लादजी, सुरेशचन्दजी (बाबई वाले), कोटा, चि. मनीषजी के शुभविवाह के उपलक्ष्य में सप्रेम।

1101/- श्री रमेशचन्दजी, सुरेशचन्दजी जैन, सवाईमाधोपुर, चि. रोहितजी जैन के शुभविवाह के उपलक्ष्य में सप्रेम।

1101/- श्री सौभाग्यमलजी, मिलापचन्दजी, नवरत्नजी, सतीशचन्दजी, सुधीरजी, महेन्द्रजी जैन, चौथ का बरवाड़ा, स्व. श्री फूलचन्दजी जैन (आसलगाँव) की पुण्य स्मृति में भेंट।

1101/- डॉ. धर्मचन्द जी, मुदितजी जैन, जोधपुर, श्रीमती मधुजी जैन धर्मपत्नी डॉ. धर्मचन्दजी जैन के 23 जुलाई को अठाई तप सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री चौथमलजी, कमलेश कुमारजी जैन (कुण्डेरा वाले), सवाईमाधोपुर, चि. राहुलजी संग सौ.कां. दीपाजी का शुभविवाह 22 मई 2017 को सुसम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम।

1100/- श्री सूरजमलजी, रमेशचन्दजी जैन (बगावदा वाले), सवाईमाधोपुर, चि. सिद्धार्थजी संग सौ.का. अदितिजी का शुभ विवाह 06 मई 2017 को सुसम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम।

1100/- श्री प्रकाशचन्दजी नरेशकुमारजी हुण्डीवाल, जलगाँव (महा.), सहयोगार्थ।

1100/- श्री गौतमचन्दजी, नवीन कुमारजी जैन (जरखोदा वाले), कोटा, चि. रविकान्तजी (नितिन) संग सौ.कां. निमिषा (चिंकी) का शुभ विवाह 28 जून 2017 को सुसम्पन्न होने के उपलक्ष्य में सप्रेम।

1100/- श्रीमती पूनमकँवरजी धर्मसहायिका श्री सोहनलाल जी मोहनोत, जोधपुर, पूज्य पिताजी सुश्रावक श्री कस्तूरचन्दजी सिंघवी की 5वीं पुण्यतिथि 19 अगस्त 2017 के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- श्री सत्यनारायणजी, सुरेशचन्दजी, मुकेश कुमारजी जैन (करेला वाले), सवाईमाधोपुर, पूज्य पिताश्री भैरूलालजी जैन की पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्री हनुमानजी, गणपतजी, अशोकजी, पप्पूजी, मुकेशजी, अजयजी जैन, चौरू, पूज्य पिताश्री शांतिलालजी जैन की पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्री आनन्दीलालजी, डॉ. एन.बी. जैन, त्रिलोकजी जैन, आलनपुर-सवाईमाधोपुर, माताजी स्व. श्रीमती जड़ावदेवीजी जैन की पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्री राजेन्द्रजी, मधुजी, मोहितजी, मेघनाजी एवं मायाजी सिंघवी, मुम्बई, पूज्य पिताश्री सुश्रावक श्री किस्तूरचन्दजी सिंघवी की 19 अगस्त 2017 को 5वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री पदमराजजी, श्रीमती चन्द्रप्रभाजी, अमितजी, अशीषजी मेहता, बैंगलोर, बैंगलोर में श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ का साधना आराधना के लिए स्थानक होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री पदमचन्दजी, ताराचन्दजी जैन, देई, सुश्राविका श्रीमती कल्याणीदेवीजी धर्मसहायिका स्व. श्री निहालचन्दजी जैन की पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्री घनश्यामजी, राकेशजी, मुकेशजी जैन, मानसरोवर-जयपुर, श्री अंकित कुमारजी जैन के सी.ए. बनने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्रीमती चन्द्राजी-प्रभुचन्दजी अबानी, जोधपुर, अपनी दौहित्री स्व. सुश्री मुस्कान सुपुत्री श्रीमती तृप्तिजी-विशालजी भण्डारी के प्रथम पुण्य स्मृति दिवस पर।

1100/- श्री महेशजी-सुनीताजी मेहता, चेन्नई, अपने सुपुत्र श्री विपुल मेहता के सी.ए. की परीक्षा उच्च अंकों से उत्तीर्ण करने के उपलक्ष्य में।

1100/- डॉ. लाभमलजी भण्डारी, जयपुर, अपने 77 वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री अशोकजी खिंवसरा, जोधपुर, श्री चिराग खिंवसरा सुपुत्र श्रीमती शोभाजी-अशोकजी एवं सुपौत्र स्व. श्री जौहरीमलजी खिंवसरा के सी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण करने पर।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल हेतु साभार प्राप्त

2100/- श्री इन्द्रमलजी, सुरेन्द्रजी, नरेन्द्रजी, धनराजजी, राजेन्द्रजी, कमलेशजी जैन, मानसरोवर-जयपुर, पूज्य सुश्रावक श्री उम्मेदमलजी जैन (चौथ का

बरवाड़ा वाले) का 02 जुलाई 2017 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

स्वाध्याय संघ, जोधपुर को साभार प्राप्त

11000/- श्री गौतमचन्दजी, प्रवीणकुमारजी, मनोज कुमारजी, शैलेशजी, सिद्धार्थजी संकलेचा, कुंभकोणम, तमिलनाडु, श्री प्रवीणकुमार सुपुत्र स्व. श्रीमती सुशीलाजी-गौतमचन्दजी संकलेचा के 9 की तपस्या के उपलक्ष्य में।

2100/- श्री राजेन्द्रजी, सुरेन्द्रजी जैन, जोधपुर, अपनी पूज्य माताजी श्रीमती मैनादेवीजी खिंवसरा के 9 वर्षीतप के उपलक्ष्य में।

2100/- श्री प्रेमबाबू जी जैन, एण्डवा वाले, बजरिया, सवाईमाधोपुर। चिरंजीव सौरभ जैन का शुभ विवाह 12 जुलाई 2017 को सौ. कां प्रज्ञा जैन के साथ सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

2000/- श्रीमती उमरावबाईजी भण्डारी, रायचूर, (कर्नाटक), सहयोगार्थ।

संस्कार केन्द्र, जोधपुर को साभार प्राप्त

100000/- श्री गौतमचन्दजी, श्री प्रवीणजी, श्री मनोज कुमारजी, रक्षिताजी, श्री शैलेशजी, श्री सिद्धार्थजी सकलेचा परिवार की ओर से, कुम्भकोणम (तमिलनाडु), श्री प्रवीणजी सुपुत्र स्व.श्रीमती सुशीला-गौतमचन्दजी सकलेचा के 9 के उपवास की तपस्या के उपलक्ष्य में।

100000/- श्री डी.अरूणकुमारजी जैन, चेन्नई,सहयोगार्थ।

5000/- श्री सुमति विजयराजजी, अशोकराजजी, पदमराजजी, गौतमराजजी सुपुत्र स्व. श्री अजीतराजजी सिंघवी, कडलूर (तमिलनाडु), सहयोगार्थ।

गजेन्द्र निधि द्वारा आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

300000/- श्री हरीशजी कवाड़, पुन्नमल्लै, चेन्नई।

50000/- श्री महावीर जी बोहरा, पुनमल्लै, चेन्नई।

36000/- श्री भंवरलालजी, सुगनचन्दजी, संदीपजी बोथरा (हीरादेसर वाले) किलपांक, चेन्नई, सौ.कां. नेहाजी संग चि. अक्षय जी बाघमार का शुभविवाह 30 जून, 2017 को सुसम्पन्न होने की खुशी में।

12000/- श्री निर्मलकुमारजी जामड़, जयपुर।

12000/- श्री मिलापचन्दजी डागा, बूंदी (राज.)।

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट(Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- ***Sh. M. Harish Kawad**, No. 5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600056(T.N.) (Mob. 9543068382)*

आगामी पर्व तिथि

भाद्रपद कृष्णा 8,	मंगलवार	15.08.2017	अष्टमी
भाद्रपद कृष्णा 12,	शनिवार	19.08.2017	पर्युषण प्रारम्भ
भाद्रपद कृष्णा 14,	रविवार	20.08.2017	चतुर्दशी
भाद्रपद कृष्णा 30,	सोमवार	21.08.2017	पक्खी
भाद्रपद शुक्ला 5,	शनिवार	26.08.2017	संवत्सरी महापर्व
भाद्रपद शुक्ला 8,	मंगलवार	29.08.2017	अष्टमी
भाद्रपद शुक्ला 14,	मंगलवार	05.09.2017	चतुर्दशी,पक्खी
आश्विन कृष्णा 8,	बुधवार	13.09.2017	अष्टमी
आश्विन कृष्णा 14,	मंगलवार	19.09.2017	चतुर्दशी
आश्विन कृष्णा 30,	बुधवार	20.09.2017	पक्खी

बाल-जिनवाणी

लो कर लो जी बात

सुश्री रानू जैन

आ गया मोबाइल लो कर लो जी बात।
बातों ही बातों में पूरी बिताते हैं रात।
सबको ही बड़ा परेशान किया है।
मोबाइल ने बड़ा नुकसान किया है।।

बच्चों को तो पूरा आज़ाद कर दिया।
संस्कारों को भी पूरा बरबाद कर दिया।
अच्छों-अच्छों को बेजान किया है।।
मोबाइल ने बड़ा.....।।

परिवार से तो मानो खार हो गया।
मोबाइल से मानो पूरा प्यार हो गया।
बहुत कम जिसने कि जान लिया है।
मोबाइल ने बड़ा.....।।

अग्नि की हिंसा को जानते हैं जो।
गुरुओं की बातों को मानते हैं जो।
जिनवाणी ने ही हमें ज्ञान दिया है।
मोबाइल ने बड़ा.....।।

-मेन मार्केट, प्याऊ के सामने, चौथ का बरवाड़ा,
जिला-सवाईमाधोपुर (राज.)

स्वाध्याय और गणित

श्री प्रमोद महनोत

स्वाध्याय का गणितीय सूत्र (Mathematical Computation) निराला है और उसका आधार है- जिज्ञासा, निरन्तरता और सजगता।

गणित में सर्वप्रथम बिन्दु से विचार आगे बढ़ाते हैं। बिना बिन्दु के कोई भी आकार नहीं बनता, बिन्दु से प्रारम्भ कर कई आकृतियाँ बनाई जा सकती हैं, अथाह सम्भावनाएँ हैं, अतः बिन्दु गागर में सागर है।

नवकार मंत्र जो जैन धर्म का प्रमुख आधार है, एक श्रावक स्वाध्यायी के लिए गागर में सागर है, अनन्त ज्ञान का भण्डार है और अध्यात्म के अन्तिम चरण तक जाने का एक सम्बल है।

स्वाध्याय में विचारों को मिलाते जाइये, इन्हीं विचार बिन्दुओं से निर्मित स्वाध्याय की एक रेखा (Straight Line) निर्मित होगी, जिसका एक छोर सद्विचार है, मध्य में प्रयोग-परीक्षण-चिन्तन और दूसरा छोर है उपलब्धि।

एक बिन्दु को प्रेरक बनाकर दूसरे बिन्दु से शुरु कर वृत्त (Circle) बनता है। स्वाध्यायी मध्य बिन्दु को आधार मान वृत्त में विद्यमान स्वाध्याय की अनन्तता को जान लेता है।

सम्यक्त्व का पाठ एक त्रिकोण (Tringle) के जरिये समझा जा सकता है, जिसमें एक कोण दर्शन (श्रद्धा) का, दूसरा कोण ज्ञान का, तीसरा चारित्र का होता है।

तीनों कोण (Angle) बराबर है या 180^0 है तो आप सम्यक् के शीर्ष धरातल पर आसीन हो सकते हैं।

मानव की पाँचों इन्द्रियाँ विशिष्ट हैं और जैन धर्मावलम्बी इन पर काबू पाने के लिये प्रयासरत रहता है, सफल होने पर वह जिनशासन का एक सितारा बन जाता है, जिसकी चमक छुपी नहीं रहती।

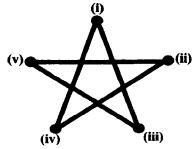

(i) श्रोत्रेन्द्रिय
(ii) चक्षुरिन्द्रिय

(iii) घ्राणेन्द्रिय
(iv) रसनेन्द्रिय
(v) स्पर्शनेन्द्रिय

षट्कोण (Hexagon) की 6 भुजाएँ हमें कर्त्तव्यों का बोध कराती हैं। हर भुजा एक काय को दर्शाती है, उनकी हमें रक्षा करनी है, और अहिंसा धर्म का पालन करना है। छह काया की रक्षा से ही हम प्रदूषण रहित (Pollution free) व अहिंसक वातावरण बना सकते हैं।

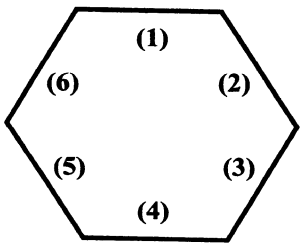

1. पृथ्वीकाय
2. अप्काय
3. तेजस्काय
4. वायुकाय
5. वनस्पतिकाय
6. त्रसकाय

अष्टकोण (Octagon) दर्शाता है कि 8 कर्मों ने हमें Octopus की तरह जकड़ रखा है। स्वाध्याय द्वारा इनसे छुटकारा पाया जा सकता है। आठों कर्म की निर्जरा से ही मोक्ष मार्ग प्रशस्त होता है-(i) ज्ञानावरणीय, (ii) दर्शनावणीय, (iii) वेदनीय, (iv) मोहनीय, (v) आयु, (vi) नाम, (vii) गोत्र, (viii) अन्तराय।

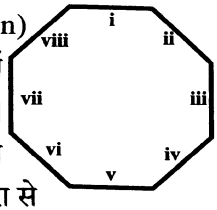

1. गणित में (-) ऋण (Minus) का निशान अज्ञान, भ्रान्ति और मिथ्या को निरन्तर दूर करने का द्योतक है। जैन धर्मावलम्बी को प्रमाद रहित जीवन जीने की शिक्षा दी जाती है।

2. इसी तरह (+) धनात्मकता (Addition) का निशान हमारी सकारात्मकता को इंगित करता है, क्योंकि स्वाध्याय के चारों ओर Positiveness ही है। सकारात्मक बने रहना एक खास गुण है, जो धर्म व स्वाध्याय के द्वारा ही विकसित किया जा सकता है।

3. गुणन (x) ये Multiplication mark स्वाध्याय द्वारा उत्तरोत्तर प्रकट होने वाले बोध की वृद्धि को बतलाता है। इसके अनुसार स्वाध्याय द्वारा प्राप्त ज्ञान भूमितीय गुणन Square multiplication की तरह बढ़ता है, अर्थात् 2x2=4, 4x4=16, 16x16=256
वृद्धिंगतता स्वाध्याय का स्वभाव है। मनुष्य स्वाध्याय में गहरा जाता है तो उसके ज्ञान की चौतरफा अभिवृद्धि होगी।

4. स्वाध्याय में भाग (÷) Division जीवन लक्ष्य का लगेगा तो भाग-फल (result) में तत्त्वार्थ दर्शित होगा। जो हर मानव का लक्ष्य है।

5. स्वाध्याय के Square Root (√—) से जो समीकरण (Equation) बनेगी उससे हमारा शुद्ध आचरण प्रकट होगा। धर्म के प्रति गम्भीरता का विकास होगा। हम मर्म को समझ पायेंगे।

6. गणित तथा रेखा गणित के बाद हम बीजगणित (Alzebra) से आगे को कदम रखें। स्वाध्याय की धरती बीजांकों से बनी हुई है। ज्ञान के असंख्य बीज बिखरे हैं, जिनके अंकुराने यानी खुलने-खिलने में आत्म साक्षात्कार की असंख्य संभावनाएँ गर्भित हैं।

-हंस मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर (राज.)

चौथा बोल- इन्द्रिय पाँच

इन्द्रिय पाँच:-1. श्रोत्रेन्द्रिय, 2. चक्षुरिन्द्रिय, 3. घ्राणेन्द्रिय, 4. रसनेन्द्रिय, 5. स्पर्शनेन्द्रिय।

इन्द्रिय- शरीर के जिन अवयवों से शब्द, रूप, गंध, रस, स्पर्श आदि का ज्ञान होता हो उसे 'इन्द्रिय' कहते हैं। जीव 'इन्द्र' कहलाता है अतः इन्द्र के चिह्न को 'इन्द्रिय' कहते हैं। इन्द्रियाँ पाँच हैं-

1.श्रोत्रेन्द्रिय- जीव जिसके द्वारा जीव, अजीव और मिश्र शब्दों को ग्रहण करके अथवा सुनकर के ज्ञान प्राप्त करता है, उसे 'श्रोत्रेन्द्रिय' कहते हैं।

2.चक्षुरिन्द्रिय- जीव जिसके द्वारा रूप अर्थात्- काला, नीला, पीला और सफेद वर्ण को ग्रहण कर ज्ञान प्राप्त करता है, उसे 'चक्षुरिन्द्रिय' कहते हैं।

3.घ्राणेन्द्रिय- जीव जिसके द्वारा सुगन्ध व दुर्गन्ध को

ग्रहण कर ज्ञान प्राप्त करता है उसे 'घ्राणेन्द्रिय' कहते हैं।

4.रसनेन्द्रिय– जीव जिसके द्वारा तीखा, कड़वा, कषैला, खट्टा और मीठा, इन पाँच प्रकार के रस को ग्रहण करता है उसे 'रसनेन्द्रिय' कहते हैं।

5.स्पर्शनेन्द्रिय– जीव जिसके द्वारा पदार्थ (पुद्गल) में रहे हुए खुरदरा, कोमल, हल्का, भारी, ठण्डा, गर्म और लूखा, चिकना इन आठ प्रकार के स्पर्श को ग्रहण करता है उसे 'स्पर्शनेन्द्रिय' कहते हैं।

एकेन्द्रिय में एक-स्पर्शनेन्द्रिय, बेइन्द्रिय में दो- स्पर्शन और रसना, तेइन्द्रिय में तीन- घ्राणेन्द्रिय बढ़ी, चउरिन्द्रिय में चार-चक्षुइन्द्रिय को मिलाकर व पंचेन्द्रिय में समस्त पाँचों इन्द्रियाँ होती हैं। संसारस्थ जीवों में ऐसा कोई भी प्राणी नहीं है जो सर्वथा इन्द्रियों से रहित हो। एकेन्द्रिय जीवों का आहार श्वास ग्रहण आदि क्रियाएँ स्पर्शनेन्द्रिय से ही होती हैं।

प्रश्नः– एक इन्द्रिय किनमें मिलती है?

उत्तरः– पृथ्वीकाय आदि पाँच स्थावरों में, (स्पर्शन)।

प्रश्नः– दो इन्द्रियाँ किनमें मिलती हैं?

उत्तरः– लट, सीप, केंचुआ आदि में (स्पर्शन, रसना)।

प्रश्नः– तीन इन्द्रियाँ किनमें मिलती हैं?

उत्तरः– कीड़ी, मकोड़ा, इल्ली में, (स्पर्शन, रसना एवं घ्राण)।

प्रश्नः– चार इन्द्रियाँ किनमें मिलती हैं?

उत्तरः– मक्खी, मच्छर, भ्रमर आदि में, (स्पर्शन, रसना, घ्राण एवं चक्षु)।

प्रश्नः– पाँच इन्द्रियाँ किनमें मिलती हैं?

उत्तरः– मनुष्य, गाय, भैंस, पक्षी, देव, नारक आदि में, (सभी पाँचों इन्द्रियाँ)।

रंगों भरा संसार

निधि दिनेश लोढ़ा

यह प्रकृति अति सुन्दर है और इसकी सुंदरता में चार चाँद लगाते हैं ये रंग। आसमान का नीलापन, मेघों का कालापन, सूर्य की लालिमा, खेतों की हरियाली, इन्द्रधनुष के विभिन्न रंग, बर्फ की सफेदी और भी कई प्रकृति के नजारे हमारा मन प्रफुल्लित करते हैं। इस आनन्द का राज है रंग। मानव जीवन रंगों के बिना उदास है। मुख्यतः सात रंग इस सृष्टि में हैं। हर रंग का हमारे मन पर प्रभाव पड़ता है।

रूस में एक प्रयोग हुआ। वहाँ एक स्कूल के बच्चे बहुत शरारती और पढ़ने में आलसी थे। उस स्कूल की दीवारें गुलाबी रंग से पुतवा दी गई। कुछ दिन बाद बच्चों की शरारतें कम हो गईं और वे पढ़ने में रुचि लेने लगे।

एक अन्य प्रयोग किया गया। एक कमरे में बैंगनी रंग की पुताई की गई। वहाँ मजदूर 60 किलो अधिकतम भार उठा पाये और बहुत थक गये। फिर अगले दिन उन्हें लाल रंग के पुताई वाले कमरे में भार उठाने को कहा गया। वहाँ उन्हीं मजदूरों ने 70 से 75 किलो वजन आसानी से उठा लिया। लाल रंग सक्रियता पैदा करता है।

सर्दी में काला कम्बल ओढ़ते हैं, क्योंकि काले रंग में प्रतिरोधात्मक शक्ति होती है। वह बाहर की वस्तु को आात्मसात् नहीं करता, बाहर ही रोक देता है। गर्मी में सफेद कपड़े पहनते हैं, सफेद रंग में पारदर्शिता की शक्ति होती है। हरा रंग ठण्डा होता है, हरे रंग में रोग मिटाने की शक्ति होती है, हरे पेड़ पौधों के पास रहने वाले व्यक्ति ठण्डे स्वभाव के होते हैं। शांति और पवित्रता के लिये श्वेत रंग प्रभावकारी होता है।

जिन लोगों को बहुत देर तक बैठकर कम्प्यूटर पर काम करना पड़ता है उन्हें Desktop का रंग हरा चुनना चाहिये। हरा रंग आँखों के लिये बहुत अच्छा होता है। व्यायाम करते समय नारंगी रंग बहुत ऊर्जा देता है।

वस्त्रों का रंग अधिक गहरा नहीं होना चाहिए। श्वेत, पीला, नीला, हरा आदि रंगों का हमारे चिन्तन पर बहुत प्रभाव पड़ता है।

जब मन में खराब चिन्तन आता है, अशुभ विचार आते है तो चिंतन के पुद्गल काले वर्ण के हो जाते हैं, कृष्ण लेश्या होती है। अच्छा चिन्तन है, शुभ विचार आते हैं तो वे श्वेत वर्ण के भी हो सकते हैं।

आजकल रंगों के जरिये शारीरिक और मानसिक बीमारियों को दूर करने के लिये कलर थेरेपी का भी बहुत प्रचलन है। रंग हमारे जीवन का अभिन्न अंग है। इनसे जीवन में रुचि, विविधता और ताजगी बनी रहती है। विवाह शादियों और धर्मोत्सवों में हरी, पीली, लाल, नीली साड़ियों से द्वार सजाते हैं तो सम्बन्धित व्यक्ति ही नहीं, वहाँ से गुजरने वाले दर्शक भी प्रसन्न हो उठते हैं, यह रंगों का अज्ञात मनोवैज्ञानिक प्रभाव है। अभी भी राजस्थान और उत्तरप्रदेश के कई भागों में दीवारों पर रंगीन चित्र बनाने की परम्परा है। उससे जाने-अनजाने में मानव के प्रकृति प्रभावित होने का बहुत बड़ा रहस्य छुपा है।

हमारे साधु-साध्वी श्वेत वस्त्र पहनते हैं। यह श्वेत रंग ज्ञान, मधुरता, गम्भीरता और पवित्रता का द्योतक है। जब हम प्रवचन में जायें तो अधिक गहरे, चटकीले लाल रंग, बहुत चमकीले वस्त्र न पहनें ताकि सामायिक साधना में अधिक मन लग सके और हम ज्ञान-ध्यान अच्छे से सीख सकें।

कितने-कितने कैसे-कैसे, रंगों का है लिये अम्बार।
प्रकृति ने सजा रखी है, विभिन्न रंगों की कैसी बहार।।

-कांदिवली (पूर्व), मुम्बई (महा.)

जैन धर्म-परम्परा में चातुर्मास

श्री जसराज देवड़ा धोका

जैन धर्म परम्परा के 24 वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी के पूर्व समय से ही धर्म आराधना कराने हेतु वर्षा ऋतु में एक स्थान पर चार महीने ठहर कर (आषाढ़ सुदी 14 से कार्तिक सुदी पूनम तक) धर्म आराधना करने की परम्परा चल रही है। साधु-साध्वियाँ इस दौरान आत्म-अनुष्ठान हेतु सभी को शामिल कर आत्म उत्थान का कार्य करते हैं। पूर्ण अहिंसक धर्म होने से इन चार महीनों में साधु-साध्वी पैदल विहार न कर जीव-जन्तु की विराधना से बचते हैं। चातुर्मास के समय सभी साधु-साध्वियों को एक स्थान पर ठहर कर अध्ययन एवं लम्बी साधना करने का अच्छा अवसर मिल जाता है इसके साथ-साथ वे श्रावक-श्राविकाओं को धर्म-धारण की प्रेरणा देते हैं। प्रतिदिन सारगर्भित प्रवचनों के माध्यम से सभी जनों के जीवन में अच्छाइयों हेतु परिवर्तन लाने का मार्ग प्रशस्त करते हैं। उपवास-नियम, व्रत, रात्रिभोजन-त्याग, सामायिक, प्रतिक्रमण, पौषध आदि धार्मिक क्रियाओं हेतु चातुर्मास का समय अनुकूल होता है। साधु संत स्वयं त्याग की मूर्ति होते हैं, अतः उनके सान्निध्य में धर्म-ज्ञान और जप-तप आदि का महत्त्व समझ में आता है। चातुर्मास के समय आम श्रद्धालु जन को साधु-साध्वी के दर्शन वंदन का लाभ सहज मिल जाता है। आराधना भवनों में सभी तप करने वालों के लिए पारणा, भोजन आदि की सामूहिक व्यवस्था होने से श्रावक-श्राविकाओं को सभी तरह की तपस्या करने का सुअवसर प्राप्त हो जाता है। वे अपने कर्मों की निर्जरा करने को तत्पर हो सकते हैं। जैन साधु-साध्वी नंगे पैर पैदल देशाटन (विहार) करते हैं। पास में कोई वस्तु या पैसा नहीं रखते हैं, स्वयं भोजन नहीं बनाते हैं। भिक्षा रूपी साधु-साध्वी द्वारा गोचरी कर लाया आहार ग्रहण करते हैं। लकड़ी के बर्तन (पात्रा) ही वापरते हैं। कभी-कभी लगातार बारिश होने से गोचरी हेतु नहीं जाने की स्थिति में उन्हें उपवास में ही रहना होता है। यह नियम सभी पंच महाव्रतधारी साधु-साध्वी पालते हैं। दिगम्बर परम्परा में जैन गृहस्थ साधु-साध्वियों के आहार के लिए चौका लगाते हैं और वे अभिग्रह करके हाथ में ही भोजन ग्रहण करते हैं। चातुर्मास में आराधना हेतु पर्युषण-पर्व का अत्यधिक महत्त्व है। इन्हीं दिनों कल्पसूत्र और अन्तगड सूत्र की वाचना एवं श्रवण कर पाप कर्मों की निर्जरा की जाती है। चौरासी लाख जीव योनि से क्षमा मांगी जाती है।

-3-4-374/1/2, 'जैन श्रद्धा सुमन', लिंगम्पाली रोड़, कांचिगुड़ा, हैदराबाद-500027 (आन्ध्रप्रदेश)

जैसी करनी वैसी भरनी

श्री मगनचन्द जैन

मत भूल मनुज अपनी करनी।
जैसी करनी वैसी भरनी।।
प्रातः उठ नित करो प्रार्थना,
परम पिता की करो अर्चना,

गुरुवर के चरणों में वन्दना,
फिर पूछो साता उनकी। मत भूल....।।
सामायिक-स्वाध्याय नियम हो,
तप करने का प्रबल भाव हो,
अन्तर में करुणा का नाद हो,
सब करो जीव-रक्षा प्राणी। मत भूल....।।
श्रावक के अणुव्रत धारो सब,
श्रेष्ठ अवसर आया है अब,
अब नहीं तो करोगे कब,
संतों से सुन लो जिनवाणी। मत भूल....।।
मेरा-तेरा करना छोड़ो,
वैर-भाव की ग्रन्थि तोड़ो,
प्रेम-प्रीति का नाता जोड़ो,
कलुषित भाव तजो मानी। मत भूल....।।
'संघ' के साथ रहो घुलमिल कर,
हर कार्य करो सब मिलजुल कर,
सहयोग सदा दो हिलमिल कर,
करो न अपनी मनमानी। मत भूल....।।
जैसा जिसका चिन्तन होगा,
फल वैसा ही वह पायेगा,
किया कर्म निष्फल नहीं जायेगा,
'मगन' कहे अब चेत-चेत रे अज्ञानी। मत भूल...।।

-सेवानिवृत्त अध्यापक,
फाजिलाबाद (हिण्डौन), करौली (राज.)

सबसे प्यारे प्राण

श्री दुलीचन्द जैन 'साहित्यरत्न'

एक राजा ने एक ज्योतिषी को बुलाया और अपनी प्राणप्रिय पत्नी की आयु के बारे में पूछा। ज्योतिषी खरा था। उसने रानी की कुण्डली देख कर कहा कि अगर आप नाराज न हों तो मैं सही बात कह सकता हूँ। राजा ने कहा ठीक है। फिर उसने राजा को बताया कि आपकी रानी की उम्र अब मात्र सात दिन ही शेष रही है।

राजा अपनी पत्नी को बहुत चाहता था। यह बात सुनते ही वह आग-बबूला हो गया। उसने मंत्री को आज्ञा दी कि इस ज्योतिषी का सिर धड़ से अलग कर दो। लेकिन मंत्री चतुर था। उसने राजा से कहा कि आप इतने उतावले न हों। हम इस ज्योतिषी को कैद में डाल कर देखें तो सही कि इसकी बात सही होती है या नहीं। राजा मान गया।

सातवें दिन रानी को अचानक दिल का दौरा आया और उसका प्राणान्त हो गया। राजा बहुत दुःखी हुआ। फिर अचानक उसके मन में विचार आया कि मैं ज्योतिषी को यह तो पूछूँ कि मेरी उम्र कितनी लम्बी है। ज्योतिषी भी अब चतुर हो गया था। उसने बड़ी तत्परता से उत्तर दिया- 'मेरी मृत्यु के तुरन्त बाद ही आपकी मृत्यु होने वाली है।' राजा यह सुनकर विचार मग्न हो गया। उसने मंत्री को हुक्म दिया-'इस ज्योतिषी को तुरन्त जेल से रिहा कर दो।'

आदमी को खुद अपनी जान कितनी प्यारी है? अपनी जान बचाने के लिए राजा ने ज्योतिषी का मृत्यु-दण्ड माफ कर दिया। *-70, टी.टी.के. रोड, अल्लालरपेट, चेन्नई-18*

बाल-स्तम्भ [जून-2017] का परिणाम

जिनवाणी के जून-2017 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'बाल्यकाल : एक स्वर्णिम अवसर' के प्रश्नों के उत्तर 20 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए। पूर्णांक 30 हैं।

पुरस्कार एवं राशि नाम		अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	अरिन चोरडिया-जयपुर (राज.)	29.5
द्वितीय पुरस्कार-300/-	हर्षल छोरिया-नाशिक (महा.)	28.5
तृतीय पुरस्कार- 200/-	पूर्वांशी छाजेड़-जोधपुर (महा.)	27.5
सान्त्वना पुरस्कार- 150/-	अभिषेक पालरेचा-जोधपुर (राज.)	27
	सम्यक् कुमार कीमती-रामपुरा-नीमच (म.प्र.)	26
	नमिता जैन-मसूदा-अजमेर (राज.)	26
	मानसी जैन-वैर-भरतपुर (राज.)	26
	गुंजन प्रशांत कोठारी-देवपुर-धुलिया (महा.)	26

खेल-खेल में सीखें हम, अपना जीवन संवारें हम।।

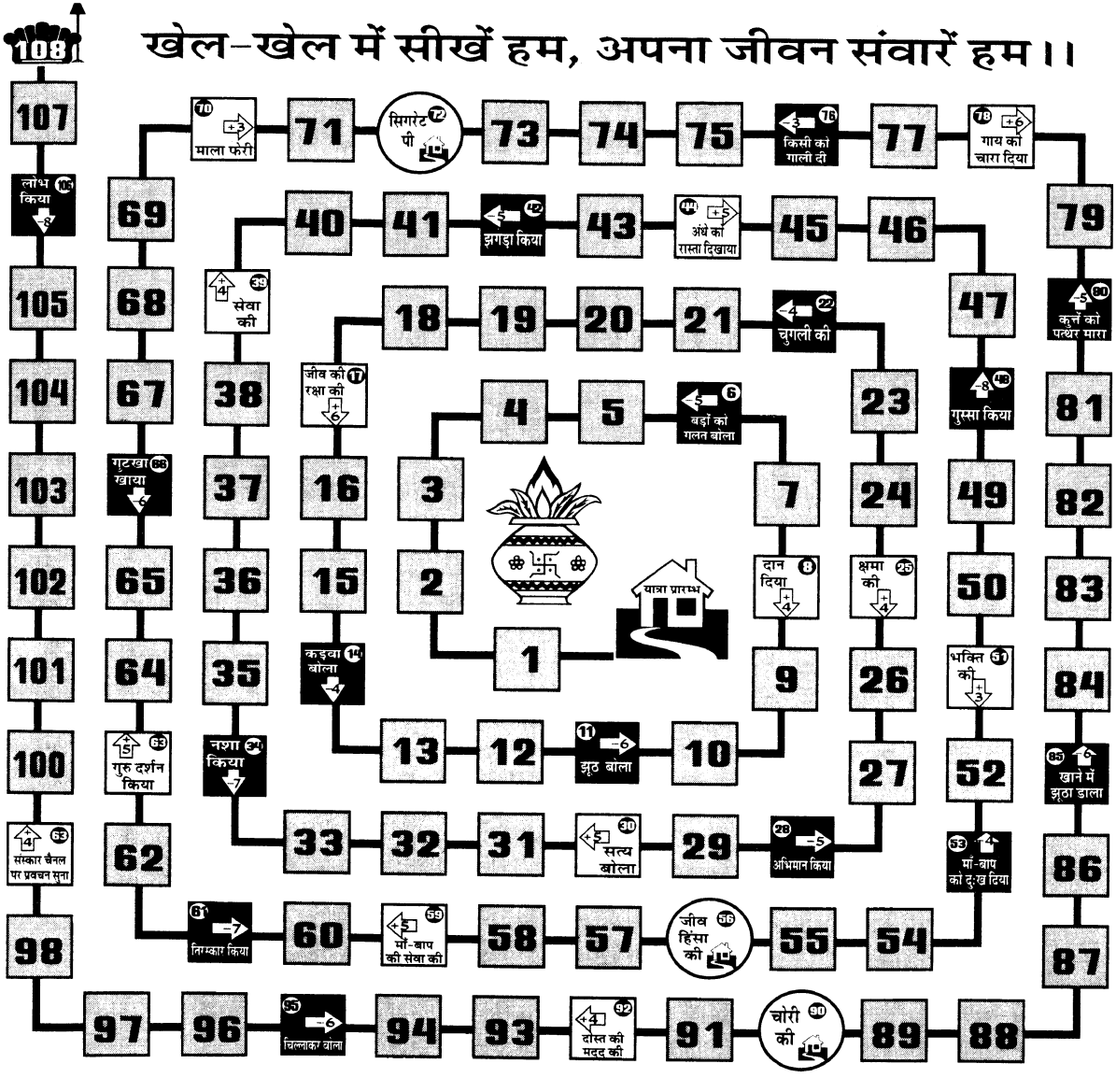

आओ संस्कारी बनें

नियम :

1. यह खेल सामान्यतया साँप-सीढ़ी की तरह खेला जायेगा।
2. पासे पर जो नम्बर आये उस अनुसार आगे बढ़ते रहना है।
3. अगर आप **काले वर्ग** (Box) पर पहुंचते है, तो उस पर लिखे हुए को ध्यान से पढ़ें तथा जितने नम्बर पीछे जाना है उतने नम्बर पीछे चले जाएं।
4. अगर आप **सफेद वर्ग** (Box) पर पहुंचते है, तो उस पर लिखे हुए को ध्यान से पढ़ें तथा जितने नम्बर आगे जाना है उतने नम्बर आगे चले जाएं।
5. अगर आप डिब्बा **क्र. 56, 72, 90** पर पहुंचते हैं तो पुनः यात्रा प्रारम्भ करें।

बाल-स्तम्भ

पिंजरे का बन्धन

श्री पदम शास्त्री

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित इस रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 सितम्बर, 2017 तक जिनवाणी संपादकीय कार्यालय, सामायिक-स्वाध्याय भवन, कुम्हार छात्रावास के सामने, प्लॉट नं. 2, नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.) के पते पर प्रेषित करें। उत्तर के साथ अपनी आयु तथा पूर्ण पते का भी उल्लेख करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल,जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

एक सुन्दर भवन के बाहर एक पिंजरा लटक रहा था। उसमें एक सुन्दर पक्षी निवास करता था। पिंजरे को देख कर शीघ्र ही यह अनुमान हो जाता था कि यह भवन किसी धनी व्यक्ति का है। धनी व्यक्ति पक्षी से विशेष प्रेम करता था। चाँदी का बना हुआ यह पिंजरा था, पिंजरे में चार चाँदी के पात्र थे, जिनमें खाद्य वस्तुएँ रखी रहती थीं। धनी व्यक्ति का नौकर प्रतिदिन इस पिंजरे को साफ करता था। आँधी आने पर पिंजरे को सुरक्षित स्थान पर रख दिया जाता था। एक बार शीत ऋतु में शीत की अधिकता से पिंजरे को छत पर रख दिया गया। छत पर रहने वाले इस पक्षी ने किसी अन्य पक्षी को देखा जो भूखा था और अनाज के दानों के लिए इधर-उधर घूम रहा था। यह देखकर पिंजरे में रहने वाले पक्षी ने मन में विचार किया-''इसके जीवन को धिक्कार है, इस जीवन से तो मरना ही अच्छा है। आँधी आने पर इसकी क्या दशा होगी? निरन्तर प्राकृतिक विपत्तियों का सामना करता हुआ यह शिकारियों से डरता है। बाज आदि पक्षी उड़ते हुए इसको झपट लेंगे, यह सोच कर मेरा हृदय काँप उठता है। कभी भी इसकी मृत्यु हो सकती है भोजन की खोज में निकला यह पक्षी अपने घोंसले में लौटेगा या नहीं, इसका भी निश्चय नहीं है।

'अरे मूर्ख पक्षी! क्यों न मेरी तरह विशाल भवन में रहता है? क्यों न तूने पूर्व जन्म में अच्छे कर्म किये। इस जन्म में भाग्यवान् लोग ही सुख-प्राप्ति करते हैं। मैं इस पिंजरे में सुखपूर्वक रहता हूँ। मेरे जीवन में लेशमात्र भी चिन्ता नहीं। दूसरे जन्म में भी भगवान् मुझे इसी भवन में रखें।

पक्षी मन में ऐसा कह ही रहा था कि वहाँ घूमता हुआ एक अन्य पक्षी आ गया। कुछ समय बाद पिंजरे में रहने वाले पक्षी को देखकर वह हँसने लगा। हँसते हुए पक्षी को देखकर पिंजरे में रहने वाले पक्षी ने कहा-''आप क्यों हँस रहे हैं?'' आये हुए पक्षी ने कहा-''आपकी दुर्दशा को देख कर। पिंजरे में रहकर आप जो स्वर्ग का अनुभव कर रहे हैं, वह बन्धन है। पिंजरे से बाहर आकर मुक्त विचरण करते हुए जो अवर्णनीय सुख होता है वह सुख पिंजरे में कहाँ है? संवेदनारहित होकर रातदिन पिंजरे में रहकर स्वयं को धन्य मान रहे हो, पंख वाले होकर भी तुम उड़ नहीं सकते, अब आप ही बताओ कि आप मूर्ख हो या मैं?''

इस प्रकार उनका विवाद बढ़ता ही गया। दोनों ही तर्क के बल पर एक-दूसरे को हराना चाहते थे। विवाद को बढ़ा हुआ देखकर न्यायाधीश की

नियुक्ति की गई न्यायाधीश मनुष्य ही था। न्यायाधीश ने निर्णय दिया कि मुक्त विचरण करने वाला पक्षी बुद्धिमान है।

पिंजरे में रहने वाला पक्षी चुप न रह सका। उसने कहा- "अरे न्यायाधीश! निर्णय से पहले अपने जीवन पर भी दृष्टिपात करो? आप भी तो पिंजरे में बंद हो। तुम्हारा पिंजरा काम, क्रोध, मद, लोभ का बना है, निर्णय से पहले आपने कुछ भी नहीं विचारा। मैं तो मूर्ख पक्षी हूँ। आप तो विवेकशील मनुष्य हैं।"

-'अंहकार का त्याग' पुस्तक से साभार

प्रश्नः-

1. सुन्दर पक्षी का रख-रखाव कैसा था?
2. भूखे पक्षी को देखकर पिंजरे के पक्षी ने कैसा अनुभव किया?
3. कैसे लोग सुख की प्राप्ति करते हैं?
4. मूर्ख कौन था?
5. न्यायाधीश ने क्या निर्णय दिया?
6. पिंजरे में बंद पक्षी ने न्यायाधीश से क्या कहा? क्या आप उस पक्षी की बात से सहमत हैं? कारण बताइये?

A True Friend

Dr. Shweta Jain

Sudhanshu and Vidhusekhar were studying in class 8th in Delhi Public School. Sudhanshu was a boy of mean mentality and Vidhusekhar was very cooperative in nature. One day Vidhusekhar was going to school on bicycle. After one kilometre distance, the tyre got punctured. School was two kilometre away from there. He sat on the side of the road and waited for someone. After sometime Sudhanshu came on that way to go to school on his bicycle. Vidhusekhar became happy to see him. He told him to stay for help in reaching to school. Sudhanshu said that his new bicycle would be damaged. He refused to take him to school. Vidhusekhar felt very bad. At the last he locked the bicycle and put it under tree and took a city bus to reach the school.

After one month, examination arrived. Sudhanshu was going to school on his bicycle. There was a big pit on the road. His bicycle fell into the pit and broke. That day there was a strike of city buses and auto-rikshaws. He was disappointed and started thinking how he would go to school now. He started praying god. Only then Vidhsekhar arrived like an angel. Sudhanshu became happy to see him. He asked for help. Vidhsekhar smiled and asked to sit on the bicycle. They arrived at the school before the examination started.

After the examination, Sudhanshu went to meet Vidhusekhar and apologized for his previous unfriendly behavior. Vidhsekhar told him that a true friend is someone who helps at the time of need. If I would have treated you the same way I would have lost one of my friends.

-'Samta Kunj', 12/7A, Jalam Vilas Scheme, Poata 'B'Road, Jodhpur-342006 (Raj.)

जय गुरु हस्ती ||GURUDEV|| जय गुरु हीरा-मान

गुरु हस्ती के दो फरमान
सामायिक स्वाध्याय महान

गुरु हीरा का यह सन्देश
व्यसन मुक्त हो देश विदेश

UDAY GROUP

UDAY INDUSTRIES CHENNAI PVT. LTD.

IMPORT & EXPORT AND DEALERS OF IRON & STEEL
LONG & FLAT PRODUCTS

UDAY CONSULTS LLP

OVERSEAS AND DOMESTIC MANPOWER RECRUITMENT
AND
FACILITY MANAGEMENT

CONNECTING BRIGHT TALENT WITH THE RIGHT COMPANY

STEEL | LOGISTICS | MANPOWER

WITH BEST COMPLIMENTS from:
G R SURANA & RAJESH SURANA
No.10&11, Jawaharlal Nehru Road,
Koyambedu, Chennai - 600 107.
Mobile No: 9940566666, Contact No: 044-24797675
Website: www.udaygroup.net
Mail Id: industries@udaygroup.net

भण्डारी हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेन्टर

BTH Since 1986

(आपके स्वास्थ्य के साथ हमेशा)

Certificate No. H-2012-6138

राजस्थान व पड़ौसी राज्यों में लेजर, लैप्रोस्कोपी एवं लिथोट्रिप्सी
का सर्वश्रेष्ठ एवं विश्वसनीय सेन्टर

~ अस्पताल की विशेषताएं ~

दूरबीन पद्धति से पेट, अपेन्डिक्स, हर्निया, प्रोस्टेट, पाइल्स आदि की शल्य चिकित्सा की सुविधा।

शरीर में किसी भी स्थान पर होने वाली पथरी के ईलाज का सर्वश्रेष्ठ संस्थान।

स्त्री रोग, नॉर्मल, सिजेरियन व हाई रिस्क डिलेवरी का अग्रणीय संस्थान।

विशेषज्ञों की सेवायें

- मूत्र व पथरी रोग
- पेट, लीवर व आंत रोग
- जनरल व मोटापा निवारण सर्जरी
- स्त्री रोग
- जनरल फिजिशियन
- प्लास्टिक व कॉस्मेटिक सर्जरी
- बाल रोग एवं बाल शल्य चिकित्सा
- न्यूरो सर्जरी
- दन्त रोग
- नाक, कान व गला रोग
- चर्म रोग

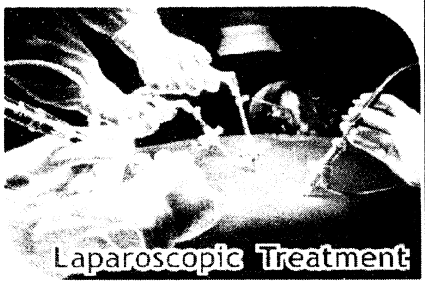

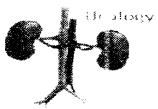

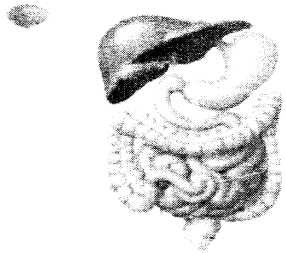

सुविधायें

- **30** वर्ष का अनुभव
- **4** लाख से अधिक रोगियों का सफल ईलाज
- **2** लाख से अधिक रोगियों का शल्य क्रिया द्वारा उपचार।
- **50,000** से अधिक पथरी रोगियों का उपचार।
- NABH & NABL से मान्यता प्राप्त।
- MLC (Medico Legal Case) की सुविधा
- 24x7 ICU, Emergency Facilty

CGHS, ECHS, ESIC, NPCIL Rawatbhata), BSNL, BHEL, GAIL, IOCL, CWC, FCI, NFL, MNIT, CIPET, CSWRI, HCL, AAI, Coal India, CISF (8th RES BN), Rajasthan University, केन्द्र व राजस्थान सरकार के सभी कर्मचारी व पेंशनर्स एवं सभी प्रमुख TPA व इंश्योरेंस कंपनीयों से ईलाज हेतु अधिकृत

138-ए, वसुन्धरा कॉलोनी, गोपालपुरा बाईपास, टोंक रोड़, जयपुर - 302018
फोन: 0141-2703851-52 (मो.) 9660006228, 9829770055

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

साधना के मार्ग में प्रगतिशील वही बन सकता है,
जिसमें संकल्प की दृढ़ता हो।

– आचार्य श्री हस्ती

C/o CHANANMUL UMEDRAJ
BAGHMAR MOTOR FINANCE
S. SAMPATRAJ FINANCIERS
S. RAJAN FINANCIERS

 # 218, Ashoka Road, Lashkar Mohalla,
Mysore-570001 (Karanataka)

With Best Compliments from :
C. Sohanlal Budhmal Sampathraj Rajan
Abhishek, Rohith, Saurabh, Akhilesh Baghmar
Tel. : 821-4265431, 2446407 (O)
Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)

Gurudev

SURANA™
yes, the best TMT OF BARS

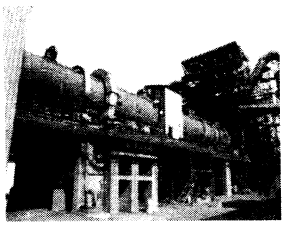
DRI Plant

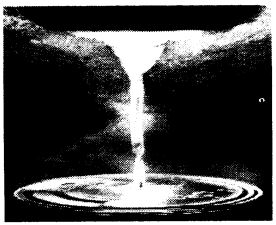
Electric Arc Furnace

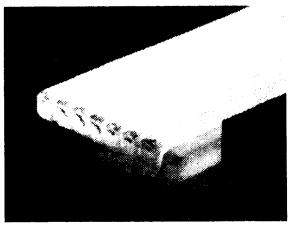
Billets

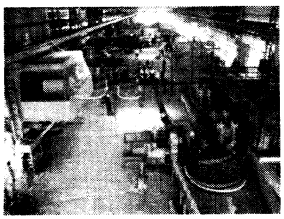
Rolling Mill

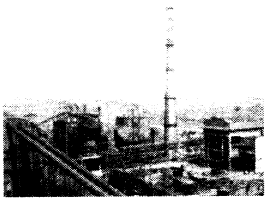
Captive Power Plant

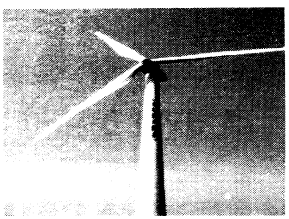
Windmill

With best wishes from

ISO 9001-2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED
INTEGRATED STEEL PLANT
MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL
29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143
Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

।। श्री महावीराय नमः ।।

हस्ती-हीरा जय जय ! हीरा-मान जय जय !

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजाने के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
एवं समस्त
रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल
के चरण कमलों में भावभरा कोटिशः वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHVIRAJ PREM KUMAR KAVAD
690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056
Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273

MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
GURU HASTI THANGA MAALIGAI
(JEWELLERS & BANKERS)
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्ज्वल भविष्य की ओर एक कदम.....

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

आदरणीय रत्नबंधुवर,

छात्रवृत्ति योजना की निरन्तर गतिशीलता के लिए सदस्यता अभियान से जुड़िये। सदस्यता अभियान का प्रारूप इस प्रकार है –

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्ज्वल भविष्य की ओर एक कदम.....

सदस्यता अभियान

हीरक स्तम्भ सदस्य	स्वर्ण स्तम्भ सदस्य
(5 लाख रुपये प्रति वर्ष)	(1 लाख रुपये प्रति वर्ष)

नोट-सदस्यता को ग्रहण करने वाले सभी सदस्यों का नाम जिनवाणी पत्रिका में प्रति माह प्रकाशित किया जायेगा।

Acharya Hasti Scholarship Fund

Ujjawal Bhavishya Ki Aur Ek Kadam.....

Your Contribution Towards This Noble Cause Will Go A Long Way In Lighting The Lamp Of Knowledge To Deserving and Intelligent Students, Hence We Kindly Request You To Contribute For This Noble Cause.

Note-The Fund Acknowledges Donation From Rs.3000/- Onwards. The Bank A/c Details is as follows -

A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund
A/c No. 168010100120722
Bank Name & Address - AXIS BANK LTD. Anna Salai,Chennai(TN) IFSC Code - UTIB0000168
PAN No. - AAATG1995J
Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

- **For Scholarship Fund Details Please Contact M.Harish Kavad,Chennai (+91 95001 14455)**

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान के सदस्य बनकर योजना की निरन्तरता को बनायें रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पुण्यार्जन किया, ऐसे संघनिष्ठ, श्रेष्ठीवर्यों के नामों की सूची –

हीरक स्तम्भ सदस्य (5 लाख रुपये प्रति वर्ष)	स्वर्ण स्तम्भ सदस्य (1 लाख रुपये प्रति वर्ष)
श्रीमान् मोफतराज जी मुणोत, मुम्बई। युवारत्न श्री हरीश जी कवाड़, चैन्नई। श्रीमान् राजीव जी नीता जी डागा, ह्यूस्टन श्रीमान् रिखबचंद सा सुखानी, रायचूर (कर्नाटक)	श्रीमान् दूलीचंद बाघमार एण्ड संस,चैन्नई। श्रीमान् दलीचंद जी सुरेश जी कवाड़, पूनामल्लई। श्रीमान् राजेश जी विमल जी पवन जी बोहरा, चैन्नई। श्रीमान् गणपत जी हेमन्त जी बाघमार, चैन्नई। श्रीमान् प्रेम जी कवाड़, चैन्नई। गुप्त सहयोगी, चैन्नई। श्रीमान् अम्बालाल जी बसंतीदेवी जी कर्नावट, चैन्नई। श्रीमान् सम्पतराज जी राजकंवर जी भंडारी, ट्रिपलीकेन–चैन्नई। गुप्त सहयोगी, चैन्नई।

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें–

M. Harish Kumar Kavad - 5, Car Street, Poonamallee, **CHENNAI-600056** (TN)

छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए सम्पर्क करें– मनीष जैन, चैन्नई **(Mob. +91 95430 68382)**

'छोटा सा चिन्तन परिग्रह को हल्का करने का, लाभ बड़ा गुरु भाइयों को शिक्षा में सहयोग करने का'

Jai Guru Heera *Jai Guru Hasti* *Jai Guru Maan*

।। जैनं जयति शासनम्।।

With Best Compliments from:

Dharamchand Paraschand Exports
Paras Chand Hirawat
CC 3011-3012, Bandra Kurla Complex, Bandra (E), Mumbai-400 098 (MH)
Tel. : +91 22 4018 5000
Email : dpe90@hotmail.com

KANTILAL SHANTILAL RAJENDRA LUNKER
PACHPADRA-PALI-ERODE
K.L. ASSOCIATES
'Sanskar', 177-B, Adarsh Nagar, Pali-306401 (Raj.)
Mobile : 094141-22757
135, N.M.S. Compound, ERODE-638001 (T.N.)
Tel. : 3205500 (O), Mobile : 093600-25001

BHANSALI GROUP
Dhanpatraj V. Bhansali
BHANSALI DEVELOPERS
Sharda Bhawan, 2nd Floor, Nandapatkar Road, Vile Parle (E), Mumbai-400057 (MH) Tel. : 26185801, 32940462 (O), E-mail : bhansalidevelopers@yahoo.com

S.D. GEMS & SURBHI DIAMONDS
Prakash Chand Daga
Virendra Kumar Daga (Sonu Daga)
FC51, Bharat-Diamond Bourse, Bandra Kurla Complex, Bandra (E), Mumbai-400098 (MH)
Ph. : 022-23684091, 23666799 (o), 022-28724429
Fax : 22-40042015, Mobile : 098200-30872
E-mail : sdgems@hotmail.com

Basant Jain & Associates, C.A.
BKJ & Associates, C.A.
BKJ Consulting Pvt. Ltd.,
Megha Properties Pvt. Ltd.
Ambition Properties Pvt.Ltd.
बसंत के जैन
अध्यक्ष: श्री जैन रत्न युवक परिषद, मुम्बई
ट्रस्टी : गजेन्द्र निधि ट्रस्ट
601, Dalamal Chambers, New Marine Lines, Mumbai - 400020 (MH)
Ph. : 022-22018793, 22018794 (o), 022-28810702

NARENDRA HIRAWAT & CO.
Launches
N.H. Studios ***N.H. Jewells***
A-1502, Floor-15th, Plot-FP616(PT), Naman Midtown, Senapati Bapat Marg, Near Indiabulls, Elphinstone (W), Mumbai-400013 (MH)
Web. www.nhstudioz.tv, Tel. : 022-24370713

!!Jai Guru Heera!! !!Jai Guru Hasti!! !!Jai Guru Man!!

LIFE SHOULD NOT ONLY BE LIVED, IT SHOULD BE CELEBRATED!

With best compliments from:

C. R. Kothari & Sons Group of Companies

Stock Broking - DP-CDSIL-NBFC-Solar Power

Mumbai - Baroda - Jaipur - Ajmer

Pradeep Kothari
Sanjay Kothari

Hemant Kothari
Alok Kothari

KALPA-TARU

WELCOME TO A HOME THAT DOESN'T FORCE YOU TO CHOOSE. BUT, GIVES YOU EVERYTHING INSTEAD.

Life is all about choices. So, at the end of your long day, your home should give you everything, instead of making you choose. Kalpataru welcomes you to a home that simply gives you everything under the sun.

022 3064 3065

ARTIST'S IMPRESSION

Centrally located in Thane (W) | Sky park | Sky community | Lavish clubhouse | Swimming pools | Indoor squash court | Badminton courts

PROJECT
IMMENSA
THANE (W)
EVERYTHING UNDER THE SUN

TO BOOK 1, 2 & 3 BHK HOMES, CALL: +91 22 3064 3065

Site Address: Bayer Compound, Kolshet Road, Thane (W) - 400 601. | **Head Office:**101, Kalpataru Synergy, Opposite Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai - 400 055. | Tel: +91 22 3064 5000 | Fax: +91 22 3064 3131 | **Email:** sales@kalpataru.com | **Website:** www.kalpataru.com

In association with HDFC PROPERTY FUND

This property is secured with Axis Trustee Services Ltd. and Housing Development Finance Corporation Limited. The No Objection Certificate/Permission would be provided, if required. All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. *Conditions apply.

(आ. स. 6700)
श्री मन्त्री महोदय
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा-382007,
जिला-गाँधीनगर (गुजरात)

If undelivered, Please return to

Samyaggyan Pracharak Mandal
Above Shop No. 182,
Bapu Bazar, Jaipur-302003 (Raj.)
Tel. : 0141-2575997

स्वामी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए प्रकाशक, मुद्रक - विनय चन्द डागा द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर राजस्थान से मुद्रित एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, शॉप नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-3 राजस्थान से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन